आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ. सुभाष जैन, उज्जैन

प्रमुख सलाहकार

श्री प्रेमजी डूंगरवाल

35, तिलकनगर, इन्दौर

मोबा. नं.94253-13434

संपादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46,सखीपुरा,उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं.-94250-91012

E-mail-Subash3333@yahoo.co.in

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O से **श्री अभ्युदयफाउण्डेशन**, उज्जैन के नाम सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी।

-डॉ.सुभाष जैन

अंधे मनुष्य को कहना कि 'देखो सूर्य का प्रकाश कितना तेजस्वी है!' अंधे के लिये यह बात क्या महत्व रखती है? अंधे को प्रकाश बताने का कोई मतलब नहीं, अंधे को तो दृष्टि दो!

आशीर्वाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्रीनवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

प.पूज्य आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

ना दंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरणगुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं।।

- उत्तरा. सूत्र, 28.30

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता, ज्ञान के बिना चारित्र नहीं होता, चारित्र के बिना मोक्ष नहीं होता और मोक्ष के बिना निर्वाण नहीं होता।

पाथेय

हे प्रभु ! तुम चेतना और प्रकाश हो। समस्त चराचर जीवन के मूल में निहित परम शांति हो। तुम वह प्रेम है जो सब कुछ रूपान्तरित कर देता है वह ज्ञान हो जो अज्ञान पर सदैव पाता है विजय। तुम्हें अपने अन्दर अनुभव करने एवं तुम्हारी अभीप्सा करने के लिये व्यक्ति को उबरना होगा अवचेतना के विशाल समुद्र से स्वयं को निर्मल बनाना होगा एवं जानना समझना होगा तभी वह कर सकता है आत्म समर्पण आत्मदान। अथक निर्मलता, पवित्रता पाने के लिये करने होंगे संघर्ष एवं प्रयास। बहुत कम है वे लोग जो इच्छा पूर्वक करते है प्रयत्न वस्तुतः जीवन ही उन्हें अपनी अदृष्ट क्रूरता के साथ इन संघर्षों के लिये करता है विवश, क्योंकि यही उसके होने की अनिवार्यता है और तब धीरे-धीरे सब विघ्न बाधाओं के बावजूद तुम्हारा कार्य पृथ्वी पर होने लगता है सक्रिय एवं संचरित।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रूपये
आजीवन	1000/- रूपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रूपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रूपये
एक प्रति	10/- रूपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष 21 कार्तिक-माघ नवम्बर 2016 अंक (11)

विषय-सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 1
2- विषय सूची 2
3-सबके जीवन में खुशहाली का मंगल दीप जलायें (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन 3-4
दीपावली पर्व मनाओ- प्रो.कलानिधि चंचल
4- श्री कयावन्ना-चरित्रम्-आचार्यश्री जयानंदसूरीश्वरजी म. 5-6
5- कहीं आराधना में विराधना तो नहीं हो रही है?- सुधीर पटवा, एडवोकेट 7
6- लोभ- आ.श्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म. 8
7- गुरू शिष्य ने धर्म-शासन प्रभावना की श्रृंखला खड़ी की!, गुरूदेव नवरत्नसागर..... 9-10
8- पाप की सजा भारी...! -प.पू.आचार्य श्री अरूणविजयजी म. 11-13
अन्धकार को दीपक की चुनौती
9- जिद्‌दी दीप की अनवरत यात्रा- निर्मला जोशी 14
10-अहिंसामय विश्वशांति के अग्रदूत : भगवान श्री महावीर स्वामी- खुमानसिंह जैन 15-16
बाघ- अरूण शर्मा
11-दीपावली से जुड़ी प्रमुख घटनाएं- ज्ञानेन्द्र रावत 17
12-दीप बचाएं जतन से- डॉ.बालकृष्ण शर्मा, सच्ची साधना 18
13-क्या है पॉलीथीन का विकल्प- राजेन्द्र राय, विवाद और संवाद 19-20
14-गुरू-शिष्य संबंध.... ओशो 21
15-प्रभु श्री महावीर व गौतम स्वामी को वंदन नमन- श्रीमती प्रभा 22
16-उपवास की आवश्यकता-कमलेश्वरप्रसाद मिश्र 23
17-भगवान श्री महावीर : जीवन दर्शन- श्री गणेश मुनि शास्त्री 24
18-परमाराध्य देव भगवान श्री महावीर -देवराज काला, सूखी लकड़ी- डॉ. विरेन्द्र झा 25-27
19-जैन धर्म में लक्ष्मी यानी निर्वाण- 28
20-आगमोद्धारक भविष्य फल-नवम्बर 2016-अनु दीपक जैन 29
21-वर्ग पहेली क्रमांक-264, लक्ष्मी का मूल संप 30
22-ज्ञान गंगोत्री कमांक-264 -पंन्यास प्रवर मृदुरत्नसागरजी म. 31
23-प्रकाश पूजन की अखंड भंवधारा है दीपावली-रतनलाल जोशी 32
24-शासन समाचार 33-39
25-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण,सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है 40

संपादकीय

सबके जीवन में खुशहाली का मंगल दीप जलायें

मानव की उत्कृष्टता उसके शरीर, बल, धन, पद वैभव पर आधारित नहीं होती है वरन उसकी सांस्कृतिक, सामाजिक रीति-रिवाज, परम्परा से उसका विशिष्ट स्थान है, गुण सम्पन्न मानव समाज और उसकी उत्कृष्टता, आचार-परम्परा, सांस्कृतिक धरोहर की सम्पन्नता से मानी जाती है। मानवीय सभ्यता कितनी पुरानी होकर सतत, क्रियाशील है यही उस मानवीय सभ्यता की सबसे बड़ी धरोहर है।

संस्कार और संस्कृति को जीवित रखने के लिये हमारे महार्षियों ने बड़ी योजनाबद्ध तरीके से धर्म के साथ समाज को जोड़ने के लिये पर्वों को मानव जीवन पद्धति में सम्मिलित किया एवं ऐसे कार्यक्रमों का सर्जन किया जिससे समाज उनसे जुड़गया एवं उत्साह से उन्हें मनाने के लिये स्वतः प्रेरित होकर आगेवान बना। महार्षियों ने कार्यक्रमों को इस तरह से संयोजित किया था कि मनुष्य को एक ही स्थान पर धर्म, उत्साह, उमंग आनंद-संस्कार और संस्कृति सब ही मिल गया। हमारे महापुरूषों की सोच कितनी विस्तृत रही होगी कि उन्होंने परम्परा, संस्कार और संस्कृति को जीवित रखने के लिये जिस विचार धारा से काम किया था उसे आज भी हजारों वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद भी मानव समाज उसे मान रहा है। उस परम्परा को निभा रहा है। पारिवारिक खुशी के साथ अध्यात्म और धर्म को जीवित रखने का यह अद्‌भूत करिश्मा है।

हमारे देव पुरूष महर्षि यह भी जानते थे कि आनेवाले बदले हुए वैज्ञानिक युग में आध्यात्मिक प्रयोजनों के लिए मनुष्य के पास समय नहीं होगा इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उन पुण्यात्माओं ने धर्मतंत्र और संस्कृति का समन्वय कर महापर्वों की सर्जन कर उसकी व्याख्या इस तरह से कर दी कि जीवन की झंझटों से परेशान व्यक्ति को धर्म करने का मौका देते हुए एवं जीवन से खुशी लाने के साथ वह पर्व और धर्म का महत्व समझ कर उससे जुड़ जाये।

भारतीय संस्कृति से मनाया जाने वाला किसी भी धर्म का कोई भी पर्व ऐसा नहीं है जो हमारे देव पुरूषों के आचार और आचरण के साथ धर्म और संस्कृति का परिचय नहीं देता है सभी पर्वों में जीवन को अच्छे मार्ग पर ले जाने का मंगल संदेश छुपा हुआ है उस संदेश को उजागर करने का कार्य हमारे यही देव पुरूष, संस्कृति, संस्कार जो अब हमारी विरासत बन चुके है उनसे हमें मिलता है।

हमारे युग पुरूष जीवन की अखण्डता से विश्वास रखते आए है, हम सबका भी यही मन है कि हमारी धरा चैतन्यमय है इस चैतन्य सत्ता का अनुभव हम विविध रूप करते थे। यही कारण है कि पृथ्वी के सभी चर-अचर प्राणी जैसे सूर्य, चंद्र, नदी, पर्वत, पेड़-पौधे से लेकर सभी प्राणियों में इस चैतन्य सत्ता को स्वीकार किया है। सृष्टि के यह सभी अंग भी किसी न किसी पर्व से संबंधित है, यही कारण है कि हमारे युग पुरूषों ने मानव के साथ जोड़कर जीवमात्र की रक्षा और पर्यावरण की सुरक्षा का दायित्व मानव को सौंप दिया यही नहीं मनुष्य के दो रूप नर और नारी इन दोनों को महत्व को ध्यान में रखते इनका प्रभुत्व बनाये रखने के लिये पर्वों में देवी-देवताओं को प्रमुख स्थान दिया है। दूर दृष्टि और विवेकशीलता का यह एक अद्‌भूत समायोजन है।

भारतीय संस्कृति अनगढ़ मानव को देव मानव बना देनेवाली जीवन संजीवनी है, संस्कार और प्रतीक चिन्हों के माध्यम से हमारी संस्कृति व्यष्टि और समष्टि सत्ता में धनिष्टता का दर्शन कराती है और व्यक्तित्व के परिष्कार की प्रक्रिया की स्थापना भी करती है। मनुष्य में यह भाव जीवित रहे इस हेतु पर्वों की स्थापना की गई।

सभी धर्मानुयायी के द्वारा भारत के त्यौहारों से मनाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण पर्व दीपावली है। अंधकार से लड़ने के प्रतीक इस पर्व का मूल उद्‌देश्य अंतर्मन में प्रकाश उत्पन्न करना है, यह पर्व हमें सहज रूप से भारत की दिव्यता, अमरता और स्वाधीन रहने की लालसा का संकेत देता है। दीपावली का दीप प्रकाश का प्रतीक मात्र नहीं है। यह पर्व धर्म, आध्यात्मिक, ज्ञान और चेतना का दिव्य प्रकाश भी प्रदान करता है। मन के अंधकार को दूर करने के लिये दीप-शक्ति के एक अक्षय स्त्रोत के रूप में हमें जीवन में अमृतत्व पाने का मार्ग प्रशस्त करता है। दीपक की बाती जलकर यह सुन्दर

संदेश हमें देती है कि प्राणी मात्र के जीवन में प्रकाश बिखेरना है तो जलना सीखो, जिसने जलना सीख लिया वही आत्मदीपक बन सकता है जो स्वयं को मिटाता है वह दिव्य प्रकाश बनकर संसार को तम से ज्योति की ओर ले जाता है।

परमात्मा प्रभुश्रीवीर, श्री नानकदेव और गुरू गौतम स्वामीजी जैसे महान पुण्यात्माओं के द्वारा रूढ़ियों और आंडबर से मुक्त समाज का जो स्वप्न देखा था उसे पाने के लिये अपना सर्वस्व त्याग कर समाज को नवज्योति प्रदान कर अंधकार से लड़ने का उज्जवल मार्ग दिखाया। श्रीराम और लक्ष्मीदेवी ने कर्म शक्ति के द्वारा जीवन बदलने का संकल्प हमें दिया फिर भी इन महान आत्मशक्ति से परिपूर्ण चरित्रों के कर्म पक्ष की ओर हमारी दृष्टि नहीं जाती है क्योंकि हम हमारा कर्म दीप प्रज्जवलित करने में चुक जाते है। दीपावली के कृत्रिम प्रकाश से जीवन में उजास नहीं होगा जीवन में वास्तविक प्रकाश संकीर्ण विचारधारा, आंडबरों और अंधकार को दूर करने से होगा। जीवन के इन्हीं अंधकारों से लड़ने की प्रेरणा देनेवाला यह दीप पर्व है।

इस बार दीपोत्सव हमारे लिये कठिन चुनौतियां लेकर आया है, राजनीतिक-अर्थव्यवस्था से अधिक हमारा देश उन कर्णधारों की वाणी से उभरी पीड़ा से संक्रमित है जो अपने आपको देश मानते है ? ऐसे लोगों को पहचानने का यही वक्त है, इनसे सावधान रहने की भी जरूरत है और भी अधिक जरूरी है, देश के पहरेदारों की कुर्बानी को सलाम करने की जिन्होंने हमारे जीवन में अंधकार न आये, देश की सुरक्षा पर काला साया न छाये, इसके लिये अपना जीवन बलिदान देने की तत्परता दिखाई। देशभक्तों को इस कठिन समय में सजग रहना है, यही हमारा दीपोत्सव होगा।

तो आईये! हम सब मिलकर अध्यात्म-ज्ञान और नवचेतना के दीप को प्रज्जालित कर जीवन को अंधकार से बाहर लाकर सबके जीवन में खुशहाली का मंगल दीप जलाये। जीवन के सभी मंगल अवसरों पर मांगलिकता को प्रदान करने वाला दीप हम सबके जीवन को आलोकमय बनाये, इसी भावना के साथ आप सबको आगमोध्दारक परिवार की ओर से दीपोत्सव की शुभकामनाएं।

✻ डॉ. सुभाष जैन

दीपावली पर्व मनाओ

✻ प्रो. कलानिधि चंचल

दीपावली पर्व मनाओ
जगमग जगमग दीप सजाओ,
अंधकार को तिरोहित करने
संकल्पों के गीत गाओ।
मानव कल्याण के सपने सजाओ
धन दौलत तो आनी-जानी
शुद्ध मन से प्रभु का स्मरण करो
प्रेम की गंगा बहाओ
दीपावली पर्व मनाओ।
अहम प्रमाद के बीज मत बोओ,
स्नेह की फुलझड़ियां छोड़ो
संतोष दे, ऐसे शब्द उचारो
वातावरण आनंदप्रद बनाओ
दीपावली पर्व मनाओ।
त्यौहारों में संस्कृति के दर्शन
उत्सव में श्रद्धा से हो अर्चन
चेतना हमारी विराट बने
सहयोगी समिधा लाओ
दीपावली पर्व मनाओ।
राग-द्वेष के पहाड़ मत बनाओ
पुष्पों की खुशबू उड़ाओ,
कथनी-करनी का अंतर समझो
एक दीप ही अंधकार हरे, काफी है
दुःख देकर मत हृदय जलाओ
दीपावली पर्व मनाओ।
हर दिन हमारा पर्व बने
अमावस बन जाये पूर्णिमा
घर-घर में छिटके चांदनी
बिखर जाये कण-कण में लालिमा
मंगल घट भर लाओ
दीपावली पर्व मनाओ।

गतांक से आगे....

श्री कयावन्ना-चरित्रम्

✻ आचार्य श्री जयानंदसूरीश्वरजी म.सा.

अब स्त्री द्वारा कहे गये वचनों से धनदत्त ने इसकी कितनी बुद्धि है? इस प्रकार परिमाण किया और स्त्रियों में नैसर्गिक मतिमान्द्य का प्रतिपादन करनेवाले नीति-वाक्यों में प्रामाण्य को ग्रहण करने लगा। इस अवसर में उसे समझाने के लिये श्रेष्ठी ने कहा कि -हे सुंदरी! वैषयिक लोगों को ही तुम्हारा यह वचन योग्य है, परन्तु हम दोनों का पुत्र कयावन्ना तो उसे असार ही मान रहा है और परमार्थ के विचार में रहता है और जिसकी लक्ष्मी अति-अल्प है, वह पुरूष ही पुत्र को गृह-कार्य में और व्यवहार-कार्य में जोड़ता है और मुझे तो अपरिमित लक्ष्मी है, तो कैसे आत्म-कल्याणकारी मार्ग से उतारकर मिथ्यात्वमय प्रपंच में उसे गिराऊं? वह किसी अनुचित का आचरण नहीं कर रहा है, किंतु जिसके लिये महात्मा प्रयत्न कर रहे हैं, उसी को प्राप्त करने के लिये सदा ही पूर्व में किये पुण्य समूह के उदय से यहां भी अत्यंत श्रेष्ठ भावना को भावित कर रहा है, अतः तुम उसके लिये शोक मत करो। हे प्रिये! क्या तुम यह नहीं जानती हो कि एक गृह के निर्माण में बहुत काल लगता है और उसी को तोड़ने में क्षण भी नहीं लगता और इस प्रकार से ही शाश्वत-सुखप्रद निवृत्ति-मार्ग में प्रवृत्ति भी कठिन ही है, क्योंकि अत्यंत पापी जन उस मार्ग में प्रवर्त्तन नहीं करते है, किन्तु पुण्यशाली ही प्रवर्त्तन करते है और भाग्य-योग से वहां प्रवर्त्तन करनेवाले सर्व का अधःपतन तो सुकर ही जानो, इसलिए ही सन्मार्ग में प्रवर्त्तन करते हुए पुत्र को तुम नीचे मत गिराओ और स्वयं ही जो उस मार्ग में प्रवर्त्तन करने के लिए समर्थ नहीं हूं तो श्रेय मार्ग में प्रवर्त्तन करनेवाले अन्य के विघ्न करण में मैं महा-पापी और अधम-अधम बनूंगा, इसलिए हे सुभगे! इस शुभ कार्य में पत्थर मत डाल और ऐसे असत्य विचार को मत करो।

इस प्रकार धनदत्त के द्वारा समझायी गयी भी उस वसुमती ने अपने आग्रह को नहीं छोड़ा, किन्तु रोष ही बढ़ रहा था, उससे कोप के आडंबर से वह कहने लगी कि- हे स्वामी! आप यह क्या कह रहे हो? अमित लक्ष्मी होने पर भी आपके समान कौन पुरूष विषय से विमुख युवान की उपेक्षा करें? अथवा उसके उपाय को न करें? क्या इसके लिये ही चिर समय तक पुत्र की अभिलाषा की थी? हां! नव परिणीत स्त्री गृह में निरंतर रो रही है और पुत्र तो यौवन में ही वैराग्य को प्राप्त हुआ है, यह मेरे धैर्य को कैसे लुप्त न करें? इसलिए कयावन्ना पुत्र को विलासि-जन की संगति में डाले जिससे शीघ्र ही व्यवहार में निपुणता को प्राप्त करें।

इस प्रकार पत्नी के अति-आग्रह से चतुर भी इस धनदत्त ने अज्ञ पुरूष के समान उस प्रकार से करने के लिए स्वीकार किया। उसके बाद श्रेष्ठी ने अपने पुत्र के समान वयवाले, कितने ही विलासी युवा पुरूषों को बुलाकर शिक्षा दी-जिस प्रकार से यह कयवन्ना विषयसेन में अत्यन्त पटु हो, वैसे तुम प्रयन्त करो। तत्पश्चात उन विषयविलासियों ने श्रेष्ठी के पास में प्रचुर धन लेकर प्रथम वसन्त-उत्सव में श्रेष्ठी के पुत्र को ले आये। वहां अनेक तरूणियां शरीर की शोभा से अप्सराओं के समान दिखायी देती अनंग को भी अंग सहित करती हुई मुनियों के मनों को अधीर करती हुई राग सहित गाने लगी थी। जो कि श्रेष्ठी के पुत्र ने पूर्व में कभी-भी ऐसी स्त्री-जन की लीला को नहीं देखी थी, फिर भी संसर्ग से तत्काल ही मन में चंचलता प्राप्त की। उसके बाद वे विलासी पुरूष उसे उन स्त्रियों के संगीत स्थान पर ले गये थे। वहां उन स्त्रियों के नाट्य, तारूण्य, अद्भूत लावण्य, मधुर वीणा के शब्द तथा छोटे ढोल आदि के लय को सुनकर कयवन्ना का मन जाल में मृग के समान प्रतिबद्ध हुआ था। जैसे कि-स्त्रियों के मधुर गान से और श्रृंगार से उत्पन्न कटाक्ष आदि चेष्टाओं से, जिसका चित्त चलित नहीं होता है, वह पुरूष योगी है अथवा पशु है।

अब उस वसंत-उत्सव में कयवन्ना नाम के श्रृंगारत्वकरण में युवतियों का नृत्य और हाव-भाव आदि ही पर्याप्त हुआ था। वहां से लेकर वैराग्य-भावना उसके मन को छोड़कर दूर चली गयी और केवल श्रृंगार ने ही घर किया। बहुत कहने से क्या? उनमें आसक्त उसे खान-पान आदि की भी विस्मृति हुई। पश्चात उन मित्रों के साथ वह वेश्या-घर में आकर उसके हाव-भाव आदि से काम-किंकर हुआ। क्योंकि ज्ञान और अज्ञान के समान वेश्या और विवेक में बड़ा अंतर है, तो उस वेश्या के घर में निवास करते जन को भक्ष्य-अभक्ष्य, पेय-अपेय आदि की अपेक्षा कदापि संभवित नहीं है। इस वेश्या ने श्रेष्ठी-पुत्र को वशवर्ती बनाकर मदिरा-पान आदि से प्रमत्त हुए उसके साथ हमेशा स्वेच्छा से क्रीड़ा करने लगी। अहो! कुसंग के दोष से व्यक्ति क्या-क्या नहीं आचरण करता है? जो कि कहा है कि-यह कुसंगति आनंद रूपी हिरण के लिए दावाग्नि समान है, शील रूपी वृक्ष के उन्मूलन में

मत्त हाथी के समान है और ज्ञान रूपी दीपक को बुझाने में महा-वायु समान है, इसलिए ही कुसंगति से पुरूष के शील-विवेक आदि गुण नष्ट हो जाते है, इसलिए ही नीति-वाक्य बार-बार बुला-बुलाकर लोगों को बोधित करते है कि- हे भव्यों! तुम कुसंगति आदि दोषों से सत्संगति को मत छोड़े।

अहो! कहां गोपीचन्द्र की मौनवती माता और कहां कयवन्ना की माता वसुमती? इन दोनों में मेरू-सर्षप के समान अंतर हैं। जिससे कि उस मौनवती ने विषय में आसक्त अपने पुत्र गोपीचन्द्र को इस प्रकार प्रबितोधित किया था कि हे वत्स! कभी भी एक बार जगत को ग्रसित करने की इच्छावाला यह अत्यंत बलशाली काल तुझे भी कवलित करेगा ही, इसलिए तेरे भोग-विलास को देख-देखकर मेरी दोनों आँखें दुःख से जल को छोड़ रही है। हां! यह ही भोग-विलास तुझे मानुष्य के महत्व से नीचे गिरा रहा है और बल से दुर्गति के मार्ग पर चढ़ा रहा है। इसलिए इस नरक-यातना के नायक विषयभोग को छोड़ और शाश्वत सौख्य देनेवाले वैराग्य को ही भज। इस प्रकार माता के उपदेश से तत्काल गोपीचन्द्र विषय विमुख होकर प्रतिबोधित हुआ। वसुमती ने तो निर्मल सन्मार्ग पर प्रवृत्त होते हुए भी अपने पुत्र को बड़े आयास के साथ गर्हनीय और दुर्गतिदायी मार्ग में प्रवर्त्तित किया। सदाचार से पुत्र के माता-पिता को और खुद को बड़ा ही लाभ होता है और कुमार्ग में प्रवृत्ति से कितनी हानि होती है, यह प्रायःकर सभी को ज्ञात ही है। इसलिए माता-पिता को, पुत्र को सन्मार्ग में ही प्रवर्तन कराना चाहिये किन्तु वसुमती के समान कदापि कुपथ पर नहीं।

अहो! मोह का माहात्म्य, पूर्व में जो कयवन्ना निरंतर शास्त्र चर्चा में ही रमण कर रहा था, वह ही अब कुसंगति से मदिरा पी-पी कर प्रमाद कर रहा है और जिसे पूर्व सदा ही काव्य आदि विनोद का ही परिशीलन था, अब उस कयवन्ना को ही वेश्या के आलिंगन, चुंबन और गायन आदि विनोद से ही कृतकृत्यता हुई थी। पूर्व जिसे वैराग्य से अन्य कुछ भी इष्ट नहीं था, वह ही अब श्रृंगार और संगीत के रस में आकंठ निमग्न हुआ और जो पहले अपनी प्रेयसी को भी राक्षसी के समान और वैराग्य से वासित ह्रदय को दूषित करनेवाली मान रहा था, वह कयवन्ना आज वेश्या के विलास-भूमि पर गिर-गिर कर परमानंद को मान रहा है। जो पूर्व धर्म-कथा से ही तृप्त होता था, वह आज कुटिल स्त्री के भोग-विलास से ही अपने को तृप्त मान रहा है। क्योंकि-सूर्य के गम-आगमनों से प्रति-दिन यह आयु क्षीण हो रहा है। अनेक कार्य भार समूहवाले व्यापारों से काल नहीं जाना जाता है, लोगों के जन्म, जरा, विपत्ति और मरण को देखकर भय उत्पन्न नहीं हो रहा है, इससे यह अनुमान किया जाता है कि यह जगत् मोहमयी प्रमत्त करनेवाली मदिरा को पीकर उन्मत्त बना हुआ है। इसलिए इहलोक संबंधी विविध विडंबना को देखते और सुनते हुए भी लोग धर्म में ही प्रवर्त्तन नहीं कर रहे हैं।

इसलिए ही कयवन्ना शीलशाली नव विवाहित अपनी स्त्री का भी विस्मरण कर वेश्या का ही किंकर होकर उसके राग पाश से बांधा हुआ पशु के समान एक पद भी चलने के लिए समर्थ नहीं हो रहा था। जो विलासी मित्र था, वह भी वेश्या के राग पाश में गाढ़ से श्रेष्ठी के पुत्र को बांधकर और श्रेष्ठी के पास से तृष्टि-दान को ग्रहण कर कृतकृत्य बना। जिस वेश्या पर कयवन्ना अनुरागी हुआ था, वह देवदत्ता नाम से प्रसिद्ध थी। यह नृत्य आदि में कुशल होती हुई भी सदाचारिणी ही थी, वह किसी अन्य पुरूष को नहीं भजती थी, किन्तु केवल कयवन्ना को ही भजती थी। इस वेश्या के साथ क्रीड़ा करते कयवन्ना को रात्रि-दिन का भी भान नहीं रहा।

एक दिन वह कयवन्ना उसके साथ आनंद सहित महल में बैठा हुआ था, तब शरद्-ऋतु की चन्द्रिका भी उनके अनुराग को बढ़ा रही थी। इसी बीच किसी अनुचर ने नीचे से कहा कि- हे स्वामिनी! कोई एक पुरूष कयवन्ना के साथ मिलने के लिए आया हुआ है, यदि आपका आदेश हो तो उसे ऊपर भेजूं? अब वह पुरूष आएं, इस प्रकार उसके कहने पर आये उस पुरूष को वहां लेकर आया! तब उस पुरूष ने कहा- मेरे मुख से तुम्हारे माता-पिता जो कह रहे हैं, उसे तुम सुनो। हे वत्स! तेरा कल्याण हो, घर को छोड़कर वहां निवास कर रहे तुझे बारह वर्ष व्यतीत हो चुके हैं परन्तु आज तक तुम घर आने की इच्छा नहीं कर रहे हो और तुझ समान अत्यंत योग्य और बड़े कुल में जन्म को प्राप्त सत्-पुत्र को यह इस प्रकार से करना नहीं घटता है। हम तेरे माता-पिता अब वृद्धावस्था से जर्जरित किये गये हैं। इसलिए ही तुझे देखने के लिए हम अत्यंत उत्सुक हैं। इसलिए शीघ्र चले आओ और घर पर स्थित तथा दुकान के सकल धन की संभाल लो। तुम आज, कल अथवा परसो आओगे, इस प्रकार के मनोरथ को करते हुए हमने बारह वर्ष को व्यतीत किये है। तुम्हारे नहीं आने से हम दोनों को बड़ा दुःख हुआ है, इसलिए शीघ्र ही आकर समस्त गृह-कार्य को देखकर हम दोनों को सुखी करो, तेरे बिना अन्य कोई भी धन और गृह को देखनेवाला नहीं है, इसलिए ही मैं तुझे बुलाने के लिये यहां पर आया हूं। **(आगे और भी है...!)**

कहीं आराधना में विराधना तो नहीं हो रही है?

✲ सुधीर पटवा, एडवोकेट, कुकड़ेश्वर

हम मंदिर में आराधना हेतु जाते हैं किन्तु थोड़ी सी सावधानी नहीं रखने से हमारी आराधना विराधना में बदल जाती है-कैसे?

पूजा करते समय जो प्रभु की प्रतिमा के एकदम सामने खड़े होकर आराम से धीरे-धीरे पूजा करते हैं, तो पीछे वाले दर्शनार्थी को प्रभु प्रतिमा के दर्शन नहीं हो पाते हैं, इस कारण वह आराधना विराधना में बदल जाती हैं। इसलिये पुरूष को प्रभु प्रतिमा के दाहिनी और तथा महिलाओं को प्रतिमाजी के बांई ओर खड़े होकर पूजा करना चाहिये ताकि पीछे वाले आराधक को प्रभु के दर्शन हो सकें।

कई व्यक्ति प्रतिमाजी के आगे खड़े रहकर ध्यान करते हैं या माला गिनते हैं, ऐसा करने से अन्य दर्शनार्थी दर्शन से वंचित हो जाते है ऐसे में माला गिनने वाला व्यक्ति विराधना का भागी हो जाता हैं।

कुछ व्यक्ति पाट के पास बैठकर माला गिनते हैं या स्वाध्याय करने लगते हैं जिस कारण अन्य दर्शनार्थी को चैत्यवंदन आदि क्रिया करने में बाधा पड़ती है जिससे भी प्रथम व्यक्ति विराधना का भागी हो जाता है।

कुछ व्यक्ति मंदिर में स्तवन या स्त्रोत का पाठ उच्च स्वर में करते हैं जिससे अन्य माला गिनने वाले या ध्यान करने वालों का ध्यान विचलित हो जाते हैं, और वह अपनी क्रिया ठीक से नहीं कर पाते हैं, इस कारण उक्त प्रथम व्यक्ति विराधना का भागी हो जाता है।

कुछ व्यक्ति पूजा प्रतिक्रमण आदि का नियम लेते हैं किन्तु दैनदिन भागदौड़के जीवन में दौड़ते भागते पूजा प्रतिक्रमण इस स्पीड से करते हैं जैसे किसी प्रतियोगिता में भाग ले रहे हो, इसमें क्रिया होती है किन्तु भावशून्य होने से पुण्य का लाभ तो नहीं होता है, पाप का अर्जन अवश्य हो जाता है।

मंदिर में पर्व तिथि आदि पर यदि पूजा करने वालों की भीड़ है वैसे में भी कुछ व्यक्ति प्रतिमाजी के सम्मुख पहुंच कर धीरे-धीरे आराम से पूजा विधि करते है जिससे पीछे वालों को असुविधा होती है इस तरह वह व्यक्ति विराधना का भागी हो जाता है।

कुछ व्यक्ति समाज के वरिष्ठ होते हैं, धनी होते है या किसी पद पर होते हैं ऐसे वी.आई.पी. जब मंदिर में आते हैं और वे अपनी स्थिति को प्रदर्शित करने हेतु कुछ ऐसा करते है जिससे अन्य आराधकों का ध्यान आराधना से हट जाता है ऐसा करना भी विराधना है।

कई व्यक्ति पूजा स्थल और उपाश्रय में आकर भी घर परिवार की, हानि लाभ की, टीका टिप्पणी या किसी की बुराई करते हैं वैसा करना भी विराधना की श्रेणी में आता हैं।

आराधना स्थल मंदिर, उपाश्रय और तीर्थ स्थलों पर हमें अपने विवेक को जागृत रखकर हर विधि जयणापूर्वक (विवेक पूर्वक) ध्यान से करना चाहिये ताकि अन्य आराधकों को हमारी गतिविधि से बाधा उत्पन्न ना हो। अन्यथा हम आराधना करते हुए भी विराधना कर बैठेंगे और पुण्य की जगह पाप का अर्जन कर बैठेंगे इसलिये आराधना स्थलों पर पूर्ण सावधानी बहुत आवश्यक हैं। हमें अपनी आराधना को विराधना में नहीं बदलना है तो ऊपर बताई सावधानियां बरतना अत्यंत जरूरी है।

✲ राजा अश्वघोष की ख्याति बहुत थी। उनके बारे में प्रसिद्ध था कि वे विद्वतो को तुरन्त पहचान लेते हैं और विद्वानों का यथोचित सम्मान भी करते हैं। उनकी ख्याति सुनकर काशी के दो पंडित उनके दरबार में पहुंचे। वहां पहुंचकर दोनों ने अहंकार से लिप्त भाषा में अपनी-अपनी प्रशंसा करनी प्रारंभ करी। दोनों की आडंबरपूर्ण भाषा एवं मिथ्या अहंकार से राजा अश्वघोष का मन बड़ा क्षुब्ध हुआ। उन्होंने दोनों की परीक्षा लेने की सोची। राजा ने दोनों पंडितों को एकांत में एक-एक करके बुलाया और उनसे अपने साथी पंडित का परिचय पूछा। पहले पंडित ने दूसरे के बारे में बोला- अरे! वो तो निरा गधा है। उसे तो शास्त्रों का जरा भी ज्ञान नहीं। दूसरा पंडित बोला- महाराज! मेरे साथी के बारे में आपको क्या बताऊँ? वो तो एक सिराफिर बैल है। जब उन पंडितों के जाने का समय आया तो राजा ने एक को उपहार में भूसा और दूसरे को चारा दिया। यह देखकर दोनों क्रोध से आगबबूला हो गए और बोले- ये क्या महाराज! हमने तो आपकी बड़ी प्रशंसा सुनी थी कि आप बड़े ज्ञानी व्यक्ति है, पर आपने ये हमारा कैसा अपमान किया है? राजा अश्वघोष बोले- पंडितजनों! इसमें मेरा कोई दोष नहीं। ये उपहार तो उसी परिचय का परिणाम है, जो आप विद्वत्‌जनों ने एकदूसरे का दिया। महाराज के कथन का अर्थ दोनों की समझ में आ चुका था। दोनों ने भविष्य में ऐसी गलती न दोहराने का वचन दिया और ज्ञान के मूल भाव को जीवन में उतारने का संकल्प लिया, तब राजा ने दोनों को सम्मान विदा किया।

लोभ

✱ आचार्य श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.

एक प्रसिद्ध सूक्ति है-

लोभमूलानि पापानि रसमूलानि व्याधयः।
स्नेहमूलानि शोकानि त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भवेत्।।
- उपदेश माला

लोभ सब पापों की जड़ है। सब रोगों की जड़ है रस की आसक्ति (जीभ का स्वाद) तथा सब दुःखों की जड़ है स्नेह, अर्थात् मोह। इसलिए भगवान महावीर ने फरमाया है-

कोहं पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सच्च विणासणो।।
- दर्शवैकालिक ८/३८

क्रोध से प्रेम का, मान से विनय का, माया से मित्रता का नाश होता है किन्तु लोभ तो सब गुणों का ही विनाश कर देता है। लोभ का त्याग करने के लिए सभी धर्मों व नीति ग्रंथों ने कहा है कि जब तक मन में लोभ तथा आसक्ति रहेगी, तब तक कितना ही व्रत, तप, जप, दान आदि कर लो, परन्तु मुक्ति नहीं मिल सकती।

भगवान महावीर की शिक्षा है- जो भी काम करो, वह धर्म तथा कर्त्तव्य समझकर करो। उसमें किसी भी प्रकार का लोभ, लालच और प्रतिफल की आशा व कामना मत रखो।

लोभ के चार स्तर होते है-

१- अनन्तानुबंधी लोभ- कुछ मनुष्य बहुत उग्र लोभ वृत्ति वाले होते है। उनके लिए माता-पिता, मित्र-बंधु जो कुछ है, वह धन ही है। लोभ के वश में होकर बड़े से बड़ा अनर्थ, जैसे- हिंसा युद्ध, कपट, हत्या आदि कुछ भी कर सकते है। उपदेश आदि से भी उनके मन की लोभ वृत्ति मिट नहीं पाती। तृष्णा की अग्नि प्रतिक्षण, प्रतिपल उनके मन के भीतर धधकती रहने के कारण उन्हें बेचैन व व्याकुल किये रहती है।

एक बार सिकन्दर सेना सजाकर युद्ध की तैयारी कर रहा था। उसके गुरू ने पूछा- कहीं पर चढ़ाई की तैयारी हो रही है?

सिकन्दर ने कहा- अभी यूनान को जीतकर फिर अमुक देश को जीतूंगा, फिर अमुक देश को और आखिर में हिन्दुस्तान को जीतूंगा।

गुरू ने पूछा- फिर क्या करेगा?

सिकन्दर ने कहा- 'सारे संसार में अपना साम्राज्य फैला दूंगा।'

गुरू- फिर...! सिकन्दर- फिर समूचे मुल्कों का बादशाह बनकर आराम से जीऊंगा।

गुरू ने हंसकर कहा- बेवकूफ! तेरी उम्र तो लड़ाईयों में ही गुजर जायेगी। यदि आखिर मैं तू सकून-चैन से जीना चाहता है तो अभी तेरे पास कौन-सी कमी है? अभी सुख-चैन से क्यों नहीं जीता? संसार का समूचा धन और समूचे संसार का राज्य भी तुझे सुख-चैन नहीं लेने देगा। सुख चाहिए तो मन में संतोष कर और जा अपने महलों में आराम से जी। परन्तु धन व राज्य का लोभी सिकन्दर नहीं माना। जीवन भर की लड़ाईया करता हुआ थका-हारा अन्त में अपने देश में भी वापस नहीं पहुंच सका। बीच सफर में ही मर गया। तो जिसका ऐसा उग्र लोभ होता है, उसे अनन्तानुबंधी लोभ कहा जाता है। जैसे कपड़ेपर किरमची रंग लगने के बाद छूटता नहीं, वैसे ही ऐसा लोभ प्राण निकलने तक भी नहीं छूट पाता। ऐसा लोभी मरकर नरक गति में जाता है।

२- अप्रत्याख्यानी लोभ- जिस प्रकार बैलगाड़ी की धुरी पर तेल व मैल आदि से जो चिकनी मिट्टी कीचड़जैसी बन जाती है, उसका दाग-धब्बा भी बहुत मुश्किल से उतरता है। उसी प्रकार अप्रत्याख्यानी लोभ बहुत प्रयत्न करने से अर्थात् निरन्तर सत्संग, उपदेश और त्याग-वैराग्य पालन करने से धीरे-धीरे मिटता है। अप्रत्याख्यानी लोभ वाला श्रावकधर्म ग्रहण नहीं कर सकता। ऐसी लोभवृत्ति अधिक से अधिक वर्ष भर तक बनी रहती है। ऐसा लोभी मरकर तिर्यंच गति में जाता है।

३- प्रत्याख्यानी लोभ- जैसे माता बालक की आंखों में काजल लगाती है, वह थोड़ी ही देर में छूट जाती है, वैसे ही प्रत्याख्यानी लोभ वाले जीव गुरू आदि के उपदेश से पूर्व संस्कारों से विरक्ति भाव जागने पर लोभ वृत्ति छूट जाती है। इस लोभ वाले का लोभ अधिक से अधिक चार मास के भीतर ही छूट जाता है। ऐसा आत्मा श्रावक तो बन सकता है परन्तु साधु धर्म स्वीकार नहीं कर सकता।

४- संज्वलन लोभ- कुछ मनुष्य बहुत संतोषी वृत्ति के होते है। जो मिला, उसमें ही प्रसन्न रहते हैं। वे कभी दुःखी नहीं होते। यदि कभी मन में लोभ मोह का उदय हो भी गया तो दूसरे ही क्षण अपने मन को समझाकर उस लोभ को दूर कर देते हैं। उनका ऐसा लोभ संज्वलन लोभ होता है। जैसे हल्दी का रंग कपड़े आदि पर लग जाता है तो थोड़ी सी धूप लगने से ही वह उतर जाता है। उसी प्रकार ऐसा अति साधारण लोभ बहुत ही जल्दी छूट जाता है। ऐसा लोभ १५ दिन से अधिक स्थायी नहीं रहता। यह लोभवृत्ति यथाख्यात चारित्र की बाधक है। संज्वलन लोभ युक्त आत्मा अधिक से अधिक देवगति को प्राप्त कर सकता है।

इसलिए भगवान श्रीमहावीर ने फरमाया है-लोहं संतोसओ जिणे- लोभ को संतोष से ही जीता जा सकता है। शायर कहता है-

कनायत से कर जिन्दगानी बसर।
के छोटी-सी चिड़िया का छोटा-सा घर।।

अपनी आवश्यकताओं को सीमित करो। इच्छा जितनी कम, उतना ही अधिक सुख। संतोषी सदा सुखी। जिसके पास संतोष धन है, वह संसार का सबसे धनी व्यक्ति है।

गुरू शिष्य ने धर्म-शासन प्रभावना की श्रृंखला खड़ी की!

हमारे धर्म की प्रतिष्ठा उसकी आध्यात्मिक सम्पदा के कारण है। इस सम्पदा को विभिन्न स्वरूप में अभिवृद्धि करने का काम हमारे गुरू भगवंतों ने बहुत ही जीवटता और शासन की प्रभावना को ध्यान में रखते हुए किया है। गुरू भगवंतों के द्वारा की गई धर्म प्रभावना के कारण लोग चेतना को जाग्रत होने का मौका मिला है। गुरू भगवंतों के द्वारा किये गये लोकोपकारी कार्यो से लोगों के जीवन में धर्म की स्थापना होने में मदद मिली है। गुरू भगवंतों के द्वारा अपने जीवनकाल में की गई आध्यात्मिक सम्पदा की वृद्धि जिसे हम तीर्थोत्थान, मंदिर जीर्णोद्धार, उपाश्रय निर्माण, धर्मशाला,अस्पताल के रूप में देखते है तो लगता है कि मानवीय जीवन के लिये हमारे गुरू भगवंत कितने उदार दिल रहे कि उन्होंने अपनी साधना आराधना की सब शक्ति धर्म,जाति और लोगों के उत्थान के लिये समर्पित कर दी। ऐसे ही कामों से लोगों के हृदय में स्थान बनाने वाले मानवता के मसीहा, करूणासागर, निराभिमान जीवन जीने वाले साधना और संकल्प के सुमेरू वात्सल्य की प्रतिमूर्ति परम पूज्य मालव भूषण आचार्य देवेश गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराज तथा उनके अंतेवासी दूसरे नंबर के सुशिष्य परम पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा. है। गुरू के नाम और काम में कोई कमी न रहे जाये सब कुछ उनकी आज्ञानुरूप हो इस बात का ख्याल रखते हुए पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा.ने अपने संयम विवेक को ध्यान में रखते हुए,गुरू के नाम पर कोई दाग न लगे इस बात को ध्यान में रखते हुए कई बार अपने कुशल प्रबंधन से कार्यों में चार चांद लगा दिये है। पूज्य गुरूदेवश्री को भी यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि- विश्वरत्न जो कुछ भी करेगा वह धर्म और शासन की प्रभावना के साथ गुरूकुल की मर्यादा को ध्यान में रखकर ही करेगा। यही कारण है कि आज पूज्यश्री के बढ़ते ग्राफ के बीच पू.आचार्यश्री गुरूदेव के मंगल आर्शीवाद एवं पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा. के सुन्दर समायोजन से अनेकविधि शासन प्रभावक कार्यों की एक लंबी श्रृंखला तैयार हो गई है। मध्यप्रदेश के मालवा ही नहीं गुजरात,राजस्थान, बिहार,झारखंड, महाराष्ट्र,छत्तीसगढ़ जैसे देश के प्रांतों में आज पूज्यश्री का नाम उनकी आध्यात्मिक साधना आराधना और शासन प्रभावक कार्यों से चहुं ओर जाना जा रहा है।

पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा पर यह आलेख वर्षो पूर्व लिखा गया था वैसा का वैसा ही हम पुनः प्रकाशित कर रहे है आप जानते ही है कि आगमोध्दारक में हम ९ एवं १० पृष्ट पर पूज्यपाद गुरूदेवश्री का लेख ही छापेगें

तीर्थोद्धारक-

पूज्यश्री की निश्रा में श्री शंखेश्वर आगम मंदिर के लिये किये गये कार्यों से ही आज वहां नवीन धर्मशाला, भोजनशाला का निर्माण हो गया है, पू.उपाध्याय प्रवरश्री ने भी इस कार्य के लिये अपनी विशेष भूमिका निभाई है। उधर श्री सिद्धाचल महातीर्थ पालीताना में साधु-साध्वीयों के लिये तथा मालवा के लोगों के धर्मशाला आदि के निर्माण के लिये क्रय की गई निवृति निवास तथा अन्य भूमि के क्रय में पूज्यश्री के आशीर्वाद एवं उपाध्याय प्रवरश्री की सतत क्रियाशीलता ने सफलता प्रदान करवाई है। मालवा के मंदसौर में खिलचीपुर पार्श्वनाथ संकुल के नवनिर्माण के लिये आचार्यश्री गुरूदेव के साथ उपाध्यायश्री की निरंतर सक्रीयता ने शुभ मंगल पथ का निर्माण किया है। यह तीर्थ भी शीघ्र ही अस्तित्व ग्रहण करेगा। यह तो सर्वविदित है कि श्री भक्तामर अभ्युदयधाम महातीर्थ,धार के निर्माण में पूज्य आचार्यश्री का गहरा योगदान रहा है। इसी प्रकार श्री ह्रींकारगिरी तीर्थ, इन्दौर के विकास की विभिन्न योजना को पूर्ण करवाने में पूज्यश्री के साथ उपाध्याय प्रवर श्री का महत्ता प्रयास है। उज्जैन के श्री सिद्धचक्राराधन महातीर्थ के विकास में पूज्यश्री ही के मतव्य को ध्यान में रखकर कार्य किये जाते है।

धर्म और शासन प्रभावना-

पूज्य आचार्य श्री गुरूदेव के साथ सतत रहते आये उपाध्याय प्रवर श्री विश्वरत्नसागरजी म.सा.जबसे दीक्षित होकर युवा हुए है तब से लेकर आज तक निरंतर धर्म और शासन प्रभावना करते हुए पूज्यश्री के साथ चातुर्मास किये है और युवास्था में आते ही पूज्यश्री के निकट सहयोगी बन अनेक स्थानों पर बड़े-बड़े आयोजन का भार उन्होंने संभाला है जिसमें आचार्यश्री का आर्शीवाद हमेशा ही उनके साथ रहा है। अहमदाबाद में महामंत्र जाप के विशाल आयोजन हो या दीक्षा महोत्सव हो अथवा उपधान तपाराधना के साथ छ:रि पालित यात्रा संघ से लेकर अंजन-प्रतिष्ठा,जीर्णोद्धार, नवनिर्माण चाहे मंदिरजी का हो या उपाश्रय का सब पर चौकस निगाह रखते हुए कार्य को सम्पन्न किया है। महोत्सव की पत्रिका का प्रकाशन, पुस्तक प्रकाशन आगमोद्धारक के साथ नवयुवकों के लिये गठित नवरत्न परिवार की गतिविधियों हो सबमें

अटूट सफलता उन्हें मिली है। पूज्य आचार्यश्रीजी के जन्म दिन के साथ पद पदवी प्रदान समारोह के कुशल आयोजन भी सफलता की कहानी कहते है। अनेक उपाश्रय निर्माण करवाकरआपश्री ने भक्तों को धर्माराधना का मौका दिया है।

महामांगलिक के सफल आयोजन-

पूज्य आचार्यश्री के द्वारा प्रदान की जाने वाली आधि-व्याधि-उपाधि से मुक्ति प्रदान करने वाली महामांगलिक के आयोजन जिनमें दो हजार से लेकर १०-१२ हजार भक्तों की भीड़ रही है पूज्य आचार्यश्री की शुभ मंगल भावना के अनुसार पूज्य उपाध्यायजी ने सबका सफल आयोजन किया है।

शिखरजी यात्रा की महत्ती उपलब्धियां-

श्री शिखरजी यात्रा का मंगल शुभारंभ वास्तविक रूप से देखा जाये तो उज्जैन से हुआ था जहां सारे मालवा प्रांत के श्रीसंघों का एकत्रिकरण (१६० श्रीसंघ) कर उपध्यायजी ने एक नया इतिहास रचा यही नहीं मालवा के समस्त संघों को एक मंच पर एकत्रित करने का प्रयास भी सफलता की अनेक कहानी कह रहा है। २००० किलो मीटर की सफल यात्रा के बाद श्री शिखरजी महातीर्थ में पूज्यश्री की आध्यात्मिक शक्ति और उपाध्याय प्रवर की योजनाबद्धता से जहां शिखरजी में सम्पूर्ण पेढ़ी का जीर्णोद्धार (मोन्टेक्स बालपेन ग्रुप) करवाने का बहुत बड़ा काम किया तो साथ ही शिखरजी में १०८ कमरों की धर्मशाला के निर्माण का भी श्री गणेश हो रहा है यही नहीं अभी-अभी ३ करोड़ रूपये की लागत का अस्पताल का निर्माण भी पूज्य आचार्यश्री एवं उपाध्याय प्रवर श्री के सद्प्रयासों से होने जा रहा है।

भोमियाजी तीर्थ के मंदिरजी का जीर्णोद्धार इस चातुर्मास की सबसे बड़ी उपलब्धि कहा जायेगा क्योंकि भक्तों ने जो उत्साह दिखायावह प्रशंसनीय है शिला स्थापना (२७ नवंबर २०१०) से निर्माण भी आरंभ हो रहा है जिसमें १० करोड़ रूपये खर्च होने का अनुमान है।

ये वे संक्षिप्त उपलब्धियां है जो पूज्य आचार्यश्री और उपाध्याय प्रवर श्री के जनकल्याणकारी और शासन प्रभावना के उद्देश्यों की झलक हमें प्रदान करता है। ऐसे तो अनेक अंतरंग और बर्हिरंग प्रसंग गुरू भगवंतों के साथ जुड़े है। जिनका वर्णन कागजों पर नहीं लोगों के दिलों में लिखा है। आगे भी इसी प्रकार आपश्री हमें अमृत आशीर्वाद प्रदान करते रहेंगे और अपनी साधना आराधना में आगे बढ़ते रहेंगे इसी भावना के साथ पूज्य उपाध्याय प्रवर श्री विश्वरत्नसागर म.सा.को हम ३६ गुण भण्डारी नवकार महामंत्र के तीसरे पद पर देखना चाहेंगे। यही शुभ भावना।

गुरूदेव नवरत्नसागर........

तुम दीन दयाल कृपालु
गुरूदेव नवरत्नसागर
बेटे हो माँ मणि के
चल दिये प्रभु के होकर,
नहीं मिलती और मिसाल
गुरूदेव नवरत्नसागर।
वाणी में भरा एक जादू है,
अमृत से अधिक सुस्वादु है,
प्रवचन है बड़ा कमाल
गुरूदेव नवरत्नसागर।
आप इस समाज के गौरव हो
जीवन शक्ति हो,
वैभव हो
हम आपसे है मालामाल
गुरूदेव नवरत्नसागर।
हे नमस्कार गुरूदेव आपको
कर जोड़ करते वंदन हम
चरणों में मस्तक डाल
गुरूदेव नवरत्नसागर ।

आसमां में मत ढूंढो अपने सपने को यारो,
सपनों के लिये जमीन जरूरी है।
सब कुछ मिल जाए तो जीने का क्या मजा,
जीने के लिये एक कमी भी जरूरी है।

पाप की सजा भारी...!

गतांक से आगे....! *** प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.**

हरिकेशी मुनि -

शास्त्र प्रसिद्ध हरिकेशी मुनिराज एवं मेताराज मुनि जैसे महात्मा ऊंची कक्षा के हुए लेकिन पूर्वजन्म के नीचकर्मवश उनको नीच कुल में तथा चण्डाल जाति में उत्पन्न होना पड़ा। बात ऐसी है कि मथुरा नगरी के शंख राजा ने दीक्षा ली। साधु बने। विहार करते हुए रास्ते में हस्तिनापुर का रास्ता किसी से पूछा। सोमदेव नामक पुरोहित ने मार्ग बताया। फिर कुछ बातचीत चली। शंख महाराज ने वैराग्य का उपदेश दिया और सोमदेव पुरोहित ने उनके पास दीक्षा ले ली। परन्तु प्रतिदिन यह जाति का अभिमान ऐसा करता था कि बात-बात में बोलते थे आखिर हमारी ब्राह्मण जाति ऊंची, हमारा ही कुल ऊंचा। ब्राह्मण ही सबसे ऊंचे होते है ब्राह्मण सबसे ऊंचे कहलाते है और सब नीचे होते हैं। इस तरह जातिमद ऐसा किया कि जिसके कारण नीच गोत्र कर्म बांधा। अरे भाई सोचिए दीक्षा लेने के बाद, संन्यास लेने के बाद तो जाति-कुल पूछने का प्रश्न ही नहीं रहता। कहा गया है कि-

जाति न पूछिये साधु की, पूछ लीजियो ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।

जैसे तलवार खरीदते समय तलवार की कीमत करते है। उनकी धार देखते है, परन्तु जो तलवार रखने का म्यान है उसकी कीमत नहीं करते हैं। म्यान वैसे ही पड़ा रहता है। उसी तरह जब साधु सन्त मिले है तो उनसे ज्ञान-ध्यान की चर्चा करनी चाहिये। ज्ञान पूछना चाहिये। जाति-कुल, साधु-संत संन्यासी को कभी नहीं पूछना चाहिये। पूछने की आवश्यकता ही नहीं रहती। सोमदेव मुनि अपने बांधे हुए बीच गोत्र कर्म के कारण स्वर्ग से च्युत होकर गंगा नदी के किनारे बलकोट नामक चण्डाल के घर गौरी पत्नी की कुक्षी से जन्म लिया। चण्डाल के घर शूद्र 'हरिकेशी' नाम पड़ा। बड़ेहोने पर पूर्व जन्म के संस्मरणों का स्मृतिपटल पर ज्ञान हुआ। आत्मा जागृत हुई। अपने पापकर्म का यह फल समझ कर संसार छोड़कर वैराग्यवासित हृदय से दीक्षा ली। साधुत्व के लिये किसी भी जाति-कुल का प्रतिबंध नहीं है। सिर्फ पात्रता योग्यता होनी चाहिये। ज्ञान योग का वैराग्य होना आवश्यक है। बस.... फिर किसी भी जाति का, किसी भी कुल का क्यों न हो दीक्षा-चारित्र ले सकता है। फिर आत्मज्ञान, तप-त्याग-तपश्चर्या की कीमत है जाति-कुल की कीमत नहीं है। वह गौण है।

मेतार्य मुनि-

उज्जयिनि नगरी में एक बार सागरचंद्र मुनि- जैसे ज्ञानी गुरू का उपदेश सुनकर राजपुत्र और पुरोहित पुत्र दोनों ने दीक्षा ली। संयम का उत्तम पालन करते थे लेकिन पुरोहित पुत्र को अपने स्वभावानुसार हमेशा ब्राह्मणत्व का गुण गाते थे। अरे ब्राह्मण से ऊंचा तो जगत में कोई है ही नहीं। अरे! हो ही नहीं सकता। ब्राह्मण जाति और कुल दोनों से जन्म से ही ऊंचा गिना जाता है। इस तरह अभिमान वृत्ति में ही सदा रहते थे। ऐसे अध्यवसाय में नीच गोत्र बांधा। यद्यपि चारित्र की उपासना करके स्वर्ग में गए लेकिन कर्मवश स्वर्ग से च्यव कर राजगृही नगरी में 'महेर' नामक चण्डाल के घर 'मेती' नामक चण्डाली की कुछी से उत्पन्न हुए। एक दिन.... के जाति-कुल के अभिमान ने ही आज यहां लाकर इस कुल में पटक दिया। पहले जितना अभिमान किया था आज उसका पद-पद पर, कदम-कदम पर अपमान होता है। लोग- चण्डाल, चण्डाल कहकर.... भर्त्सना करते थे। अरे ये तो चण्डाल है। अरे चण्डाल पुत्र है। मित्र देव के द्वारा वैराग्य का उपदेश पाकर अन्त में चरम तीर्थपति महावीर प्रभु के पास दीक्षा ली। चारित्र प्राप्ति के बाद अब नीच जाति-नीच कुलपना कुछ भी नहीं रहता। मासक्षमण की तपश्चर्या करने लगे। पारणे के लिये सोनी के घर आए। सोनी घर में आहार-पानी वहेरा रहा था कि.... क्रौंचपक्षी आकर सोनी के मेज पर से सोने के चावल जैसे दाने खाकर चला गया। महाराज के जाने के बाद सोनी को महाराज पर शंका पड़ी.... पीछे-पीछे भागा और मुनि के सिर पर चमड़े के पट्टे बांध कर धूप में खड़े.... रखकर.... घोर उपसर्ग किया। समताभाव में ज्ञानयोग में स्थिर रहकर.... क्षपकश्रेणी का आरोहण करके कर्मक्षय करते हुए आगे बढ़े और.... केवलज्ञान पाकर मोक्ष में गए! मोक्ष में जाने के लिये कोई भी जाति-कुल हो-वह जाति कुल बाधक नहीं है।

आत्मज्ञान साधक है। अपनी कर्मवश नीच कुल में आए हुए चण्डाल कुल में जन्मे हुए भी.... आत्मसाधना से कल्याण करके मोक्ष में चले गए और मानो कि काफी अच्छे उच्च कुल-उच्च जाति में बड़े घराने में, ऊंची खानदानी में जन्म लेकर भी यदि प्रवृत्ति हल्की है, अनाचार के हल्के पाप करता है न करने योग्य कार्य करता है तो ऊंचे कुल का क्या फायदा? कहा है कि-

ऊंचे कुल का जनमिया, करनी ऊंच न होय।
सुवरण कलश सुरा भरा, साधु नन्दीत होय।।

उच्च कुल में जन्म लेकर भी करनी उच्च प्रकार की नहीं है। भाषा उच्च प्रकार की नहीं है। हल्की पाप प्रवृत्ति करता है, निंद्य प्रवृत्ति करता है तो फिर सोचिए ऊंचा किसको कहना। केवल कुल और जाति, घराना और खानदानी ऊंची मिल जाने मात्र से क्या होता है? जन्म से उच्च पना चाहिये वैसे ही.... कर्म कृति से भी उच्च पना चाहिये। सोने का घड़ा है, कलश है परन्तु यदि शराब ही भरा हुआ है तो क्या फायदा। शराब जैसी हल्की वस्तु सुवर्ण की भी कीमत घटा देता है। उसी तरह हल्की निंद्य पाप की अनाचरणीय प्रवृत्ति यदि उच्च कुलवाला भी करता है तो उसके कुल वंश, खानदानी सबको कलंक लगता है। वर्षों और पीढ़ियों तक वह कुल कलंकित रहता है। कई बार हमारे हल्के पाप के कारण जो कलंक लगा है उसके कारण हमारी भावी पीढ़ी की संतान को भी सहन करना पड़ता है। इसलिए जब उच्चकुल-उच्च खानदानी जाति आदि उच्च गोत्र कर्म के पुण्ययोग से मिला है तो समझीए मेरा सौभाग्य है, पुण्योदय है.... अतः नया पुण्य उपार्जन करने के लिए इस पुण्य का उपयोग करना चाहिये। नहीं कि हल्के पापों को करने के लिए। कुल-खान दानी-वंश-जाति-धर्म की दृष्टि पथ में रखकर, ध्यान में रखकर यदि मनुष्य प्रवृत्ति करें.... और यह सोचकर कि.... क्या यह प्रवृत्ति मेरे कुल के लिए उचित है? मेरे धर्म के अनुरूप है? मेरी खानदानी के लिए शोभनीय है? यदि हां का उत्तर है तो वह कार्य अवश्य करिए.... और यदि अन्तरात्मा ना कहती है, धर्म शास्त्र माता-पिता-गुरू जिस कार्य के लिए ना करते हैं, निषेध करते है जो लोग विरूद्ध, लोक में निंद्य कार्य है वह सोच समझकर कभी भी नहीं आचरना चाहिये। अनाचरणीय न आचरने में ही हमारी शोभा है। अन्यथा नीच गोत्र कर्म की सजा सभी को भुगतनी पड़ती है। पाप की सजा बड़ी भारी होती है। अरे दूसरों की बात तो क्या करनी स्वयं भगवान महावीर प्रभु को भी अपने पूर्व जन्मों में बांधे हुए इस नीच गोत्र कर्म की सजा भुगतनी पड़ी।

भगवान श्रीमहावीर ने तीसरे जन्म में नीच गोत्र कर्म बांधा-

''पाप की सजा भारी'' है और कर्म की गति न्यारी है। कर्म किसी को नहीं छोड़ता। बड़े-बड़े राजा-महाराजा मांधाता चक्रवर्तियों को भी कर्मसत्ता ने नहीं छोड़ा? जैसा पाप कर्म उन्होंने भी किया वैसा ही फल उनको भी भुगतना ही पड़ा। करम किसी की शरम नहीं रखते। चाहे मनुष्य बड़ा हो या छोटा, संन्यासी हो या संसारी, साधु हो या श्रावक, कोई भी हो कर्मसत्ता का न्याय सभी के लिए एक समान रहता है। जीव स्वयं ही कर्म बांधता है और स्वयं ही कर्म के उदय से दुःखी होता है। भगवान महावीर प्रभु ने तीसरे मरीचि के जन्म में कुल का अभिमान बहुत किया था। अभिमान में वे नाचे थे.... परिणाम यही आया कि सत्ता ने नीच कुल में फेंक दिया!

बात ऐसी है कि-युगादि देव प्रथम तीर्थंकर श्री आदिश्वर भगवान के पास एक दिन पुत्र भरत चक्रवर्ती ने पूछा- हे कृपालु! आपकी इस श्रमण पर्षदा में कोई ऐसा सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ जीव है? जो तीर्थंकरादि की उच्च पदवी पाने वाला हो। उत्तर देते हुए सर्वज्ञानी केवली ऋषभदेव प्रभु ने भरत के ही पुत्र मरीचि के नाम का उल्लेख करते हुए कहा- हे भरत! तेरा ही पुत्र मरीचि महान पुण्यशाली है। सर्वोच्च कक्षा का जीव है। जो कि अपनी भव परंपरा में तीन श्रेष्ठ पदवीयां प्राप्त करेगा। मरीचि वासुदेव चक्रवर्ती और तीर्थंकर की तीनों सर्वोच्च पदवीयां प्राप्त करेगा। आज मैं जिस चौवीशी का प्रथम तीर्थंकर हूं यह मरीचि इसी चौवीशी की श्रृंखला का अंतिम चौवीशवां तीर्थंकर बनेगा।

अपने ही पुत्र मरीचि के विषय में ऐसी ऊंची भविष्यवाणी सर्वज्ञ प्रभु पिता से सुनकर भरत प्रसन्न हो गए। स्वाभाविक है पुत्र के विषय में प्रशंसा सुनकर किस पिता की छाती गज-गज न उछले? भरतजी पुत्र मरीचि के पास आए। यद्यपि चारित्र पलने के कारण मरीचि त्रिदंडी बने बैठे थे। भगवा वेष धारण किया हुआ था, सिर पर छत्र था, पैरों में खड़ाऊ थे, साधुत्व का पुरा शुद्ध स्वरूप नहीं था, फिर भी भरतजी पिता ने पुत्र मरीचि को तीन प्रदक्षिणा देकर नमस्कार किया। लेकिन स्पष्टीकरण करते हुए यह स्पष्ट कहा कि मरीचि! मैं तुम्हारे इस त्रिदंडीपने को नमस्कार नहीं करता लेकिन तुम भावि परंपरा में वासुदेव-चक्रवर्ती और अंतिम तीर्थंकर बनने वाले हो इसलिए आज मैं तुम्हें भावि तीर्थंकर के जीव समझकर वन्दना करता हूं। इतना कहकर भरतजी तो चले गये और मरीचि अपने दादा तीर्थंकर प्रभु के द्वारा कही गई भविष्यवाणी को पिताजी के मुख से सुनकर.... बड़ेप्रसन्न हो गए। अन्दर मन में बैठा मान कषाय जाग्रत हो गया। जैसे मधुर मीठा मिष्ठान्न जीभ इन्द्रिय को पसन्द है, यह उसका विषय है वैसे ही प्रशंसा, गुणस्तुति भी मानी मन का खुराक है। मान का विषय है। बस इतने में मान जाग्रत हो जाता है। मरीचि तीन-तीन पदवी की ओर सर्वोच्च-सर्वश्रेष्ठ जीव की बात सुनकर इतने अभिमान में आ गए कि मानो दूध तपेले में समा नहीं सका और उबलते हुए

बाहर जाने लगा। वैसे ही तीव्र अभिमान की कक्षा में मरीचि भी छत्र-दंड को लेकर नाचने लगे और नाचते-नाचते बोलने लगे-

आद्योऽहं वासुदेवानां, पिता में चक्रवर्तीनाम्।
पितामहस्तीर्थकृतामहो मे कुलमुत्तमम् ।।

अरे वाह मैं वासुदेवों में पहला वासुदेव बनुंगा। मेरे पिताजी चक्रवर्तीयों में पहले है। मेरे पितामह दादाजी तीर्थंकरों में पहले है.... वाह.... वाह.... क्या मेरा उत्तम कुल है? अहो कुलं.... अहो.... कुलं.... वाह मैं भी वासुदेव-चक्रवर्ती-तीर्थंकर बनने वाला हूं.... इस प्रकार कुलमद के अभियान में के नशे में चक्रचूर नाचते-नाचते बोलते गए (ऐसी स्थिति में कर्मग्रंथ-के शास्त्रकार लिखते हैं कि मरीचि ने नीच गोत्र कर्म बांधा। कुल का अभिमान करके नीच गोत्र उपार्जन किया है तो अब इस कर्म के कारण हल्का-पुल्का नीच कुल मिलेगा वही सजा इनको भुगतनी ही पड़ेगी! और यही हुआ। तीसरे जन्म के बाद देवगति का भय करके फिर याचक ब्राह्मण कुल में आए....फिर ब्राह्मण, फिर वही त्रिदंडीपना फिर वही ब्राह्मणापना। यद्यपि बीच-बीच में एक-एक भव देव गति का करते गये और फिर ब्राह्मण कुल में आते गए! इस तरह पन्द्रहवें भव तक तो चला। उसके बाद नीच गोत्र कर्म उदय के परदे पर से अदृश्य हो गया और सत्ता में शान्त होकर बैठा रहा। अतः महावीर का जीव १६ वें भव में आ सका। भले कर्म सत्ता में पड़ा है परन्तु समाप्त तो नहीं हुआ है। आज नहीं तो कल जरूर भड़केगा और यही नहीं हुआ। महावीर की आत्मा जब २६ वां जन्म दसवें देवलोक में समाप्त कर २७ वें जन्म में आ रही थी। उस समय सत्ता में पड़ा वह नीच गोत्र कर्म फिर उदय में आया और महावीर को त्रिशलादेवी की कुक्षी में ले जाने की अपेक्षा देवानंदा ब्राह्मणी की कुक्षी में ले गया और ८२ दिन के लिये भी महावीर को वहां रहना पड़ा। इस प्रकार नीच गोत्र कर्म अपना ही खुद का जो बांधा हुआ है तो सजा अपने को ही अवश्य भुगतनी पड़ेगी। प्रशमरति में कहते है-

ज्ञात्वा भवपरिवर्ते जातीनां कोटि शतसहस्त्रेषु।
हीनोत्तममध्यत्वं को जातिमदं बुधः कुर्यात्।।
नैकान् जाति विशेषानिन्द्रिय निर्वृत्त पूर्वकान् सत्याः।
कर्मवशात् गच्छान्त्यत्र कस्य का शाश्वता जातिः।।
रूप-बल-श्रुति-मति-शील विभव परिवर्जितां स्तथा वृष्ट्वा।
विपुल कुलोत्पन्नानपि नतु कुलमानः परित्याज्यः।।

''संसारे परिभ्रमतां सत्वानां स्वकर्मोदयात् कदाचित ब्राह्मण जातिः, कदाचिच्चाण्डाल जातिः, कदाचित क्षत्रियादि जातयः, न नित्यैकैव जातिर्भवति'' -संसार में परिभ्रमण करते हुए जीवों को स्वकर्मवश-अपने ही उच्च-नीच गोत्र कर्म वश कभी ब्राह्मण कभी क्षत्रिय, कभी चाण्डाल आदि की जातियों में जन्म लेना पड़ता है। किसी भी जीव की कोई एक शाश्वत नित्य जाति-कुल नहीं है। संसार में परिभ्रमण करते हुए लाखों-करोड़ें जातियों कुलों में-जघन्य-मध्यम और उत्तम अर्थात् उच्च-नीच कुलों में-जाति में उत्पन्न होना पड़ता है फिर कौन बुद्धिमान मनुष्य जाति या कुल का अभिमान करेगा? क्योंकि कर्मवश प्राणी कम-ज्यादा इन्द्रियों के शरीर वाली अनेक जातियों में जन्म लेता है। कहां किसकी कोई स्थायी जाति तो है नहीं। फिर अभिमान का क्या प्रयोजन है? अच्छे ऊंचे कुल में उत्पन्न हुए मनुष्यों को भी, रूप,बल, शास्त्र, ज्ञान, बुद्धि-सदाचार और संपत्ति से शून्य देखकर कुल का मद निश्चय ही छोड़ने योग्य है जिसका शील दूषित है, उसके कुल के विषयों में अभिमान करने से भी क्या प्रयोजन है? और शील वान सुंदर चारित्रवान है वह तो वैसे भी अपने गुणों से ही सुशोभित है। गुण ही उसके आभुषण है फिर उसे कुल का अभिमान करने की आवश्यकता ही नहीं है। **(आगे और भी है...!)**

अन्धकार को दीपक की चुनौती

अन्धकार की अपनी शक्ति है। जब उसकी अनुकूलता का रात्रिकाल आता है तब प्रतीत होता है कि समस्त संसार को उसने अपने अंचल में लपेट लिया। उसका प्रभाव पुरूषार्थ देखते ही बनता है। आँखें यथा स्थान बनी रहती है। वस्तुएं भी अपनी जगह पर रखी रहती है किन्तु देखने लायक विडम्बना यह है कि हाथ को हाथ नहीं सूझ पड़ता। पैरों के समीप रखी हुई वस्तुएं ठोकर लगने का कुयोग बना देती है। अंधकार डरावना होता है। उसके कारण एकाकीपन की अनुभूति होती है और रस्सी का साँप, झाड़ी का भूत बन कर खड़ा हो जाता है। नींद को धन्यवाद है कि वह विस्मृति के गर्त में धकेल देती है अन्यथा जागने पर करवटें बदलते वह अवधि पर्वत जैसी भारी पड़े। इतनी बड़ी भयंकरता की सत्ता स्वीकार करते हुए भी हमें दीपक की सराहना करनी पड़ती है जो जब अपनी छोटी सी लौ प्रज्वलित करता है तो स्थिति में कायाकल्प जैसा परिवर्तन हो जाता है। उसकी धुंधली आभा भी निकटवर्ती परिस्थिति तथा वस्तु व्यवस्था का ज्ञान करा देती है। वस्तु बोध की आधी समस्या हल हो जाती है।

दीपक छोटा ही सही- अल्प मूल्य का सही, पर वह प्रकाश का अंशधर होने के नाते अंधकार के सुदूर फैलाव को चुनौती देता है और निराशा के वातावरण को आशा और उत्साह से भर देता है। इसी को कहते है नेतृत्व।

जिद्‌दी दीप की अनवरत यात्रा

✻ निर्मला जोशी

दीपक मिट्‌टी का बना लेकिन अंधेरे से लड़नेवाला। संघर्षों से गुजरता ठीक मनुष्य की जीवन यात्रा की तरह। मनुष्य की तुलना में कहीं छोटे जीवन वाला, लेकिन मनुष्य को राह दिखाने वाला।

हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि- माटी सुख देती है और उससे बनाये गये नन्हें-नन्हें दीप भी। हम उनके प्रति सदियों से मानव मेरे प्रति कृतज्ञ है या नहीं। सुख-शांति, आनंद, उल्लास और पवित्रता का प्रतीक है-दीप। देव मंदिर में श्री विग्रह के समक्ष दीप प्रज्जवलित होते है उसमें भी देवत्व का अंश आ जाता है। क्योंकि जो प्रकाश देगा वही देवत्व का प्रतीक होगा। दीप की शुभ प्रभा में हमें परम सत्ता का आभास होने लगता है। तुलसी चौरे पर दीप को प्रतिष्ठित करते ही सुहागिन स्वर्णिम आभा से मंडित होकर अखंड सौभाग्य का विश्वास प्राप्त करती है।

माँ शारदा के समक्ष इसके प्रज्जवलन के साथ ही उसकी आलौकिक वीणा के तार झंकृत हो उठते है। हर अवसर को मांगलिकता प्रदान करने वाला दीप जीवन को भी आलोकमय बना देता है। यह जगमगाहट कहां से आई, इसे दीप अपने मुख से नहीं कहता, क्योंकि परमानंद को प्रदान करने वाला दीप तो अपने जन्मकाल से ही अहंकार रहित है। अहंकार तो मनुज रखता है। मिट्‌टी नहीं। इसलिए दीप का पालना आवश्यक है। हमें उसकी ज्योति अनावश्यक है।

परन्तु मनुष्य की ही तरह दीपक को भी अपनी यात्रा संघर्षों के बीच ही तो पूरी करनी होती है। वैसे दीप की यात्रा अनंत है.... मनुष्य की नहीं। दीप, निशा को भी आलौकित करते है और भोर को भी। आप सवाल कर सकते है। वह भोर होते ही सदन से तो विदा हो जाता है लेकिन देव-मडिया में, मंदिर में श्री विग्रह के समक्ष जलता है और उसका आशीर्वाद लेता है। दीप मनुष्य की तरह मंदिर से चला नहीं जाता, वह आरती, आराधना-अर्चना को निरन्तर जीता रहता है। उसकी आयु इसीलिए दीर्घ होती है। अंधकार दीपों के लिये सबसे बड़ी चुनौती है, वह तीव्रतर वायु का वेग भी सहता है और फिर भी प्रकाश फैलाते है। उसे मालूम है कि मनुष्य को उसके पथ से विचलित नहीं होने देना है। वायु अंधकार, प्रलय सब उसके लिये चुनौतियां बनकर आते है परन्तु माटी के दीप उनका साहस से सामना करते हैं।

अंधकार जीवन के मार्ग में बार-बार बाधा बनकर आता है। वह तन-मन-वचन और हमारे कर्म तक में समाविष्ट हो जाता है। वह आकाश को, धरती को आच्छादित कर देता है। जब वह मौन जड़ता से सक्रिय हो उठता है तो हिंसा, उत्पात, अन्याय, उत्पीड़न अनैतिकता और प्रलय को जन्म देता है। वह रूदन और अश्रुओं से अप्रभावित रहता है। क्योंकि वह हृदयहीन और विवेकहीन है। कभी-कभी रंगत माटी में भी तो दिखाई दे जाती है। यह तो मिट्‌टी की बलिहारी है कि उसके रंग को सदियों से सहती आई है।

लेकिन माटी के नन्हें-दीप बड़े ही जिद्‌दी है। ये युग-युग से गहरे अंधेरे का पीछा कर रहे है। ये घोर तमिस्रा में भी नहीं डरते। इन दीपों ने विश्व की बड़ी-बड़ी प्रतिभाओं को भी प्रकाश दिया और उन्होंने हमें ज्ञान की अतुल राशि का जन्म ही इन दीपों के कारण हुआ। सूरज के वंशज है ये दीप इसलिये इनकी यात्रा अकेले ही होती आई है। अगर मुझसे कोई पूछे कि सूरज की ही तरह ये दीप भी अकेले ही है तो मैं यहीं कहूंगी। इन दीपों का सचमुच कौन है-लेकिन ये सबके है कि किसी राज पथ से याचना नहीं करते अलबत्ता राजपथ को ये जग-मग कर देते हैं। इन्हें पगडंडी से जितना मोह है-उतना ही राजपथ से भी। लेकिन न इन्हें कोई कुछ देता है और न ये चाहते ही है। इनकी अपराजित मुस्कान कभी हार नहीं मानती। संभवामि युगे-युगे का नाद इनकी हर किरण से झरता है।

दीप आज तुम्हारी आरधना-अर्चना, अभ्यर्थना का दिन है। मैं प्रातः से ही प्रफुल्लित मन से केवल तुमको निहार रही हूं। मुझे मालूम है कि काल तुम्हारे हाथों पराजित होने को उद्यत है। यह काल कोई और नहीं वायु है और है अंधेरा। तुम तो हर समय एक यात्री की तरह हो, न कभी थकते हो न कभी हार कर बैठते हो। सच पूछा जाये तो दीप, तुम्हारी सारी गरिमा शक्ति ही तुम्हारे प्रज्जवलन के इतिहास में समाहित है। तुम जीवन हो, जीवन का सार हो, क्योंकि तुम दीप हो।

हे समय नदी की धारा जिसमें सब बह जाया करते है,
हे समय बड़ा तूफान प्रबल पर्वत हित जाया करते हैं।
अक्सर लोग समय में ही चक्कर खाया करते है।
मगर कुछ ऐसे है जो इतिहास बनाया करते है।

भगवान श्रीमहावीर स्वामी के निर्वाण दिवस पर विशेष :-

अहिंसामय विश्वशांति के अग्रदूत : भगवान श्रीमहावीर स्वामी

* खुमानसिंह जैन, उज्जैन

भारत एक महान देश है, जिसकी परम पवित्र भारत-भूमि पर कई रत्नों ने जन्म लिया, ऐसे ही एक रत्न है- श्रीमहावीर! जिन्होंने अपने को धर्म की प्रयोगशाला बनाकर, धर्म के स्वरूप की व्याख्या की। वह नायक कोई और नहीं जिसके पीछे सारी दुनिया अंधकार छोड़ प्रकाश की ओर चली गई, संसार के देहली पर स्यादवाद दीप जलाने वाले अहिंसा के अवतार कुमार सन्मति थे जिनके कदम क्रमशः अहिंसा की उपासना और सत्य की रक्षा के लिये चन्द्रमा की तरह आगे बड़े इसलिए वे वर्धमान थे। दूसरों पर शासन न करके अपने ऊपर ही आत्मानुशासन किया इसलिए वे महावीर थे। बिहार के कुंडलपुर नगर के राजा सिद्धार्थ के घर उनका जन्म हुआ। वैशाली नरेश राजा चेटक की पुत्री त्रिशला उनकी माता थी। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन सूर्योदय की प्रभात बेला में आपका जन्म हुआ। गणतंत्र को महावीर ने बहुत नजदीक से देखा था, उन्होंने देखा समाज में धन की पूजा बढ़ गई है। कुछ लोग धनी थे अधिकांश लोग निर्धन थे, सम्पन्न मनुष्य विपन्न मनुष्य को खरीद कर उन्हें अपना दास-दासी बना रहे थे और दास-दासी के जीवन का मूल्य पशुओं से अधिक न था। जातिवाद मनुष्य के बीच एक ऊंची दीवार बनकर खड़ा हो गया था। धर्म व संस्कृति की जगह धन व सत्ता की पूजा हो रही थी। ऐसी विषमता जहां होती है वहां हिंसा अवश्य ही होती है ऐसा भगवान महावीर की मानना था। श्रीमहावीर ने अहिंसा की प्राप्ति के लिए समता के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

अहिंसा विश्व शांति की कुंजी है, समाजवाद विश्व बंधुत्व का एक मात्र आधारशिला है, मानव के विकास के बीज उसी में निहित है, पर उस वक्त यज्ञादि का भी बहुत जोर था और यज्ञों में पशु बलिदान होता था, मूक निरीह पशु धर्म के नाम पर बलि चढ़ा दिये जाते थे। पशुओं की चीत्कार जब राजपुत्र महावीर के कानों पर पहुंची तो उनका हृदय करूणा से भर उठता धर्म के नाम पर होनेवाली पशु बलि भगवान श्रीमहावीर को पसंद नहीं थी।

श्रीमहावीर ने अपने जीवन में कभी भी स्थिरता को स्वीकार नहीं किया, उनका जीवन निरंतर गतिशील रहा, वे संसार में जीते जरूर थे किंतु निर्लिप्त व अनासक्त होकर। अपना राज वैभव परिवार सब कुछ होते हुए भी वे अपने लक्ष्य की परिधि में चल रहे थे, वे अपनी सीमाएं व दूसरों की सीमाओं को अच्छी तरह समझते थे परन्तु प्रत्येक मनुष्य अपनी कुल परम्परा प्राप्त प्रवाह के साथ संलग्न चलता है किंतु कुमार वर्धमान विलक्षण थे, वे स्वतंत्र दिशा में चलना पसंद करते थे, श्रीमहावीर ने अपनी दिशा स्वयं निर्धारित की व निरंतर उसी दिशा की ओर अग्रसर हुए।

श्रीभगवान महावीर का संपूर्ण जीवन प्राणी मात्र के लिए कल्याणकारी था। अहिंसा का उपदेश तो आपने बाद में दिया, पहले स्वयं पूर्ण हिंसामय हुए श्रीमहावीर ने हरी घास, वनस्पति आदि में उसी आत्म तप का अनुभव किया, जो स्वयं महावीर के अंदर था, अर्थात प्रत्येक जीवात्मा के कष्ट को अपना दुःख समझा। शायद इसलिये भोग विलास का जीवन अच्छा नहीं लगा क्योंकि भोग विलासी जीवन की तह में आपको असहायों की आह सुनाई पड़ी। राज सिंहासन पर बैठकर दूसरों पर शासन करना अच्छा नहीं लगा। अतः आत्मशासन का मार्ग प्रशस्त किया, धर्म के नाम पर पशुओं की बलि, पाखंडियों का पाखंड श्रीमहावीर से देखा नहीं गया, हिंसा के इस ताण्डव नृत्य को रोकने के लिये शक्ति, शासन अथवा किसी अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग नहीं किया क्योंकि वे वीर नहीं श्रीमहावीर थे। इसलिए हिंसादि पांच पापों को नष्ट करने के लिए उनके मूल स्त्रोत राग, द्वेष को जड़ से नष्ट करने के लिये संसार में संत होकर महलों से वनों की ओर जाकर आत्मविज्ञान की प्रयोगशाला में प्रवेश कर आत्मशोध में लीन हो गये और यह सिद्ध कर दिया कि संसार असार है, मुसाफिर खाना है, यहां कोई भी अजर-अमर नहीं है, ज्ञान को संयम और तप की आग में जलाकर शुद्ध केवल ज्ञान प्राप्त किया, उस ज्ञान के आलोक में अज्ञानी जीवों को अपना अज्ञान महसूस हुआ और आपकी शरण को प्राप्त कर निर्भय हुए।

आपके समवशरण रूपी मंदिर में पशु-पक्षी तक बैठकर ज्ञान प्राप्त करते थे, आत्मबल, शारीरिक बल से महान है, संसार के समस्त विवादों को शांत करने के लिये स्यादवाद अनेकांत का अमूल्य सिद्धांत दिया जिससे विश्व शांति संभव हो सकी।

भगवान श्रीमहावीर के द्वारा प्रतिपादन अहिंसा, सत्य, अचौर्य अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य तथा अनेकांत आदि दर्शन सार्वजनिक और सार्वकालीन है, जितनी आवश्यकता इन सिद्धांतों की उनके समय में थी, आज भी उनकी उतनी ही आवश्यकता है। उनके समय में मानव मायावी हो उठा था, धर्म के नाम पर पशु बलि दी

जाती थी, धर्म का रूप ही विकृत हो चुका था। उन्होंने भगवान ऋषभ की दी गई व्यवस्था को सुसंस्कृत किया, वे सभ्य संस्कृति के उन्नायक और धर्म मार्ग के सुधारक बने। उन्होंने अज्ञानता में फंसे मानवों के लिये धर्म विज्ञान का निरूपण किया। उनके द्वारा उद्घोषित मंगलकारी सिद्धांतों में अहिंसा का स्थान सर्वोपरि है, क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य, शुद्र कोई भी हो जाति भेद, वर्ग भेद, देश भेद का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं था। भगवान, निर्धन, दास-दासी का भेद उनमें नहीं था, नारी को उन्होंने विशेष गौरव प्रदान किया था। अपने संघ में चंदनबाला आदि अनेक साध्वियों को दीक्षा देकर उन्होंने साधना के मार्ग में नारी की समानता का मार्ग प्रशस्त किया। समाजवाद और समानता के उच्च विश्व शांति के आदर्शों का सूत्रपात महावीर के सिद्धांतों से पूर्ण है।

भगवान श्रीमहावीर ने तीस वर्षों तक विभिन्न स्थानों में धर्मोपदेश दिए और समोशरण में सभी हिंसक पशु तक पहुंचे। जातिगत क्रूरता को छोड़कर शांति से भगवान का उपदेश सुनते थे। भगवान श्रीमहावीर ने जिस संघ की स्थापना की थी, उनका द्वार सबके लिये खुला वह द्वार अहिंसामय विश्व शांति का था।

महावीर ने अनेक स्थानों में विहार करते हुए अंत में पावापुर नगरी पहुंचे। वहां कार्तिक कृष्णा अमावस्या को प्रातःकाल में सूर्योदय से पहले मुक्ति लाभ लिया। भगवान श्रीमहावीर अहिंसा दया व समता के अवतार थे, उन्होंने भारत में जन्म लेकर संसार को मानवता का नया संदेश दिया। निःसंदेह वर्धमान श्रीमहावीर का समग्र जीवन क्रांति का एक श्लोक था, मुक्ति का एक दिव्य छंद था, अहिंसा का एक रचनात्मक सूत्र था, और सत्य की एक शोधशाला थी। महावीर की वाणी में विश्व शांति और विश्व बंधुत्व की जो हरी-भरी संभावना है उन्हें यदि हम अपने व्यक्ति और समाज के राष्ट्र और विश्व के जीवन में प्रतिष्ठित करते हैं तो हम एक ऐसे यथार्थ के लिए जगह बनाते है जो आगे चलकर 'वसुदेव कुटुम्बकम' यह धरती हमारा परिवार एक अमिट आकृति प्रदान कर उस महामानव तीर्थंकर के चरणों में श्रद्धा के पुष्प अर्पण करने योग्य अपने आपको घोषित करेंगे।

बाघ * अरूण शर्मा

कक्षा में अध्यापक गणित पढ़ा रहे थे। पढ़ाते-पढ़ाते वह रूके और बच्चों से कहा- मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूं। बच्चे सावधान हो गये। अध्यापक ने प्रश्न किया- यदि तुम अपने माता-पिता के साथ कहीं जा रहे हो और ऐसे में सामने से बाघ आ जाए तो तुम क्या करोंगे?

सब बच्चों ने अपनी समझ के अनुसार उत्तर दिए, लेकिन मोहनदास अब तक चुप बैठा था। अध्यापक ने पूछा- अच्छा तुम बताओ मोहनदास! ऐसी स्थिति में तुम क्या करोगे।

मोहनदास ने कहा- जी मैं दौड़कर बाघ के पास चला जाऊंगा, ताकि मेरे माता-पिता की रक्षा हो सके।

अध्यापक उसके उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने बालक मोहनदास की पीठ थपथपाई और जीवन में महान व्यक्ति बनने का आर्शीवाद दिया। इतने उच्च विचारों वाले बालक मोहनदास ही बाद में गांधीजी के रूप में भारत को एक नई दिशा प्रदान की।

**** एक व्यक्ति संत कबीर के पास पहुंचा और उनसे प्रश्न करने लगा कि- सुखी दांपत्य जीवन का क्या रहस्य है? कबीर बोले- अभी थोड़े समय में समझाता हूं। कुछ समय पश्चात कबीर ने अपनी पत्नी को आवाज लगाई- यहां बड़ा अंधेरा है, जरा दीपक तो रख जाओ। उनकी पत्नी आई और एक दीपक चौखट पर रख गई। उस आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कमरे में काफी प्रकाश होते हुए भी कबीर ने पत्नी को बुलाया और वो भी बिना प्रतिवाद के दीपक रख कर चली गई। थोड़ी देर में उनकी पत्नी दोनों के लिये भोजन रख गई। जब दोनों ने खाना आरंभ किया तो कबीर की पत्नी ने आकर पूछा- खाने में कुछ कमी तो नहीं है। कबीर ने उत्तर दिया- बिलकुल नहीं। खाना बेहद स्वादिष्ट बना है। उस आदमी को अचरज हुआ कि सब्जी में नमक कम होते हुए भी कबीर ने भोजन की प्रशंसा करी। अब संत कबीर उस व्यक्ति को संबोधित करते हुए बोले- अब समझ में आया कि सुखी दांपत्य जीवन का क्या रहस्य है? इसको पाने का एक ही सरल मार्ग है कि हम एक दूसरे के साथ तालमेल बैठाना सीखें। एक दूसरे की कमियां निकालकर उनको नीचा दिखाने के बजाय यदि हम उनके गुणों को प्रश्रय दें तो गृहस्थ एक तपोवन बन जाए।***

दीपावली से जुड़ी प्रमुख घटनाएं

✻ ज्ञानेन्द्र रावत

✻ मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम अपने भाई लक्ष्मण व पत्नी सीता सहित इसी कार्तिक अमावस्या के दिन राक्षसों का विनाश कर वापस आयोध्या लौटे थे, जिसकी खुशी में अयोध्यावासियों ने समस्त अयोध्यापुरी को दीपों से सजा दिया था।

✻ कार्तिक अमावस्या के दिन ही भगवान श्री कृष्ण सर्वप्रथम अन्य ग्वालवालों के साथ वन में गाय चराने गये थे। सायंकाल उनकी वापसी पर गोकुलवासियों ने घर-घर दीप जलाकर उनका स्वागत किया था।

✻ कार्तिक अमावस्या के दिन ही भगवान योगीराज श्रीकृष्ण ने अपना शरीर त्यागा था। ऐसी मान्यता है।

✻ दीपावली से एक दिन पूर्व चतुदर्शी को भगवान श्रीकृष्ण ने अत्याचारी नरकासुर का वध किया था। इस खुशी में अगले दिन अमावस्या को गोकुलवासियों ने दीप जला कर खुशियां मनाई थी।

✻ महाप्रतापी तथा दानवीर राजा बलि ने जब अपने बाहुबल से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली, तब बलि से भयभीत देवताओं की प्रार्थना पर भगवान विष्णु ने वामन का रूप धारण कर प्रतापी राजा बलि से तीन पग पृथ्वी दान के रूप में मांगी। महाप्रतापी राजा बलि ने भगवान विष्णु की चालाकी को समझते हुए भी याचक को निराश नहीं किया और तीन पग पृथ्वी दान में दे दी। विष्णु ने तीन पग में तीनों लोकों को नाप लिया। राजा बलि की दानवीरता से प्रभावित हो, विष्णु भगवान ने उन्हें पाताल लोक का राज्य तो लौटा ही दिया साथ ही यह भी आश्वासन दिया कि उसकी स्मृति में भू-लोक वासी सदैव हर साल दीपावली मनाएंगे।

✻ राक्षस का वध करने के लिये मां देवी ने महाकाली का रूप धारण किया। राक्षसों का वध करने के बाद भी जब महाकाली का क्रोध कम नहीं हुआ, तब भगवान शिव स्वयं उनके चरणों में लेट गए। भगवान शिव के शरीर स्पर्श मात्र से ही देवी महाकाली का क्रोध समाप्त हो गया। इस घटना की स्मृति में उनके शांत रूप लक्ष्मी मां पूजन आरम्भ हुआ।

✻ सम्राट विक्रमादित्य का राज्यभिषेक दीपावली के ही दिन हुआ था। इसलिये दीप जलाकर खुशियां मनाई गई।

✻ कार्तिक अमावस्या के ही दिन सिक्खों के छठे गुरू हरगोविंदसिंहजी बादशाह जहांगीर की कैद से मुक्त होकर अमृतसर वापस लौटे थे।

✻ अमृतसर के स्वर्ण मंदिर का निर्माण भी दीपावली के ही दिन प्रारंभ हुआ था।

✻ जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर महावीर स्वामी ने भी इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था। श्रीमहावीर निर्वाण सम्वत् इसके दूसरे दिन से शुरू होता है। इसलिये अनेक प्रांतों में इसे वर्षारंभ की शुरूआत मानते है। दीपोत्सव का उल्लेख भी प्राचीन जैन ग्रंथों में मिलता है। कल्पसूत्र में कहा गया है कि वीर निर्वाण के साथ जो अन्तज्योति सदा के लिये बुझ गई है, आओ हम उसकी क्षतिपूर्ति के लिये बर्हिज्योति के प्रतीक दीप जलाएं।

✻ दीन ए-इलाही के प्रवर्तक सम्राट अकबर के शासनकाल में दौलतखाने के सामने 40 गज ऊंचे बांस पर एक बड़ा आकाशदीप दीपावली के दिन लटकाया जाता था। गोवर्द्धन पूजा में अकबर खुद भाग लेता था तथा गायों का निरीक्षण करते थे। शाह आलम द्वितीय के शासनकाल में समूचे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था। लालकिले में एक मेले का आयोजन होता था जिसमें हिन्दू-मुसलमान सभी भाग लेते थे। सम्राट जहांगीर भी दीपावली धूम-धाम से मनाते थे। भारत के अंतिम सम्राट बहादुरशाह जफर दीपावली को त्यौहार के रूप में मनाते थे और इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेते थे।

✻ 500 ईसा वर्ष पूर्व की मोहनजोदड़ो सभ्यता के प्राप्त अवशेषों में मिट्टी की एक मूर्ति के अनुसार उस समय भी दीपावली मनाई जाती थी। उस मूर्ति में भी मातृदेवी के दोनों ओर दीप जलाते दिखाई देते है।

✻ ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में रचित कौटिल्य अर्थशास्त्र के अनुसार कार्तिक अमावस्या के अवसर पर मंदिरों और घाटों पर बड़े पैमाने पर दीप जलाए जाते थे।

✻ द्रविण जन कार्तिक अमावस्या के अवसर पर दीपदान महोत्सव पर दीप जलाते थे, मशालें लेकर नाचते थे तथा पशुओं की सवारी निकालते थे।

✻ बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध के समर्थकों/अनुयायियों ने 2500 वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के स्वागत में हजारों-लाखों दीप जलाकर दीपावली मनाई थी।

✻ समय, सत्ता, संपत्ति और शरीर चाहे साथ दे या न दे। या जीवन में आपका स्वभाव, समझदारी और अच्छे लोगों का साथ हमेशा साथ देता है।

दीप बचाएँ जतन से

* डॉ. बालकृष्ण शर्मा

अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने की कामना मानव की सहज प्रवृत्ति है। अंधेरा मनुष्य के मन में एक प्रकार का भय उत्पन्न करता है और प्रकाश उसे निर्भय बना देता है। मृत्यु और असत्य अंधकार का स्वरूप है। मृत्यु से अमरता की ओर तथा असत्य से सत्य की ओर जाने की इच्छा प्रकाश पाने की अभिलाषा का ही रूपांतर है।

सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और तारे-सभी प्रकाशदाता होने के कारण ही मनुष्य की श्रद्धा और अर्चना के केन्द्र बने। लेकिन जब इनमें से कोई प्रकाश देने के लिये उपलब्ध नहीं होता तो दीपक ही मानव का सहारा बनता है। दीपक की रचना भी बड़ी विचित्र है। रूई की बाती, तेल और आग की लौ मिलकर प्रकाश को उत्पन्न कर देते है। ये तीनों अलग-अलग आपस में एक दूसरे के विरोधी है। लेकिन जब ये तीनों विरोधी आपस में मिल जाते हैं तो जनकल्याण के लिये प्रकाश फैलाने में समर्थ हो जाते हैं। एक दूसरे के प्रति वैरभाव त्याग कर, मिल-जुलकर सबका भला करने की सीख दीपक की रचना का आधार है।

सत्य दीपक का आधार पात्र है। सत्य के अभाव में प्रकाश की कल्पना निरर्थक हो जाती है। तप ही तेल है। तेल दीपक को जल कर प्रकाशित होने के लिये ऊर्जा प्रदान करता है। तपस्या की शक्ति पाकर ही मानव अपने लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो सकता है। दया, इस दीपक की बाती है। शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति की सार्थकता इसी में है। उसका हृदय दया से परिपूर्ण हो। क्षमा, दीप की शिखा या लौ है। दया के गुण से जन्म लेने वाली क्षमा ही लोक-कल्याण का मंगलमय प्रकाश प्रदान कर सकती है। सत्य, तपस्या, दया और क्षमा के माध्यम से ही जीवन का अंधकार दूर हो पाएगा।

दीप स्वयं प्रकाशमान है और अपने सम्पर्क में आने वाली प्रत्येक वस्तु को प्रकाशित कर देता है। जो स्वयं प्रकाशित न हो, वह दूसरे को प्रकाश नहीं दे सकता। इसीलिये कहा गया है-आत्मदीपों भव। स्वयं दीप बनो। दीप-पर्व पर केवल बाहरी दीपक जलाना पर्याप्त नहीं है। अन्तःकरण का आलोक ही उस व्यापक अंधकार को दूर कर सकता है, जो आज चारों और गहरा रहा है। रास्ता कठिनाईयों से भरा है। आंधियां और तूफान जोरों पर है। तामसिक प्रवृत्तियों की काली डरावनी छायाएं आसपास मंडरा रही है। अंधेरी राह पर चलने में केवल दीप ही सहारा है। हमें इस दीप को बड़े प्रत्यनपूर्वक बचना होगा। प्रतिकूल परिस्थितियों एवं आसुरी शक्तियों से इसकी रक्षा करनी होगी। तभी अमावस्य की गहरी रात और नव वर्ष के स्वर्णिम प्रभाव के बीच यह मंगल-दीप आशा की किरणें बिखेर सकेगा।

सच्ची साधना

आज साधु तो बहुत है पर साधना नहीं है। साधना के बिना साधुता कागज के फूलों की तरह है जिनमें बहुरंगी आकर्षण तो भरपूर है लेकिन सुगंध का एकदम अभाव है। सब तरफ आज ऐसे ही कागज के फूल दिखाई देते है। इसी वजह से धर्म की प्रखरता-तेजस्विता मंद पड़ गई है। साधना के अभाव में धर्म असंभव है।

धर्म की जड़ें साधना में है। साधना के अभाव में साधु का जीवन या तो मात्र अभिनय हो सकता है या फिर दमन हो सकता है। ये दोनों ही बातें शुभ नहीं है। तप-साधना का मिथ्या अभिनय पाखंड है, जबकि कोरा दमन और भी महाघातक हैं। उसमें संघर्ष की यातना तो है, पर उपलब्धि कुछ भी नहीं जिसे दबाया जाता है, वह मरता नहीं, बल्कि और गहरी परतों में सरक जाता है। साधनाविहीन साधु को एक और वासना की पीड़ाएं सताती है। उनकी ज्वालाओं में उसका जीवन तपता-झुलसता रहता है, तृष्णा की दुष्पूर दौड़ उसे हर पल दुःख देती रहती है, दूसरी ओर उसे दमन और आत्म-उत्पीड़न की अग्निशिखाएं जलाती है। एक ओर कुंआ है तो दूसरी ओर खाई। सच्ची साधना के बिना इन दोनों में से किसी एक में गिरना ही पड़ता है।

सच्ची साधना न तो भोग में है और न दमन में। यह तो आत्मजागरण में है। इन दोनों अतियों के द्वंद्व में से उबरने और परमेश्वर में स्वयं को विसर्जित करने में है। साधना वेश-विन्यास की विविधता या कौतुक भरे प्रदर्शन का नाम नहीं है। वह नर से नारायण बनने की अंतर्यात्रा है, जो पशु-भाव का दमन करके नहीं, उसे सर्वथा छोड़कर परमात्म-भाव में प्रतिष्ठित होने में ही सम्पन्न होती है। सच्ची साधना का अर्थ किसी को पकड़ना नहीं है, वरन सारी पकड़ को एक साथ छोड़ना है। सारी अतियों से, सभी द्वंद्वों से ऊपर उठना-उबरना है। इस सच्ची साधना से जो अपनी चेतना की लौ को द्वंद्वों की आँधियों से मुक्त कर लेते हैं, वे उस कुंजी को पा लेते है, जिससे सत्य का द्वार खुलता है और तभी वह साधुता प्रकट होती है, जिसकी अलौकिक सुगंध से अनेकों दूसरी सुप्त और मुरझाई आत्माएं भी जाग्रत होकर मुस्कराने लगती हैं।

क्या है पॉलीथीन का विकल्प

✱ राजेंद्रकुमार राय

आज दूध की थैली से लेकर सब्जी तक के लिये प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है। बाजार से कोई भी सामान खरीदें, वह प्लास्टिक के थैलों में मिलता है। लेकिन ये थैले धीरे-धीरे धरती पर बोझ बनते जा रहे है। भूमि पर प्लास्टिक का प्रभाव बहुत विस्तृत है। पर्यावरणविदों को डर है कि जमीन में फैले सिंथेटिक कूड़े-करकट की मात्रा प्रकाश संश्लेषण की महत्वपूर्ण प्रक्रिया को प्रभावित कर सकती है। इससे कार्बन डाईआक्साइड, कार्बोहाइड्रेट और पेड़-पौधे प्रभावित हो सकते है। पानी में भी यह प्लास्टिक की रद्दी कई गंभीर समस्याएं पैदा कर सकती है। एक अमेरिकी डॉक्टर डी.लाइस्ट का कहना है कि प्लास्थिटक उतनी ही खतरनाक है जितना समुद्र में बहता हुआ तेल, भारी वस्तुएं और विवाक्त रसायन है।

केवल अमेरिका में ही एक करोड़ किलो प्लास्टिक हर वर्ष कूड़ेदानों में पहुंचती है। इटली में एक खरब प्लास्टिक के थैलों का प्रतिवर्ष इस्तेमाल किया जा रहा है। इटली आज विश्व में सर्वाधिक प्लास्टिक उत्पादन देशों में एक है। भारत सहित कई विकासशील देशों में प्लास्टिक का उत्पादन बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। नए शोधों से तो लगता है कि शीघ्र ही प्लास्टिक के ऐसे मकान तैयार हो जाएंगे जिनमें रात बिताने के बाद उन्हें दिन में समेटा जा सकेगा। आज प्लास्टिक से तमाम घरेलू वस्तुएं भी बना ली गई है जो देखने में बड़ी आकर्षक हैं। ऐसी वस्तुएं विशेष रूप से रसोईघर की शोभा बढ़ाने के लिये इस्तेमाल की जा रही है लेकिन नए शोधों से यह भी पता चल रहा है कि जिन आकर्षक वस्तुओं के पीछे लोग दौड़ रहे हैं वे कैंसर सहित अनेक रोगों का कारण बन सकती है।

आज यह जान लेना आवश्यक है कि हम प्लास्टिक के डिब्बे और अन्य जो सामान जुटा रहे है, वह कहीं दूसरे दर्जे का अस्वास्थ्यकर प्लास्टिक तो नहीं है? साधारणतया पुराने प्लास्टिक को घरों से खरीद कर ले जाने वाले प्लास्टिक को गलाकर उससे कई नई वस्तुएं तैयार करते हैं। आमतौर पर यह प्लास्टिक अस्वास्थ्यकर होता है। वास्तव में प्लास्टिक अनेक रासायनिक तत्वों से मिलकर बनने वाला जटिल पदार्थ है। प्लास्टिक के कठोर एवं लचीलेपन के आधार पर कई तत्व उसमें मिलाए जाते हैं। लेकिन उसमें रासायनिक तत्व किस मात्रा में मिल जाता है इसका कोई परीक्षण नहीं होता है और न ही उपभोक्ता को ऐसी कोई जानकारी दी जाती है। आज कृषि में भी प्लास्टिक का इस्तेमाल होने लगा है और प्लास्टिकल्चर जैसा शब्द प्रचलन में गया है। कुछ वैज्ञानिक आजकल खेतों में प्लास्टिक उगाने की कोशिश कर रहे है। प्लास्टिक के उत्पादन में अभी पेट्रोलियम पदार्थों को एक घटक के रूप में मिलाया जाता है। पेट्रोलियम, पदार्थों पर निर्भरता कम करने के लिये प्लास्टिक का उत्पादन कारखाने के बजाय खेतों में करने के प्रयोग किये जा रहे हैं। वैज्ञानिकों के शोध कार्यों को देखते हुए ऐसा लगता है कि वह दिन दूर नहीं जब पौधों के माध्यम से प्लास्टिक का उत्पादन फसलों की तरह खेतों में होने में लगेगा और तब शायद प्लास्टिक प्रदूषण का एक और आयाम सामने आएगा। आजकल कुछ बड़ी रसायन कंपनियां नष्ट होने योग्य प्लास्टिक के निर्माण की दौड़ में शामिल हो गई है। प्लास्टिक की एक विशेष बात यह भी है कि इसे कूड़े की तरह नष्ट करने के लिये बहुत बड़ी मात्रा में ऊर्जा खर्च होती है। लेकिन इसको पुनः परिचालित करने में भट्टी में जला देने की अपेक्षा दुगनी ऊर्जा की बचत होती है। वैज्ञानिकों के कुछ दलों ने प्लास्टिक कचरे को ऊर्जा स्रोत में बदलने का प्रयोग भी शुरू कर दिया है। प्रारंभिक प्रयोगों से पता चला है कि रद्दी प्लास्टिक को जला कर ऊर्जा पैदा की जा सकती है।

जहां भारत में प्लास्टिक से बना सामान बढ़ रहा है वहीं विदेश में भारत में बने हाथ के कागज की मांग बढ़ रही है। इसका एक सबूत है दिल्ली के प्रगति मैदान में लगी पेपर एक्स अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी जिसमें तीन करोड़ रूपये के निर्यात का जुगाड़ बैठा था इसमें दो तिहाई के निर्यात आर्डर मिल जाने की उम्मीद है। वैसे तो पेपर-एक्स में भारत की सभी प्रमुख कागज कंपनियों के स्टाल लगे थे, पर खादी और ग्रामोद्योग आयोग और अखिल भारतीय हस्त निर्मित कागज उद्योग संघ ने भी अपने काफी बड़े स्टाल लगाए थे और सबसे ज्यादा भीड़ भी इन्हीं स्टालों पर थी। प्रदर्शनी में उत्तरप्रदेश और महाराष्ट्र के खादी बोर्ड के अलावा राजस्थान की तीन निजी संस्थाएं समेत कुल 11 संस्थाओं ने हाथ कागज की चीजों के स्टाल लगाये थे।

हाथ के कागज के कई आकर्षक सामान इन स्टालों पर थे। शॉपिंग बैग, टाईप पेपर, राइटिंग पैड, विजिटिंग कार्ड, लिफाफे, कैलेंडर, ड्राईंग पेपर, डायरियां, कांफ्रेंस होल्डर, पैन स्टैंड, ग्रीटिंग कार्ड, नोट बुक, विजिटर्स बुक, साधारण लिफाफे शादी कार्ड, नोट बुक, सांगानेरी प्रिंट के गिफ्ट रैपर, फाईल

कवर, बोर्ड और ज्वैलरी बाक्स शामिल है।

हाथ से बनी ये सारी चीजें पूरी तरह पर्यावरण के अनुकूल है। इन्हें रद्दी कागज, पुराने कपड़े, गन्ने की खोई, जूट, गेहूं और चावल की भूसी खराब सिल्क से बड़ी आसानी से तैयार किया जा सकता है। गौरतलब है कि हाथ से बना एक टन कागज 4-4 टन हरे पेड़ कटने से बचाता है। कागज बनाने का ऐसा छोटा संयंत्र 40 हजार रूपये में लग सकता है। बड़ी इकाई भी 12 लाख से ज्यादा की नहीं पड़ती। इस लिहाज से यह काम देश के इस मुश्किल हालात में रोजगार भी पैदा कर सकता है। छोटी यूनिट भी 10 किलो तक कागज प्रतिदिन तैयार कर सकती है। इस समय हाथ कागज का सबसे ज्यादा 37 प्रतिशत उत्पादन उत्तरप्रदेश में होता है। प्रमुख उत्पादक राज्यों में महाराष्ट्र, हरियाणा, राजस्थान और तमिलनाडु है। उत्तरप्रदेश, गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, तमिलनाडु में तो फाइल बोर्ड, ड्राइंग पेपर, डुप्लीकेट पेपर जैसी छह चीजों की सौ फीसदी खरीद खादी आयोग से ही किये जाने के आदेश दे रखे हैं। इसके उलट केंद्र सरकार से 50 फीसदी खरीद के आदेश दे रखे हैं।

केन्द्र सरकार के ज्यादातर सरकारी विभाग रद्दी कागज जला देते है। खादी आयोग वाले केंद्र से लगातार मांग कर रहे है कि यह कागज जलाया नहीं जाए, बल्कि इसकी लुगदी बनाकर उन्हें दे दिया जाए। चुनाव आयोग, भारतीय रिजर्व बैंक, आयकर कार्यालय, संघ लोक सेवा आयोग सहित ऐसे तमाम सरकारी विभाग है जो कागज जला देते हैं। पहले संघ लोक आयोग ने रद्दी कागज की लुगदी बनाने की इकाई अपने यहां लगा रखी थी, लेकिन आयोग की एक परीक्षा के परचे आउट हो जाने के बाद उसने उसने रद्दी जलाने का फैसला कर लिया। इसके लिये आयोग ने दो लाख रूपये का एक प्लांट लगा है। पॉलिथीन थैलों का इस्तेमाल कम हो इसके लिये पेपर एक्स से बने थैलों को बढ़ावा देना होगा।

बहराम बड़ा ही धनवान था। उसका कारवां डाकुओं के बीच फंस गया। लाखों रूपये लूट लिए गए। बड़ा भारी नुकसान हुआ। संत अहमद उसके समीप ही रहते थे। एक दिन उससे मिलने गए। बहराम ने भोजन लाने का आदेश दिया। संत बोले-भाई! तुम्हारा इतना नुकसान हुआ है। मैं भोजन करने नहीं, तुम्हें सांत्वना देने आया था। इसे रहने दो। बहराम बोला- आप निश्चित होकर भोजन लें। यह सच है कि मेरा बड़ा नुकसान हुआ है। डाकुओं ने मुझे लूटा है, पर मैंने कभी किसी को नहीं लूटा। मैं अल्लाह का एहसानमंद हूं कि मात्र मेरी नश्वर संपत्ति लूटी गई है। मेरी शाश्वत संपत्ति है- ईश्वर के प्रति मेरा दृढ़ विश्वास। वही मेरे जीवन की सच्ची संपत्ति है। वह मेरे पास है। बहराम से संत अहमद बोले-भाई! सही अर्थों में तुम संत हो।

विवाद और संवाद

विद्वानों की संगोष्ठी में परिचर्चा हो रही थी। प्रत्येक विचार पर वाद-विवाद हो रहा था। विद्वानों की इस सभा में एक तेजस्वी संन्यासी भी खड़े थे। वे इस सभा में उपस्थित अवश्य थे, पर भागीदार नहीं थे। यहां सभी की सब बातें सुनते हुए उन्हें लगा कि विवाद विचारों पर नहीं 'मैं' पर है। कोई कुछ सिद्ध नहीं करना चाहता है। सब केवल अपने-अपने 'मैं' को प्रमाणित करना चाहते है।

वैसे भी जड़ें हमेशा ही अप्रत्यक्ष होती है, दिखाई नहीं देती। जो दिखता है, वह मूल नहीं है। फूल-पत्तों की तरह जो दिख रहा है, वह गौण है। उस दिखने वाले पर रूक जाए तो समाधान नहीं है, क्योंकि समस्या वहां है ही नहीं। दरअसल समस्या जहां है, समाधान भी वहीं है। विवाद कहीं नहीं पहुंचते। जहां विवाद है, वहां कोई दूसरे से नहीं बोलता। सभी केवल अपने आप से ही बातें करते रहते हैं। दिखाई भर देता है कि बातें हो रही है, विचार-विमर्श हो रहा है।

जो महान संन्यासी यह विद्वानों का वाद-विवाद देख रहे थे, इसके पहले उन्होंने पागलखाने में पागलों का वाद-विवाद देखा था। वहां दो पागल विचार-विमर्श में तल्लीन थे। हाँ! एक अचरज जरूर था कि जब एक पागल बोलता तब दूसरा चुप रहता, पर उन दोनों की बातें में कोई संगीत नहीं थी। उन्होंने उनसे पूछा कि जब तुम्हें अपनी ही कहनी है तब फिर दूसरे के बोलने के समय तुम चुप क्यों हो जाते हो। उत्तर में दोनों पागल जोरों से हंसे और बोले- परिचर्चा के सामान्य नियम हमें भी मालूम है। एक के बोलते समय दूसरे को चुप रहना चाहिए।

वह संन्यासी इन दोनों परिचर्चाओं के साक्षी थे। दोनों ही स्थानों पर केवल विवाद था, क्योंकि संवाद तो तभी संभव है जब 'मैं' केवल प्रेम से छूट पाता है। जहां प्रेम है, संवाद केवल वहीं हो पाता है। वहीं पर विचारों को, भावों को मस्तिष्क व हृदय आत्मसात कर पाते हैं। अन्यत्र तो केवल विवाद और विक्षिप्तता का शोरगुल हैं।

गुरू-शिष्य संबंध....

✲ ओशो

कोई वीणा बजा रही है, तुम सुन रहे हो। और गहरे सुनो। सुनते-सुनते मरते जाओ। ऐसे सुनो कि डूब जाओ और अचानक तुम पाओगे कि बाहर की वीणा तो बजती रही, भीतर की वीणा बजनी शुरू हो गई। बाहर की वीणा की संगत में भीतर की पड़ी हुई सुनी वीणा पर कुछ स्वर कंपने लगे।

संगीतवादक कहते हैं कि अगर एक ही कमरे में, खाली कमरे में एक वीणा कोने में रख दी जाए और दूसरा संगीतज्ञ कुशल संगीतज्ञ हो, वह दूसरी वीणा को बजाए, तो तुम चकित होकर देखोगे कि वह जो वीणा कौने में रखी है, उसके तार कंपने लगते हैं, उसमें प्रति-संवाद पैदा हो जाता है। जब एक वीणा के तार नाचने लगते है तो दूसरी वीणा भी बिना उंगलियों के तारों को कंपाने लगती है। वह जो कंपन पूरे भवन में भर जाएगा, उस वीणा के तार भी पकड़ लेंगे।

और ऐसी ही घटना घटती है साधु-संगत में। किसी को वीणा बज रही है.... वह तो मीरा कहती है, इसलिए वहां मेरा मन नहीं भाता, वहां साधु नहीं है, वहां कोई वीणा को बजाने वाला नहीं है जिनकी वीणा सुनकर मेरी वीणा बज उठे।

संगीत का और क्या अर्थ होता है? सत्संग का और क्या अर्थ होता है? किसी की वीणा बज उठी है, तुम अपनी वीणा लेकर उसके पास बैठ गये। तुम्हें पता नहीं कि कैसे वीणा के तार छुएं। तुम्हें यह भी पता नहीं कि वे तार कहां है। तुम्हें अपनी उंगलियों का भी कोई भरोसा नहीं। तुमने संगीत कभी सीखा नहीं। तुम्हें स्वरों का कोई ज्ञान नहीं। कोई फिक्र नहीं। जिसकी वीणा बज रही है उसके पास बैठ जाओ। बैठो कुछ दिन। बैठो कुछ समय। बजने दो उसकी वीणा। एक दिन अचानक तुम पाओगे तुम्हारे भीतर कुछ कंपा, कुछ कंपन हुआ, कोई लहर समा गई। अचानक तुम पाओगे कि बाहर की वीणा तो बज ही रही है, भीतर कुछ बजने लगा।

यही संवाद है जो गुरू और शिष्य के बीच फलित होता है। यही दान है जो गुरू से शिष्य को मिलता है। यह कोई वस्तु नहीं है जो हाथों हाथ दी जाती है। यह तो एक संस्पर्श है। यह तो बड़ा अदृश्य संस्पर्श है, चुपचाप हो जाता है, किसी को पता भी नहीं चलता, कानोंकान किसी को खबर नहीं होती। कोई चीज आती न कोई चीज जाती। गुरू से कोई चीज निकलकर शिष्य में नहीं जाती। मगर गुरू के भीतर कुछ कंपता है, नाचता है और उसी नाच में शिष्य के भीतर कुछ नाचने लगता है।

कार्लगुस्ताव जुंग ने पश्चिम को एक बहुत बड़ेमनोवैज्ञानिक ने इसके लिए एक ठीक-ठीक शब्द खोजा है। वह शब्द को कहता है, सिन्क्रानिसिटी, सहसंवेदन शीलता, संवाद, कुछ यहां घट रहा है, कुछ दूसरी जगह घटने लगता है, ठीक उसके संवाद में। और दोनों के बीच कोई सेतु भी नहीं है। कार्य कारण का कोई संबंध नहीं है ।

ऐसा नहीं है कि गुरू शिष्य को ज्ञान दे, देता है, ऐसा नहीं है। ऐसा होता है, तब तो एक गुरू सारी दुनिया को ज्ञान दे देता और ऐसा भी नहीं है कि शिष्य ज्ञान ले लेता है। लेन-देन की बात ही नहीं होती। शिष्य केवल खुले मन से बैठ जाता है, हृदय को खोलकर बैठ जाता है। शिष्य सिर्फ अपने को असुरक्षित छोड़ देता है। वह कहता है-तुम्हारी राजी में मेरी रजा है।

✲ *एक व्यक्ति एक संत के पास दीक्षा लेने पहुंचा और उसने बोला- ''महाराज! मैं साधना करना चाहता हूं, पर संयम रख पाना मेरे लिए संभव नहीं। क्या कोई ऐसा मार्ग नहीं है, जिससे बिना संयम रखो सिद्धियां प्राप्त हो जाए।'' संत मुस्कराए और उसे एक बिना पेंदी का बरतन देते हुए बोले- ''उस साधना का मार्ग मैं तुम्हें तब बता पाऊंगा, जब तुम इस बरतन में पानी भरकर ले आओगे।'' वह व्यक्ति चकित हुआ और बोला- ये तो आप भी जानते हैं कि इसमें पानी टिकेगा नहीं तो फिर मुझे यह प्रयास करने को क्यों बोल रहे हैं? संत बोले- वत्स! जैसे बिना आधार का ये पात्र पानी को अपने अंदर धारण नहीं सकता, वैसे ही दुनिया की कोई भी साधना, बिना संयम के तुम्हारे अंदर सिद्धि को प्रकट नहीं कर सकती। एक छोटा सा बरतन बिना उचित आधार के पानी नहीं संभाल सकता, तो तुम्हारी ये काया बिना संयम के ब्रह्मतेज को कैसे संभालेगी?*

✲ चंद्रमा समुद्र से बोला- सारी नदियों का पानी आप अपने ही पेट में जमा करते हैं। ऐसी तृष्णा भी किस काम की?

समुद्र ने कहा- जिनके पास अनावश्यक है उनसे लेकर बादलों द्वारा सर्वत्र न पहुंचाऊं, तो सृष्टि का क्रम कैसे चले? यदि सब एकत्र ही करते रहेंगे तो औरों को मिलेगा कैसे? मैं तो अपना कर्त्तव्य निभाता हूं। अन्य क्या करते हैं, यह नहीं देखता।

प्रभु श्रीमहावीर व गौतम स्वामी को वंदन नमन

✻ श्रीमती प्रभा जैन, देवास

दीपावली पर्व आते ही ज्योतिपूंज भगवान श्रीमहावीर और इन्द्रभूति गौतम स्वामी का स्मरण हो जाता है। मगध देश में गोबर नामक ग्राम में गौतम स्वामी का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम वसुभूति और माता का नाम पृथ्वी गौत्री था जो ब्राह्मण थे। ये तीन भाई थे-अग्निभूति, वायुभूति और इन्द्रभूति।

उस समय अपापानगरी में सोमिल ब्राह्मण ने यक्ष कर्म में तीनों गौत्री ब्राह्मणों को बुलाया था ये महाज्ञानी माने जाते थे, से मिल ब्राह्मण ने 4400 विद्वानों को देश-विदेश से आमंत्रित किया था और उन विद्धानों के मुखिया इन्द्र भूति गौतम थे।

इन्द्रभूति गौतम को बड़ा अहंकार था कि मैं तो दुनिया का महापंडित हूं। इतना अहंकार था कि जब चलते थे तो मस्तक पर बारह तिलक लगाकर चलते थे, सोने का यज्ञोपवित और स्वर्ण खड़ाऊ पहनते थे। इतना ही नहीं 'स्वर्णपट्टक' अपने पट पर बांधकर चलते थे।

इन्द्रभूति गौतम भगवान श्रीमहावीर के अन्तेवासी शिष्य थे, गौतम का भगवान श्रीमहावीर के प्रति अनुराग भी अद्धितीय था। गौतमस्वामी 7 हाथ ऊंचे, गौरवर्ण के थे, एक उग्र तपस्वी दीप्त तपस्वी, महान तपस्वी थे। 14 पूर्व के ज्ञाता भी थे। उनका पांडित्य भी अद्धितीय था, वेद उपनिषद का ज्ञान भी कण-कण में समाया हुआ था।

इन्द्रभूति गौतम ने जब भगवान श्रीमहावीर के समवशरण की अनुपम अलौकिक छठा देखी, दिव्य ध्वनि का मनोहारी घोष सुना तो वे स्तब्ध रह गए। आँखों से क्रोध की चिनगारियाँ बरसने लगी सोचा कि ये कोई ''एन्द्रजालिक'' है। गौतमजी ने यज्ञोपवित पीला चोला, बारह विशिष्ट चिन्ह धारण कर रखे थे। 500 शिष्यों भी उनके साथ थे। जैसे ही भगवान श्रीमहावीर ने उनको देखा और कहा- हे इन्द्रभूति गौतम ''सागयं सु आगतं'' तुम्हारा आगमन अच्छा है, लाभकारी है।

इतना सुनते ही इन्द्रभूति गौतम ने सोचा-अरे, आश्चर्य है ये तो मेरा नाम भी जानते है, उनका गर्व अभिमान, मद, घमंड चूर-चूर हो गया और वे 500 शिष्यों के साथ भगवान श्रीमहावीर के शिष्य बन गए।

इस प्रकार गौतम जैसे महान पंडित आग्रहों, क्रियाकाण्डों घमण्ड को चूर-चूर कर साधना के कठोर मार्ग पर सर्वात्मना समर्पित हो गए। जब प्रभु श्रीमहावीर की देशना चल रही थी कुछ पल के लिए प्रभु ने रूककर अमृत स्वर में ''गोयमा'' कहकर आवाज लगाई। चार ज्ञान के धारी गौतम स्वामी ने प्रभु के सन्मुख आकर कहा-आज्ञा भन्ते!

प्रभु ने कहा- हे गौतम पास के गांव में देवशर्मा ब्राह्मण को प्रतिबोधित कर आओ। तुरन्त तहति कहकर आज्ञा धारण कर चल पड़े। जब प्रतिबोधित कर वापस लौटे तो मार्ग में देवताओं की वार्ता से प्रभु के निर्वाण के समाचार सुने तो बहुत विलाप करने लगे। तत्काल शुभध्यान की ओर प्रवृत हो गौतम क्षपकश्रेणी पहुंचे व घामी कर्म क्षय होते ही केवलज्ञानी बन गए।

पूर्वभव से भगवान श्रीमहावीर और गौतम स्वामी का घनिष्ट संबंध रहा है, गौतम स्वामी की कई विशेषताएं है जो इस प्रकार है- ।

✻ इन्द्रभूति गौतम भगवान श्रीमहावीर के पूर्वभव मरीचि त्रिदंडी ''कपिल'' नामक शिष्य थे।

✻ त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव में सारथी बनकर प्रभु की सेवा की।

✻ आपके अंगूठे में अमृत बरसता था।

.✻ स्वावलंबी श्रमण थे, 500 शिष्य प्रतिक्षण आपके चरणों में खड़े रहते, 14000 श्रमण भी आपको वंदनीय समझते थे।

✻ आपने प्रभु से 36000 प्रश्न भगवती सूत्र में पूछे।

✻ आपने जिन शिष्यों को दीक्षा दी वे सभी केवलज्ञानी हुए।

✻ अक्षीणमहानस लब्धि से 1500 तापसों को खीर से पारणा करवाया।

✻ अष्टापदजी तीर्थ की स्वलब्धि से यात्रा की व जगचिंतामणि सूत्र रचा।

✻ अइयुत्ता की विनंती से उनके घर गोचरी गए।

✻ मृग गांव में ''मृगलाढिया'' से मिलने गए।

✻ आनंदश्रावक से वाणिज्य ग्राम में ''मिच्छामि दुक्कडं'' देने गए।

✻ आप सर्वोत्कृष्ट तपस्वी थे, बेले-बेले पारणा करते थे।

✻ दीक्षा के बाद गोदुष्टिका आसन में ही बैठते थे।

✻ कहा जाता है कि वे प्रथम प्रहर में स्वाध्याय, द्धितीय में ध्यान, तृतीय प्रहर में भीक्षा ग्रहण को जाते थे।

✻ आपको आगम में ''उग्गतवे घोरतवे'' आदि विशेषणों से अलंकृत किया है।

सर्वज्ञ, सर्वदर्शी श्रमण भगवान महावीर स्वामी को कोटि-कोटि वंदन नमन! इन्द्रभूति गौतम स्वामी को भी मेरा वंदन, नमन!

उपवास की आवश्यकता

✱ कमलेश्वर प्रसाद मिश्र

उपवास, शरीर में स्थिर विभिन्न प्रकार के दोषों का शमन करने के साथ शरीर रूपी मशीन को भी थोड़ा आराम प्रदान करने में सहायक होता है। प्रत्येक धर्म में व्रत के लिये दिवस व मास निश्चित है और उनको आवश्यक उपादेयता है। रविवार का दिन साप्ताहिक अवकाश के रूप में प्रचलित है। सप्ताह के सात दिन सूर्य व अन्य ग्रहों के प्रतिनिधि है। सूर्य की सप्तरश्मियों में राहु-केतु को छोड़कर अन्य ग्रहों की राशियों का गुण-प्रभाव समाहित होता है। सूर्य-रश्मियों में सूर्य की तेजस्विता व उष्णता का पित्त गुण, चंद्रमा की उज्जवलता व शीतलता का प्रभाव, मंगल ग्रह की कठोरता व दृढ़ता का प्रभाव बुध की सौम्यता व कफ प्रधानता का गुण, वृहस्पति का विद्या-बुद्धि, धन व सूक्ष्मदर्शिता का प्रभाव, शुक्र की कूटनीतिकता व बात-प्रधानता का गुण और शनि की स्थिरता व सुख उपभोग का प्रभाव समावेशित रहता है।

प्रत्येक मनुष्य यश, धन एवं समस्त प्रकार की सुख कामना चाहता है और इसके लिये विभिन्न प्रकार के कर्म व उपायों का सहारा लेता है। जब यह सफल होने लगते है तो वह निरंतर प्रगति की सीढ़ी पर चढ़ता चला जाता है। अनेक बार उपाय व कर्म में असफलता प्राप्त होने पर विशाद के लक्षण उत्पन्न होने लगते है। इस दिशा में योगशास्त्र में वर्णित विशेष प्रकार की ग्रंथियों अर्थात् उपत्यिकाओं का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथियों का व्यक्ति के विवेक व शरीर रचना के अनुसार अनुकूल रहने से प्रत्येक कार्य सहज रूप से होता है और प्रतिकूल रहने से बाधा उत्पन्न होती है। यह उपत्किाएं विशेष प्रकार की क्रियाएं व प्रेरणा उत्पन्न करती है जिनसे वांछित प्रयत्नों से सफलता प्राप्त करता है।

उपवास प्रक्रिया एक सुविस्तृत विज्ञान है और यह उपत्किाओं के संशोधन-परिमार्जन क्रिया में सहायक है। यह परोक्ष या अपरोक्ष रूप से मन के सारे व्यापारों को प्रभावित करती है अर्थात यह मन की नियंता है। जब मनुष्य अपने मन का नियंत्रण अपने विवेक के अनुसार नहीं कर पाता तब उपद्रव व परेशानियां जीवन में अनुभव होने लगती है। इस दिशा में उपवास प्रक्रिया महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उपवास शरीर की शुद्धि के लिए है जबकि व्रत में किसी पर्व या तिथि का पुण्य प्राप्त करने के लिये संकल्पपूर्ण करने के पश्चात एक बार ही अल्पमात्रा में कुछ खास या पेय का सेवन किया जाता है। उपवास या व्रत में मनसा-वाचा-कर्मणा भोजन के प्रति उदासीनता होनी चाहिये। मन विविध प्रकार के व्यंजनों की तैयारी में संलग्न नहीं रहना चाहिये। साधारण पांच प्रकार के उपवास पाचक, शोधक, शामक, आनस व पावक प्रचलित है।

पाचक उपवास के द्वारा अजीर्ण, कब्ज आदि को पचाना संभव है। इसमें भोजन का त्याग तब तक उचित है जब तक तेज भूख न लगे।

उपवास की आवश्यकता- साधारणतः एक बार आहार छोड़ने से कब्ज पक जाता है। इस उपवास में नींबू रस या अन्य किसी पाचक औषधि का सेवन लाभकारी है। शोधक उपवास रोग को प्रताड़ित करने के लिये किया जाता है। इस उपवास में मानसिक शक्ति के द्वारा आत्मविश्वास को कमजोर नहीं होने देने के लिए प्रयत्न किया जाता है। इसमें विश्राम आवश्यक है और यह तब तक चलता है, जब तक रोगी रोगावस्था की जटिलता से निकल जाए। उबालकर ठंडा किया हुआ जल ही एक मात्र औषधि या पोषणदारी पेय है। शामक उपवास कुत्सित विचारों, मन में उत्पन्न होने वाली दुष्प्रवृत्तियों के स्पंदन को शांत करता है। विकृत उपत्यिकाओं की तरंगों को भी विराम प्रदान करता है। इसमें रोगी शारीरिक रूप से स्वस्थ दिखाई देता है लेकिन मन में बदला लेने की प्रवृत्ति व दूसरे का हर प्रकार से अहित करना ही उद्देश्य बन जाए तो शामक उपवास करना उत्तम है। इसमें अन्न का त्याग, दूध, छाछ, फलों का रस व सुपाच्य पदार्थों का सेवन किया जाता है। इस उपवास में एकांत में चिंतन-मनन करना लाभप्रद है। आनस उपवास दैनिक शक्ति से विशेष आकांक्षा पूर्ति के लिये किया जाता है। सर्वात्मा सूर्य आनस उपवास के द्वारा जन-जन की सरलता से मनोकामना पूर्ति करने में सक्षम है। पावक उपवास कुकृत्य के प्रायश्चित के लिए किया जाता है। इसमें कुकृत्य की जीवन में पुनरावृत्ति न हो, यह संकल्प कर उस प्रवृत्ति से दूर रहने का दृढ़ प्रयास किया जाता है। वर्तमान में साप्ताहिक अवकाश का दिन रविवार रहता है। रविवार को सूर्य समेत अन्य ग्रहों की सम्मिलित शक्ति पृथ्वी पर आती है। रविवार के व्रत में उपरोक्त उपवास के सूक्ष्म तत्व और उपत्यिकाओं के शोधन-परिमार्जन के समस्त गुण समाहित है। इस दिन का उपयोग अन्य दिनों की तरह मशीनी रूप से न कर शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक पथ पर कदम बढ़ाने के लिए करना लाभकारी है। वर्तमान भागमभागी युग में इस विश्राम दिवस का उपयोग, कम से कम मास में एक बार उपवास के लिये उचित है। सप्ताह में एक दिन अलवणीय भोजन का सेवन भी अनेक प्रकार के रोगों को बीजावस्था में शमन करने में लाभकारी है। इस प्रकार रविवार का दिन उपयोग उपवास के लिये किया जाए तो यह शारीरिक व मानसिक विश्राम प्रदान कर उस परमसत्ता से जुड़ने के लिये प्रेरित करता है। इससे शरीर अधिक ऊर्जावान बनता है जिससे आने वाले सप्ताह में अधिक चुस्ती-फुर्ती से कार्य किया जा सकता है।

भगवान श्री महावीर : जीवन दर्शन

* श्री गणेश मुनि शास्त्री

भगवान महावीर का जन्म विक्रम विक्रम संवत् एवं ईसा से करीब 600 वर्ष पहले हुआ। भारत में वैदिक धर्म सर्वत्र फैला हुआ था। अत्यंत जातियां हीन दशा में जीवन जी रही थी। ब्राह्मण और क्षत्रियों का समाज में बोलबाला था। वैश्य अपने व्यापार कर्म में रत होकर समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को भूल चुके थे। धार्मिक सद्भावनाओं के स्थान पर हिंसात्मक यज्ञ और अंधविश्वास का नग्न तांडव हो रहा था। नारी अपनी सत्ता खो चुकी थी। निर्जीव वस्तु की भांति उसे बीच बाजार में निलाम कर दिया जाता था। प्रजा का शोषण कर राजा अपने कोष में अभिवृद्धि कर वैभव प्रदर्शन को आतुर रहते थे। विदेह उस क्षेत्र का समृद्ध राज्य था। इस नगरी के समीप गंडकी नदी के तट पर बसे क्षत्रिय कुण्ड नगर के गणपति एवं राजा सिद्धार्थ थे उनकी रानी त्रिशला (वैशाली नरेश चेटक की बहिन) थी। इसी त्रिशला की कुक्षी से विक्रम संवत् 542 वर्ष पूर्व चैत्र सुदि 13 की मध्य रात्रि में भगवान महावीर का जन्म हुआ।

महापुरूषों का जन्म एवं जीवन जन साधारण से हटकर होता है। शास्त्रों एवं विद्वानों की मान्यता है कि भगवान महावीर प्राणत कल्प स्वर्ग से चव कर ब्राह्मण कुण्डपुर में देवानंदा की कुक्षी में अवतरित हुए। गर्भ-स्थापना की 83 वीं मध्यरात्रि में सौधर्म देव की आज्ञा से हरिणगमेषी नामक देव ने देवानंदा की कुक्षी से भगवान के जीव को निकालकर त्रिशला की कुक्षी में पहुंचा दिया। यह गर्भ परिवर्तन आश्विन वदी-त्रयोदशी को माना जाता है। माता त्रिशला ने उस रात्रि में चौदह स्वप्न देखे। हस्ति, वृषभ, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला, चन्द्र, सूर्य, ध्वजा, कलश पद्म, सरोवर, क्षीर समुद्र, देव विमान, रत्न राशि एवं निर्धूम अग्नि के दृश्य थे। महाराज सिद्धार्थ से स्वप्नों की बात कही तो उन्होंने स्वप्नवेत्ताओं को बुलाकर बताया। उन्होंने एक स्वर में महारानी के गर्भ में किसी विशिष्ट पुण्यात्मा के आने की बात बताई। त्रिशला पुत्र का नाम वर्द्धमान रखा गया। बालक वर्द्धमान अपने बड़े भ्राता नंदिवर्धन के साथ-साथ बड़े होने लगे। वर्द्धमान अपने साथियों के साथ उद्यान में खेल रहे थे, इन्द्र से प्रेरित देव बालक वर्द्धमान की परीक्षा लेने हेतु सर्प बनकर वृक्ष के पास बैठ गया। अन्य बालक सर्प को देखते ही वहां से भाग छूटे परन्तु वर्द्धमान ने उसका दमन किया। उस देव ने बालक बनकर वर्द्धमान को अपनी पीठ पर बैठाकर शरीर को बढ़ाना चाहा पर वर्द्धमान ने मुस्तिका प्रहार से उसे धरती पर गिराकर एक तरफ खड़े हो गये। साहस को देखकर सभी वर्द्धमान को महावीर कहकर पुकारने लगे।

श्रीमहावीर एकान्त में बैठकर चिन्तन करते तो माता-पिता को भय लगने लगा कहीं वर्द्धमान संसार का त्याग कर साधु न हो जाए, विवाह राजकुमारी यशोदा से कर दिया, पुत्रीरत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया। (दिगम्बर परम्परा वर्द्धमान के विवाह को स्वीकार नहीं करती है।) अठाइस वर्ष के थे तभी उनके माता-पिता का देहान्त हो गया। वर्द्धमान ने अपने मनोभावों को बड़े भाई नंदिवर्धन के समक्ष प्रकट किया। पर दो वर्ष तक गृह त्याग के विचार को स्थगित कर दिया। कारण था दो वर्ष पश्चात वैराग्य का जो अंकूर फूट रहा है वह सांसारिक माया मोह के कारण कुमला जायेगा पर उनका मन तो योगी बन चुका था तीस वर्ष की अवस्था में मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी को वर्द्धमान राजमहल का त्यागकर नगर के बाहर बने ज्ञात खण्ड उद्यान में पहुंचे और वस्त्राभूषण का त्याग कर स्वयंमेव दीक्षित हो गये। साधु का जीवन वैसे ही शूलों की सेज कहा गया है। श्रीमहावीर तो संसार में तीर्थों की स्थापना करने हेतु आये थे। साढ़े बारह वर्ष तक घोर तपस्या की। तप के माध्यम से अपने पूर्व कृत कर्मों का उन्होंने क्षय किया। तप के प्रभाव से उनमें क्षमा, मृदुता, आर्जव, संतोष आदि आत्मिक गुणों का विकास हुआ, साधना-काल में अनार्य क्षेत्रों में भी विचरे। जहां चोर समझ कर पीटा, कानों में कीलें ठोके, मगर क्षमामूर्ति सब कुछ सहन करके आगे बढ़ जाते थे। उनकी साधना अन्तर्मुखी थी। बुरा करने वालों के प्रति भी उनके मन में कोई द्वेष नहीं था। विषधर चण्डकोशिक के काटने पर भी उस असह्य वेदना को सहन करते हुए उसे क्षमा कर दिया। जृम्भिक ग्राम के निकट ऋजुबालिका नदी के किनारे शाल वृक्ष की नीचे ध्यानावस्थित थे उस समय कामदेव ने उनकी परीक्षा की जिसमें महावीर खरे उतरे। वैशाख शुक्ला दशमी को चौथे प्रहर में केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई। वे सर्वज्ञ और सर्वदर्शी बन गये। केवल ज्ञान का आलोक हर दिशा में व्यास था। भगवान महावीर ने विद्वानों की सभा में अपना आलोक विखेरा, मनुष्ययोनी को दुर्लभ बताते हुए पांच महाव्रत, सात शील तथा सम्यक्त्व धर्म को समझाया। तत्कालीन समाज में करूणा, दया एवं प्रेम की गंगा बहाकर समाज के पिछड़े शूद्रों का उन्होंने कल्याण किया। उनका जीवन हिंसात्मक कार्यो से निष्ठुर बन चुका था उन्हें धर्म की मुख्य धारा से जोड़ा। नारी को समाज में उचित स्थान दिलवाया। भगवान ने राजकुमारी चन्दनबाला को भगवती दीक्षा प्रदान कर प्रथम श्रमणी बनने का गौरव दिया। भगवान अपने अंतिम समय में पावापुरी पधारे। वहीं पर 72 वर्षीय आयु पूर्ण कर कार्तिक अमावस्या को इस असार संसार को धर्म का सार प्रदान कर मुक्ति प्राप्त कर ली। महावीर का संदेश संपूर्ण मानवता के लिये है और आज भी कल्याणकारी है। अहिंसा, अनेकांत एवं अपरिग्रह की पावन वाणी का महत्व किसी भी युग में कम नहीं हो सकता। उनके अनुसार मानव-मानव सब एक है, ऊंच-नीच की दीवारें आत्म विकास को कभी नहीं रोक सकती। आत्म-कल्याण हेतु सभी स्वतंत्र है। शूद्र भी श्रीमहावीर का सहारा पाकर जागृत हो गये और भारत में नये युग का सूत्रपात हुआ।

परमाराध्य देव भगवान श्री महावीर

✱ देवराज काला

भगवान महावीर परमाराध्य थे और दुनिया रही तो रहेंगे। मानवता को आध्यात्म, प्रेम, शांति और अहिंसा का जो सबक दिया उपदेश दिया वह सब तो ग्रंथों में संहित है। लेकिन हमारी संहिताएं मात्र पूजा, वैमनस्य और फिरका परस्ती के सिवा कुछ भी नहीं है चाहे तो दुनिया समझे भगवान महावीर सिर्फजैनियों के आराध्य है पर ये तो जन जन के मन-मस्तिष्क में अपने आचरण, शिक्षा-दीक्षा का प्रभाव कुंडली में कस्तुरी की तरह रचा-बसा है।

भारत ऋषि-मुनियों, मनीषी युग पुरूषों, अवतारों, पीर-पैगम्बरों और तीर्थंकरों का देश है। पर हमने स्वार्थ लोलुप धर्माचार्यों, राजीनीतिज्ञों और धर्म के ठेकेदारों ने उन महान आत्माओं के उपदेशों-संदेशों को पुस्तकों ग्रंथों में संग्रहित तो कर दिया है वहीं उन विशुद्ध तरंगों को तोड़-मरोड़ कर एक संप्रदाय, फिरकापरस्ती का रूप दे दिया है।

किसी धर्म ग्रंथ में किसी बाजारू पुस्तक में किसी मजहब में, किसी दायरे में बांधना उस महान तीर्थंकर भगवान श्रीमहावीर के साथ बहुत बड़ा अन्याय होगा।

भगवान श्रीमहावीर चौबीसवें व अंतिम (अंतिम मैं नहीं कह सकता किताबी ज्ञान है) तीर्थंकर का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। तीर्थंकरों की श्रृंखला में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे और तेइसवें पार्श्वनाथ हुए। जैन धर्म के अनुसार तीर्थंकरों का अर्थ है, तीर्थ अथवा घाट बनाने वाले अति करूणावान। वे समर्थ होते है, भगवत्ता को प्राप्त होते हैं। वे दुःख सुख की नगरी से आजाद है। मोक्ष को प्राप्त हो चुके होते हैं उनकी करूणा उनको तीर्थ, घाट बनाने की प्रेरणा देती है। महावीर जैसे करूणावान तीर्थंकर अपना स्वार्थ नहीं देखते बल्कि अपने मूक-मौन संदेश उपदेश द्वारा आवाज देते है, पर उनकी करूण पुकार को सुनने वाले बहुत कम होते हैं। हर कोई अपनी अपनी अक्ल बुद्धि के अनुसार उन महान करूणावान तीर्थंकरों की व्याख्या टीका टिप्पणी करते हैं फिर उपजाते है वाद-विवाद जो बनाते है संवाद। संसार फिर वास्तविकता को भूल कर संवादों में उलझ कर अपनी अपनी दुकानें चलाने लगते है। महान आत्माएं सांसारिक कचरे को अपने घर-मंदिर से झाड़ बुहार देते हैं व देखने में सामान्य दृष्टि में धीरे-गंभीर दिखाई देते थे, मगर उनका अंतःकरण (जिसमें विभिन्न नामों से व्यक्त किया गया है। आत्मा कहा गया है।) इतना आनंदित-प्रफुल्लित था कि उन्होंने पूरा कचरा घर मंदिर से निकाल फैंका।

संसार की निःसारता को जानकर लौकिक क्रिया कलापों-दुःख-सुख, मान-मर्यादा, तेरा-मेरा और लोक-लाज से बहुत आगे निकल जाते हैं। परमसत्ता से उनकी लौ लग जाती है। आज तो अधिकांश लोग त्याग के नाम पर कुछ धन (कचरा) धर्म के नाम पर अपने नाम का पत्थर (संगमरमर) की टाइल अपना नाम खुदवाकर किसी जैन संप्रदाय मंदिर में लगवा देते हैं। इससे उनकी थोड़ी सी जय-जयकार हो जाती है। जबकि सच्चाई उसके विपरीत होती है।

मानव-मानव का दुश्मन बनता जा रहा है। फिरका परस्ती को प्रोत्साहन मिल रहा है। धर्म के नाम पर जितना खून खराबा वैर-भाव, संकीर्णता इस भू-खण्ड पर वितीर्ण हुई है वह मात्र मनुष्य की अज्ञानता, धर्मभीरूता और राजनैतिक। धार्मिक षडयंत्रों के कारण ही हुई है। असुरक्षा की भावना ने इन्सान को भगवत्ता से पशुत्व की ओर ढकेल दिया है इसमें भी विपरित नियम प्रभाव अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया है। हम जितने मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारे, चर्च, बोद्ध मंदिर महावीर जैनमत को व्यवस्थित करने वाले वर्धमान श्रीमहावीर स्वामी बुद्ध, कृष्णा, जीसस लाओत्सु, नानक, कबीर, सभी ने समाज में व्याप्त (तत्कालीन) कुरीतियों, दुराचारों, व्याभिचारों, भ्रष्टाचारों तथा अनाचारों को समाप्त करने में सफल और सार्थक प्रयास किये और मानव कल्याणार्थ अनेक कष्ट सहे। वर्धमान ने मानव मात्र भाईचारा, अहिंसा, सत्य पर चलने का उपदेश दिया। अनुयायी/भक्तों ने उन महात्माओं, तीर्थंकरों की ऊंगली ही पकड़्ली और आज तक इसी भ्रम में जी रहे है कि हमारे अराध्य की ऊंगली पकड़ कर हम भवसागर से पार हो जायेंगे, उस चांद को पा जायेंगे जिसकी ज्योत्सना में नहाकर हम शान्त-शीतल हो सकते हैं। ध्यान मग्न हो सकते है। अपने साक्षी को जगा सकते हैं। मगर नहीं! वह सब तो तभी संभव हो सकता है जब हम अपने अपने अराध्यों के उपदेशों-संदेशों और निर्देशों के अनुसार ऊंगली पकड़ने के बजाय अपने स्थूल, सूक्ष्म, तरंग आत्म शरीरों को जागृत करें और यह मात्र ध्यान के द्वारा ही संभव है। ध्यान की भी हजारों विधियां है। किसके लिये कौन सी विधि कारगर है यह व्यक्ति विशेष की सुविधानुसार कारगर हो सकती है।

जैन तीर्थंकर ने इस विशाल वट वृक्ष को सींचा और एक कुशल माली की तरह इसकी सदा हरा भरा रखा, इसकी टहनियों

को विस्तार दिया। इस विशाल वृक्ष की छाया में अनुयायियों ने विश्राम किया, शांति अनुभव की। वर्धमान महावीर ने समय-समय पर धार्मिक शिथिलताओं को दूर करके भ्रमित मानवता का कल्याण किया।

इन तीर्थंकरों ने सामाजिक आचार-विचार और आहार-विहार के उपवन में अभीष्ट योगदान दिया। मानवता को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया। युवा महावीर ने धार्मिक पाखण्डों, रूढ़ियों, अंधविश्वासों के प्रति तीव्र विद्रोह शुरू किया। उन्होंने मानव जाति को सद् धर्म, अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह का पाठ सिखाया। (हमने कितना सीखा कितना अमल किया यह आज के समाज में स्पष्ट दिखाई दे रहा है) कालांतर होने के कारण सभी उपदेश, संदेश अपना शाब्दिक अर्थ खो देते हैं अथवा शब्दों की व्याख्या समयानुकूल परिस्थितिवश बदल जाती है। यह परिवर्तन तो प्रकृति का शाश्वत नियम है। (आधुनिक संदर्भ में नीतियां, नियम और आदर्शवाद सड़ गल चुकी है या यों कह सकते हैं कि नीतियां और नियम समयानुसार बदलती रही है। बदल रही है, बदलती रहेगी क्योंकि पुरानी चीजें/विचार सड़गल जाते है। सत्य नहीं भरता उसको पाने के साधन टूटते बिखरते है और बदलते रहते है और यही World Survival का नियम है। 'जो बीत गई सो बात गई' आज प्रेमपूर्वक जी लो, पिछले कल को भूल जाओ और आने वाले कल का हमें पता नहीं) हमें आज प्रेम प्यार से जीना है अहिंसा की शिक्षा को जीवन में उतार लेना है।

नेमी अथवा अरिष्टनेमी जैन धर्म के 22 वें तीर्थंकर माने गये है। परम्परा में उन्हें वासुदेव कृष्ण के चचेरे भाई माना गया है। अरिष्टनेमि का जन्म (सूरजपूर जिला आगर) के महाराजा समुद्रविजय की महारानी शिवा के गर्भ में माना जाता है। जब उनकी बारात राजमति के यहां पहुंची तो उन्होंने नगर के बाड़े में बंधे हुए पशुओं का चीतकार/रूदन सुना तो नेमीनाथ समझ गये कि ये नीरीह जानवर बारातियों के भोजन के लिये है उसी समय उन्हें संसार से वैराग्य हो गया और श्रमण दीक्षा उन्होंने स्वीकार कर ली।

श्रीभगवान महावीर को भोग-विलास की कमी नहीं थी किंतु उनका मुख्य चिंतन था किसी को ऐसी ऐशोआराम-भोगोविलास की सुविधा क्यों नहीं मिलती। मनुष्य-मनुष्य में ये अंतर क्यों है कि एक का सुख अपरिमित है और एक पूर्ण रूप से वंचित है समझौता करने पर मजबूर है। जीवन-मरण पर भी उन्होंने विचार किया। 'मनुष्य कहां से आता है और कहां जाता है।' इस रहस्य को सुलझाने के लिये वे बेचैन हो जाते थे। क्यों सभी मनुष्यों की इच्छाएं पूर्ण नहीं होती। इस संसार में इतना घटाघोप अंधकार क्यों है, अंधविश्वास और मूढ़ताएं क्यों हैं?

'वर्धमान के विवाह संबंधी परस्पर विरोधी मान्यताएं विचारणीय है' राजकुमारी यशोदा से वर्धमान का विवाह सम्पन्न हुआ। उनके प्रियदर्शना नाम की कन्या भी हुई। यह श्वेतांबर परम्परा के अनुसार है जबकि दिगम्बर संप्रदाय यह नहीं मानता है पर श्रीमहावीर इससे दूर होते गये वे एकांत में बैठकर श्रीमहावीर सोचा करते कि-क्या सांसारिक भोगों को भोगने के लिए स्वयं को भूलकर संसार में लिप्त होना उचित है? क्या संसार के आवागमन से छुटकारा नहीं हो सकता?

मनुष्य जन्म पाना अति कठिन है और मनुष्य होकर सम्यक ज्ञान पाना कठिन है। धर्म (तथाकथित धर्म नहीं) का रहस्य समझना तो अति दुष्कार है। कर्मों का नाश कर अपने आप पर विजय पाना मनुष्य का सर्वोपरि कर्त्तव्य है। जीवन क्षणभुंगुर है। नाशवान है। संसार में अधिकांश प्राणी ऐसे है जिन्हें अपनी सुध-बुध नहीं स्वयं से अनभिज्ञ रहकर वे संसार के द्वंद्व फंद में फंसे हुए है तथा काम, क्रोध, मद, मोह और लोभ के वशीभूत हो, दूसरों को कष्ट पहुंचा रहे हैं। ऐसे लोगों का हित करने और उनको सत्यमार्ग दिखाने के लिए अनवरत पुरूषार्थ की अटूट धैर्य की और स्वयं की साधने की, योग्य बनाने की आवश्यकता है। जीवन की असारता (प्राचीन संदर्भ में) से भलि-भांति परिचित थे। गृहत्याग का अटल निश्चय कर लिया। जब वे लाख समझाने पर भी टस से मस न हुए तो निष्क्रमण सत्कार की तैयारी शुरू हो गई। वर्धमान ने सुन्दरतम वस्त्रों, गहनों इत्यादि की कीमती वस्त्रों का त्याग किया। सरस और स्वादिष्ट व्यंजनों को सदा के लिये त्याग दिया (आज के संदर्भ में यह सब बेमानी है)।

श्रीमहावीर का तो नया जीवन विकसित हो रहा था पुरातन छूट गया था। हर विघ्न-बाधा का सामना हर संकट की घड़ी में धैर्य पूर्वक करने का निश्चय किया। उनके जीवन में एक पहला अनुभव हुआ कि जीवन फूलों की शैया नहीं, काटों का श्रृंगार है। (आधुनिक संदर्भ में जीवन को फूलों की महक में मदमस्त रहने का उपक्रम जारी है। जीवन जो आज है, हंस खेल कर प्रेम-प्यार और मौज-मस्ती में जीना ही सत्य है क्योंकि अतीत भूत बन गया है भविष्य की खबर नहीं, अस्तु जो कुछ है आज है, अभी है इसी क्षण है चाहे रोलो दुःखी होलो चाहे इस क्षण को आनंदित बना लो कौन किसका दुश्मन और कौन किसका क्या? जो

हंस खेल में समय बीत जाए ऐश्वर्य में जो समय व्यतीत हो जाये वही ईश्वर के करीब है, ऐश्वर्य ही ईश्वर है।)

श्रीमहावीर देह रूप में भले ही न हों और होंगे भी तो हमारे तुम्हारे जैसे ही सुख-दुःख की नगरी में वहीं कार्य आज भी कर रहे होंगे जो जैन तीर्थंकर अथवा बौद्ध इत्यादि करते आये हैं। युगांतर के साथ हमारी समस्याएं भी बढ़ती-बदलती जाती है इसीलिये मात्र एक महात्मा, अवतार, पीर-पैगाम्बर, सद्‌गुरू तीर्थंकर बुद्ध, जीसस, शंकराचार्य, राम-रहीम, कृष्ण से यह संसार नहीं बदलता, हर देशकाल में किसी न किसी को इस भू-खण्ड के दुःखों को कम करने अथवा भवसागर से पार ले जाने के लिए आना ही पड़ता है और यही उन महान आत्माओं की महान करूणा होती है। जैन मत में कैसे मान लिया गया कि मात्र 24 तीर्थंकर ही हुए है, क्या इसके बाद जैनी समुदाय प्रबुद्धज्ञानी हो गया है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह इत्यादि अमूल्य गहने उन्होंने प्राप्त कर लिए हैं? नहीं। सिखों ने मान लिया है कि उनके मात्र 10 गुरू ही हुए हैं, अंतिम गुरू गोविंदसिंहजी महाराज ही हुए है। क्या सिख की परिभाषा केश, कंघा, कच्छा, कृपाण इत्यादि ही नहीं है। क्या आज कोई सिखों का जीता जागता बौद्ध, तीर्थंकर गुरू नहीं हो सकता? अवश्य हो सकता है। और है। ''पर वेखन वाली अख नहीं है।'' क्या मुहम्मद साहिब आज के मुसलमानों की मानसिकता को समझ सके होंगे? नहीं आज भी मुसलमानों के कोई न कोई जाग्रत पीर औलिया अवश्य होंगे। क्या हिन्दुओं के राम मात्र मर्यादा पुरूषोत्तम आज की मानसिकता अथवा विकासशील प्राणियों को अपनी मर्यादा में बांध सकते है? नहीं। क्या आज की नारी सीता की तरह अपने पति के अनाचार/परित्याग मात्र एक धोबी के कहने पर राम के शक के कारण जंगल में वास करते हुए भी उसी पति परमेश्वर राम के बच्चों लव, कुश का लालन पालन कर पायेगी? नहीं। वह राम को कोर्ट में खड़ा कर देगी। क्या हम स्वयं महावीर, बुद्ध, राम, रहीम, वाहेगुरू, जीसस क्राइस्ट परमहंस नहीं बन सकते? ''अहं ब्रह्मास्मि'' कोई भी ज्ञानी, रहस्य-वादी, करूणावान, विवेकशील प्राणी घोषणा कर सकता है।

सूखी लकड़ी

✻ डॉ. विरेन्द्र झा

एक निर्धन व्यक्ति गन्ने के कुछ टुकड़े पोटलों में बांधकर मालवा के परमार राजा भोज से मिलने चला। किसी शरारती व्यक्ति ने चुपचाप पोटली में गन्ने के टुकड़े की जगह सूखी लकड़ी रख दी।

उसने दरबार में पोटली खोल, तो सभासद स्तब्ध रह गए। उसे दंडित करने की बात सोची जा रही थी कि नवरत्नों में प्रमुख कालिदास ने कहा- राजन्, आप गुणग्राही है, अतः इसकी भावना को समझने की कोशिश करें। पवन पुत्र हनुमान भगवान शिव और वीर अर्जुन ने क्रमशः सोने की लंका, कामदेव एवं खांडव वन को भस्म कर दिया, जबकि दरिद्रता को नष्ट करने की जरूरत थी। उसी की प्रतीक सूखी लकड़ी लेकर यह व्यक्ति आप जैसे समर्थ व्यक्ति के पास पहुंचा है, ताकि आप सबसे बड़े अभिशाप दरिद्रता की प्रतीक इसकी सूखी लकड़ियों को नष्ट कर वास्तव में यश के भागी बने।

राजा को कालिदास का तर्ग उचित लगा। राजा ने खूब धन-संपत्ति देकर उसे विदा किया।

वह व्यक्ति कृतज्ञतावश बार-बार कालिदास की ओर मुड़कर देख रहा था। राजा को वैसा करना उचित नहीं लगा। राजा ने उसे बुलाकर पीछे देखने का कारण जानना चाहा। उसने विनम्रतापूर्वक कहा- महाराज, अब तक दरिद्रता मेरे साथ थी इसलिए डर लग रहा है कि कहीं अब भी न पीछा कर रही हो। उसके उत्तर में कालिदास को भी संतुष्ट कर दिया।

✻ एक संत बियाबान में झोपड़ी बनाकर रहते थे। वे राह से गुजरने वाले पथिकों की सेवा करते और भूखों को भोजन कराया करते थे। एक दिन एक बूढ़ा व्यक्ति उस राह से गुजरा। उन्होंने हमेशा की तरह उसे विश्राम करने को स्थान दिया और फिर खाने की थाली उसके आगे रख दी। बूढ़े व्यक्ति ने बिना प्रभु स्मरण किये भोजन प्रारंभ कर दिया। जब संत ने उन्हें याद दिलाया तो वे बोले- मैं किसी भगवान को नहीं मानता। यह सुनकर संत को क्रोध आ गया और उन्होंने बूढ़े व्यक्ति के सामने से भोजन की थाली खींचकर उसे भूखा ही बिदा कर दिया। उस रात उन्हें स्वप्न में भगवान के दर्शन हुए। भगवान बोले- पुत्र! उस वृद्ध व्यक्ति के साथ तुमने जो दुर्व्यवहार किया, उससे मुझे बहुत दुःख हुआ। संत ने आश्चर्य से पूछा- प्रभु मैंने तो ऐसा इसलिए किया कि उसने आपके लिए अपशब्दों का प्रयोग किया। भगवान बोले- उसने मुझे नहीं माना तो भी मैंने आज तक उसे भूखा नहीं सोने दिया और तुम उसे एक दिन का भी भोजन न करा सके। यह सुनकर संत की आंखों में अश्रु आ गए और स्वप्न टूटने के साथ उनकी आँखें भी खुल गई।

जैन धर्म में लक्ष्मी यानी निर्वाण

जैन धर्म में दीपावली के दिन अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर प्रातःकाल निर्वाण की प्राप्ति और उनके प्रमुख शिष्य गौतम गणधर को संध्या के समय परम बोधी केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान ज्योति का प्रतीक है जो स्वयं भी प्रकाशित होता है और दूसरों को भी प्रकाशित करता है उसी के प्रतीक स्वरूप दीपावली पर्व मनाया जाता है, भगवान महावीर को मोक्ष लक्ष्मी की प्राप्ति हुई और गौतम गणधर को केवल्य ज्ञान की सरस्वती की प्राप्ति हुई इसलिये लक्ष्मी सरस्वती की पूजन इस दिन की जाती है। लक्ष्मी पूजा के नाम पर रूपये पैसों की पूजा जैन धर्म में स्वीकृति नहीं है यह धर्म तो अपरिग्रह-वाद का धर्म है। भगवान महावीर ने भौतिक संपदा नहीं आध्यात्मिक संपदा की प्राप्ति के लिये भौतिक संपदाएं छोड़ी है।

दुनिया में सफलता पुरूषार्थ से मिलती है और पुरूषार्थ धन दौलत को समेटने में नहीं समेटी हुई दौलत को छोड़ने में करना पड़ता है। हमारे यहां लक्ष्मी और सरस्वती इन दो देवियों की मान्यता है। लक्ष्मी पूजने योग्य तो है पर विश्वास के काबिल नहीं है, वह आज हमारी है कल किसी और की हो जाएगी लेकिन सरस्वती पूजने योग्य भी है और विश्वास के काबिल भी। आपने देखा होगा कई लाखपति रातों रात खाकपति हो जाता है पर ऐसा नहीं सुना होगा कि कोई ज्ञानी रातों रात बुद्धू बन गया हो।

जैन धर्म में लक्ष्मी का अर्थ होता निर्वाण और सरस्वती का अर्थ होता है केवल्यज्ञान इसलिये प्रातःकाल जैन मंदिरों में भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण उत्सव मनाते समय भगवान की पूजा में लड्डू चढ़ाए जाते है। लड्डू गोल होता है, मीठा होता है सबको प्रिय होता है। गोल होने का अर्थ होता है जिसका आरंभ है ना अंत है अखण्ड लड्डू की तरह हमारी आत्मा होती है जिसका आरंभ ना होता है और ना ही अंत। लड्डू बनाते समय बूंदी को कड़ाही में तपना पड़ता है और तपने के बाद उसे चाशनी में डाला जाता है उसी प्रकार अखण्ड आत्मा को भी तपश्चरण की आग में तपना पड़ता है। तभी मोक्ष रूपी चाश्नी की मधुरता मिलती है उसी दिन यह आत्मा जगत में प्रिय लगने लगती है।

दीपावली दीनों का त्यौहार है धुंए का नहीं-

अमावस्या की अंधेरी रात में भगवान महावीर ने आत्मज्ञान की ज्योति जलाकर सारे जगत को रोशन कर दिया था। हम भी उनसे प्रेरणा लेकर अंधेरों को रोशन करने का प्रयास करें। लोगों को मिठाईयां तो बहुत बांटी अब आए दुखी के आंसू पोछकर खुशियां मनाए। द्वेष और दुश्मनी से दूसरों को बहुत जीत लिया, प्रेम और साधना से अपने आपको जीतो, दूसरों को जीतने वाला वीर होता है और अपने आपको जीतनेवाला महावीर होता हैं। दीपावली मनाएं पर किसी का दीप ना बुझे, किसी का घर ना जले। तभी सार्थक होगी दीपावली। आपकी आतिशबाजी का जोरदार धमाका पशु-पक्षियों और जानवरों की नींद ही हराम नहीं करता उन्हें भयभीत कर उन्हें अंधा, बहरा करके मौत के मुंह में भी डालता है विषैला और जहरीला या बारूद का धुंआ वातावरण को प्रदूषित कर स्वास्थ्य और पर्यावरण का नाश करता है। दीपावली पर मंत्र का जाप करें, साधना करें, सिद्धि करें, प्रभु का स्मरण करें। शुध्द वस्त्र पहनकर आसन, माला से रात्रि 12 बजे से अपने अराध्य, अपने इष्ट के नाम से माला जपे क्योंकि इस शुभ नक्षत्र में मंत्रे में दैवीय शक्ति प्रकट होती है जो हमें विघ्न बाधाओं आपदाओं व प्रतिकूलताओं से बचाती है।

तीन मित्र तंत्र की विविध पद्धतियों का ज्ञान प्राप्त करके निकले। उन्हें रास्ते में एक राक्षस के अस्थिपंजर पड़े मिले तो उन्होंने उसके ऊपर अपनी विद्या का परीक्षण करने की सोची। उनमें से एक मंत्र विद्या के सहारे उसको शरीर प्रदान किया तो दूसरे ने उसमें रूधिर संचालित और ह्दय स्थापित किया। तीसरा उसमें प्राणों का संचार करने ही वाला था कि एक व्यक्ति वहां से गुजरा। यह सब देखकर उसने उनको चेताया- 'राक्षस के अंदर प्राण मत डालो, यह तुम्हारा ही नाश करेगा। ''विद्या के मिथ्या दंभ में चूर उन तीनों ने उस व्यक्ति की एक न सुनी और राक्षस को जीवित कर दिया। प्राण आते ही राक्षस ने सर्वप्रथम उन तीनों पर हमला कर उनको मार डाला। किताबी ज्ञान आदमी के जीवन में जानकारियां और साक्षरता प्रदान कर सकता है, पर विवेक और जीवन की सार्थकता तो विद्या से ही आती है।

✽ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोध्दारक भविष्यफल नवम्बर-2016

मेष :- आपके लिये यह माह मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक प्रगति हेतु नई रणनीति तैयार होगी, सहयोगियों के माध्यम से सफलता मिलेगी, पारिवारिक वातावरण कुछ तनावयुक्त रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,4,9,10,17,26 ।

वृषभ :- आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, निवेश से बेहतर लाभ की संभावना रहेगी, सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रूचि रहेगी, किसी प्रकार की सामाजिक यात्रा का प्रबल योग रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 2,7,12,15,20,28 ।

मिथुनः-आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता मिल सकती है, पदोन्नति की प्रबल संभावना रहेगी, परिवार में किसी प्रकार का आयोजन संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये सफलता का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,6,11,16,22 ।

कर्कः- आपके लिये यह माह सामान्य रहेगा, व्यापार में बनते हुए कार्य अटक सकते हैं, व्यय की अधिकता मानसिक तनाव का कारण रहेगी, जल्दबाजी में कोई भी निर्णय न करें, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम की आवश्यकता रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,7,17,20,26 ।

सिंहः-आपके लिये यह समय मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक कार्यों हेतु अनुकूल समय है, सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी, किसी प्रकार की आकस्मिक लाभ की स्थिति रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय है।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,10,16,19,25 ।

कन्याः-आपके लिये यह समय मिश्रित फलदायक रहेगा, व्यापारिक लाभ में अस्थिरता रहेगी, कार्य क्षेत्र में नई तथा बेहतर संभावना मिलेगी, परावारिक वातावरण बेहतर रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 4,7,14,18,25 ।

तुलाः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, व्यापारिक लाभ में वृद्धि होगी, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में वर्चस्व बढ़ेगा, परिवार में किसी प्रकार का विशेष आयोजन संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये सफलता का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,2,9,14,19,24,30 ।

वृश्चिकः- आपके लिये समय सामान्य रहेगा, व्यापार में सफलता हेतु विशेष परिश्रम की आवश्यकता रहेगी, इस समय मानसिक तनाव की स्थिति रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी परिश्रम का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 5,7,9,18,25,30 ।

धनुः-आपके लिये यह माह शुभ रहेगा, व्यापारिक गतिविधियों में परिवर्तन अनुकूल रहेंगे, आत्म विश्वास में वृद्धि होगी, परिवार में किसी प्रकार का आयोजन संभावित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर परिणाम का समय रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथि- 4,8,9,12,16,27 ।

मकरः-आपके लिये माह मिश्रित फलदायक रहेगा, अधिकारी वर्ग या वरिष्ठजनों का सहयोग शुभ फलदायक रहेगा, निर्णय लेने की क्षमता से वर्चस्व में वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

महत्वपूर्ण तिथि- 3,6,11,19,21,29 ।

कुम्भ :- आपके लिये माह शुभ रहेगा, कार्य क्षेत्र के विस्तार हेतु दूर स्थानों की यात्रा संभावित है, मित्रों का बेहतर सहयोग मिलेगा, परिवार में उत्साह का वातावरण रहेगा, विद्यार्थी वर्ग में प्रसन्नता रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि-4,8,14,17,25 ।

मीनः-आपके लिये यह माह समान्य रहेगा, बनते हुए कार्य बिगड़ सकते है, इस समय किसी पर भी उत्तरार्द्ध बेहतर फलदायक रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को परिश्रम की आवश्यकता रहेगी।

महत्वपूर्ण तिथि- 1,7,18,24,30 ।

वर्ग पहेली क्रमांक-264

इस यंत्र के अक्षरों से बनाएं-

1- पार्श्वनाथ प्रभु के 10 गणधर।

2- पार्श्वनाथ प्रभु के सांसारिक परिवार के 4 सदस्य।

एक अक्षर का पुनः पुनः प्रयोग हो सकता है।

*	श्री	अ	आ	घो	*
जि	वि	शु	श	ण	षे
य	द्र	रि	ध	ह्म	म
ब्र	भ	शि	ष्ठ	वा	द
र	व	त्त	श्व	र्य	र्ष
से	प्र	मा	दे	न	वी
*	ती	त	भा	ज	*

लक्ष्मी का मूल संप

एक बार लक्ष्मीदेवी ने रात्रि में आकर सेठ को कहा- मैं दो दिन बाद आपके घर से चली जाऊंगी, अतः जो कुछ मांगना हो वह कल मांग लेना।

सुबह उठकर सेठ ने अपनी चार पुत्रवधुओं से बात करते हुए कहा- तुम्हें जो चाहिए वह वरदान मांग लो।

एक पुत्रवधु ने आलीशान कपड़ें की मांग की। दूसरी पुत्रवधु ने सोने के जेवर की मांग की। तीसरी पुत्रवधु ने हीरेजड़ित आभूषण मांगे।

सेठ की चौथी पुत्रवधु खूब होशियार थी, उसने कहा- मैं एकांत में कहूंगी।

सेठ ने उसे एकांत में पूछा तो उसने कहा- मुझे अन्य कोई वस्तु नहीं चाहिये। लक्ष्मीदेवी वरदान ही दे रही है तो उनसे मांगो कि हमारे घर दंत-कलह अर्थात झगड़ा न हो।

दूसरे दिन रात्रि में जब सेठ ने लक्ष्मी के पास चारों पुत्रवधुओं के अलग-अलग वरदान की बात कहीं तो लक्ष्मीदेवी ने कहा- दंतकलह के कारण ही मैं यहां से जाना चाहती थी, परन्तु जब चौथी पुत्रवधु ने दंतकलह के अभाव का ही वरदान मांग लिया है तो जब मैं यहीं रहूंगी।

जहां कलह होगा, वहां लक्ष्मी नहीं रहेगी।

कलक के फलस्वरूप अनेक भवों में दुर्गति और दौर्भाग्य की प्राप्ति होती है।

वर्ग पहेली क्रमांक-263 का परिणाम

1- यशोदा	**- पत्नी**
2- नंदीवर्धन	**- भाई**
3- जमाली	**- जमाई**
4- विदेह दिन्ना	**- माँ**
5- सुदर्शना	**- बहन**
6- सुपार्श्व	**- काका**
7- शेषवती	**- नातिन**
8- समरवीर	**- ससुर**
9- प्रियदर्शना	**- पुत्री**
10-चेटक	**- मामा**

सादकी की साकार प्रतिमा रामकृष्ण परमहंस की माँ अपने जीवन के अंतिम दिनों में बेटे के पास ही रहने आ गई थी। परमहंस के निष्ठावान शिष्य और सेवक श्री मथुरा बाबू माता और पुत्र दोनों की यथेष्ट सेवा करते। एक दिन की बात है, उन्होंने माँ से कहा- माँ आपको जिस किसी भी चीज की जरूरत हो मुझे बता दें। मैं अभी तुरन्त आपकी सेवा में उपस्थित कर दूंगा।

माँ ने जवाब दिया, सब कुछ तो है बेटा, मेरा आशीष लो और प्रसन्न रहो। परन्तु मथुरा बाबू इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुए और बार-बार आग्रह करते रहे। जब माँ ने देखा कि मथुरा बाबू इस प्रकार नहीं मानने वाले हैं तो उन्होंने कहा, ठीक है अगर तू कुछ देना ही चाहे तो मेरे लिए थोड़ी सुंघनी मंगवा दे। मथुरा बाबू की आँखों में आँसू आ गए और वे निस्पृह, निष्काम देवी के प्रति नतमस्तक होकर मन-ही-मन कहने लगे, ऐसी माँ को रामकृष्ण जैसा पुत्र मिले तो इसमें क्या आश्चर्य है।

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशःतीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रूपये 31/-, 21/-, 11/-एम.ओ.भेजें जावेंगे। सही उत्तर वाले नाम हम छांपेगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-264

✲ पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

किसे केवलज्ञान हुआ...!

1-वाघण के द्वारा शरीर नौचते हुए।
2- जहां लाहो वहां लेलो शब्द रटते हुए।
3- गुरू के डंडे की मार खाते हुए।
4- घाणी में पीलने का दर्द सहते हुए।
5- घर में बैठे हुए किसे केवलज्ञान हुआ।
6- पात्र प्रमार्जन करते हुए।
7- नदी पार करते हुए।
8- काउसग्ग में पश्चाताप करते हुए।
9- गोचरी लेकर आते हुए।
10-हाथी के हौदे पर बैठे हुए।

राजा पर्यंक सिंहासन दूसरों को सौंपकर ब्रह्म की खोज में निकल पड़े। सत्संग किये और ध्यान-मनन में लगे रहे। सुना-समझा तो बहुत, पर गले न उतरा और अतृप्ति निराशा की ओर बढ़ती गई। खिन्न मन पर्यंक तीर्थयात्रा पर निकल पड़ा एक दिन बहुत थके थे, भूखे भी। किसी किसान के खलिहान में जा पहुंचे और थके-मांदे पथिक को देखकर काम छोड़कर उसके समीप पहुंचा। थकान और भूख समझने में देर न लगी। उसने चावल निकाला हांडी में डाला और आग पर रखते हुए कहा-उठो इसे पकाओ, पक जाए, तब कहना।

राजा से मंत्र-मुग्ध की तरह वैसा ही किया। भात पक गया, तो किसान को बुलाया। दोनों ने भरपेट खाया। किसान काम में लग गया और राजा को गहरी नींद आ गई। स्वप्न में देखा कि एक दिव्य पुरुष सामने खड़े हैं और कह रहे है, मैं कर्म हूं, मेरा आश्रय लिए बिना किसी को शांति नहीं मिलती। तुम परमार्थ-पुरूषार्थ में लगो और लक्ष्य तक पहुंचो।

नींद खुलने पर राजा ने अपनी कार्यपद्धति बदली। अब वे ज्ञानचर्चा कम करते और सेवा-पुरूषार्थ में अधिक संलग्न रहते।

वर्गपहेली क्रमांक-263 के विजेता

1- प्रियंशी जैन, नरवर (म.प्र.) - प्रथम
2- शांता बापना, इन्दौर (म.प्र.) - द्वितीय
3- शशि भाण्डावत, शाजापुर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

श्रीमती प्रभा जैन, श्रीमती सुधा धारीवाल, श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास, प्रिती हिंगड़, नरवर, स्नेहलता जैन, मंदसौर, प्रिती जैन, रतलाम, शांतादेवी पोरवाल, जवाहरलाल जैन, उज्जैन, श्रीमती विद्या संघवी, बदनावर।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-263 के परिणाम

सही उत्तर-

1-विमलश्री (पेथड़शाह कीमा), 2- आभू संघवी, 3- जिप्रभसूरी 4- कुमारपाल राजा, 5- श्री श्रेणिकराजा 6- श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरीजी म.सा., 7-भरत चक्रवर्ती 8- जमालि 9- कुमारपाल राजा 10-मोहनीय

नोट- सभी उत्तर गलत प्राप्त हुए। क्रमांक-1 का उत्तर सभी का गलत रहा।

✲ यदि जीवन में लोकप्रिय होता हो तो सबसे ज्यादा 'आप शब्द का, इसके बाद हम शब्द का, और सबसे कम 'मैं' शब्द का उपयोग करना चाहिये।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डाले।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक २५-११-२०१६ तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः५१/-,३१/-,२१/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम "आगमोद्धारक' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

प्रकाश पूजन की अखंड भंवधारा है दीपावली

✻ रतनलाल जोशी

दीपावली भारत का सबसे प्राचीन पर्व है। प्रकाश पर्व के रूप में अगणित वर्षों से हम उसे व्यापक हर्षोल्लास के साथ मनाते आ रहे है। दीपावली कब और कैसे शुरू हुई इस संबंध में कई कथाएं परम्पराएं प्रचलित है। कोठापनिषद में यम नचिकेता की कथा है। नचिकेता जन्म मरण के रहस्य जानने के लिये यह के पास गये थे। यमराज नचिकेता की लगन और निर्भिकता से बड़े प्रसन्न हुए। नचिकेता को असत् पर सत् और मृत्यु पर अमृत की विजय का ज्ञान दिया। यमलोक से जब नचिकेता धरती पर लौटे तो भूलोक निवासियों ने घी के दीये जलाकर उनका स्वागत किया। कहते है कि आर्यावृत की वह पहली दीवाली थी। भारत के उत्तर पूर्वीय अंचलों में दीपावली वनवासी राम के अयोध्या लौटने की वर्षगांठ है। 14 बरसों की वनयातना भोगकर रावण आदि राक्षसों का विनाश कर श्रीलंका तक आर्य संस्कृति की ध्वजा फहराकर राम अपने घर लौटे थे। अयोध्या के नागरिकों ने नगर को प्रज्जवलित दीपों से आलोकित कर राम का स्वागत किया था। अवध में यह परम्परा आज भी अक्षुण्ण है।

दक्षिण भारत में वामनावतार की कथा के साथ दीपावली का संबंध जोड़ा जाता है पुराणों में कथा है कि दैत्य वंश का राजा बलि देवों को परास्त कर पृथ्वी का एकछत्र स्वामी बन गया था। उसकी दानवीरता का अहंकार आकाश छूने लगा था। वामन (बौने) का रूप धार कर विष्णु उससे दान मांगने आये। उन्होंने बली से तीन परा पृथ्वी मांगी। बली ने वामन को तीन पग धरती दान दे दी। विष्णु के विराट होकर दो ही पग में सारी पृथ्वी माप ली। बली के अहंकार का दमन हुआ और विष्णु ने उसे पाताल भेज दिया। पाताल जाते हुए बली ने वन मांगा कि भूलोक की प्रजा मुझे प्राणों से भी प्रिय रही है आप कृपा कर प्रतिवर्ष अपनी प्रजा से मिलने के लिये पृथ्वी पर आने के लिये मुझे अनुमति दीजिए। विष्णु ने राजा बली की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली। कार्तिक अमावस्या के बाद की प्रतिपदा दक्षिण भारत में बली प्रतिपदा के रूप में पूजा जाता है। आबालवृद्ध, नर-नारी रंग बिरंगे नये कपड़े पहनकर घरों में दीपों की पंक्तियां जलाकर राजा बली का स्वागत करते है और विष्णु को आर्घ चढ़ाते हैं। कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा भी होती है। यह किसानों की दीपावली पर्व है। भागवत पुराण में वर्णित है कि गोवर्धन पर्वत उठाकर श्रीकृष्ण ने इंद्र के कोप से ब्रजवासियों की रक्षा की थी। खेत के लिये इंद्र की पूजा के स्थान पर उन्होंने गोवर्धन की प्रचलित पूजा करवाई थी। प्रतिपदा को किसानों की दीपावली इसी प्रसंग की पर्व परम्परा है। दीपावली के पर्व की समाप्ति 'यम द्वितीया' से होती है जो उत्तर भारत में भाईदूज और महाराष्ट्र में भाऊबीज के नाम से प्रख्यात है। यह भाई बहनों के स्नेह सौहार्द्र का त्यौहार है। बिछुड़े भाई बहन मिलते है और भेंट भोजन द्वारा स्नेक का आदान प्रदान करते हैं। एक पौराणिक कथा भी है कि कार्तिक शुक्ल द्वितीया को यम अपनी बहन यमुना से मिलने के लिये धरती पर आती है। इसलिये यह द्वितीय का नाम यह द्वितीया हो गया है। पुराणों में एक कथा है कि कार्तिक की अमावस्या को लक्ष्मी अपनी बहन अलक्ष्मी (दरिद्रा) के साथ पृथ्वी आती है और जहां प्रकाश होता है वहां अपना निवास बना लेती है। अलक्ष्मी को अंधेरा व गंदगी प्रिय है इसलिये वह ऐसा घर खोजती रहती है। लोग लक्ष्मी का आव्हान करने और अलक्ष्मी को भगाने के लिये मकानों को साफ सुथरा करते है और उन्हें प्रकाशित करने के लिये दीप जलाते हैं। लक्ष्मी की पूजा करते हैं और कहीं कहीं नया वर्ष (विशेषतः गुजरात में) भी मनाते है। दीप जागरण के साथ साथ दीपावली दीप निर्वाण का पर्व भी है ऐसा पावन पर्व जब जीवन की क्षण भंगुर दीपशिखाएं बुझ गई थी और अनंत जीवन का यह महाप्रकाश ज्योतित हो उठा था, जिसके आलोक में मनुष्य की जीवन यात्रा आत्मा के ऊंचे सोपानों तक पहुंची है। भगवान महावीर स्वामी ने दीपावली की ज्योतिर्मय मुहूर्त में ही अपना देह त्याग किया था। मृण्मय दीप बुझ कर कोटि-कोटि सूर्यों के प्रकाश में जागृत हो उठा था। काशी कौसल के 18 राजाओं ने मल्लीगण संघ और बीस लिच्छिवी राजाओं के साथ मिलकर सहस्र दीप जलाकर भगवान महावीर का यह निर्वाणोत्सव मनाया था। स्वामी दयानंद ने दीपावली के दिन ही अपनी पार्थिव जीवन लीला समाप्त की थी। प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो.... इन शब्दों के साथ उन्होंने योग बल से आत्मा का विसर्जन कर दिया था।

राम बादशाह के नाम से देश विदेश में प्रख्यात स्वामी रामतीर्थ ने दीपावली के पर्व पर ही अपना शरीर छोड़ा था। 1906 के ग्रीष्मकाल में वे अपनी दूसरी हिमालय यात्रा पर निकले थे। गंगा के परम भक्त थे। सबेरे ही गंगा पर लिखी अपनी नई कविता गंगा तुझ पर बलि बलि जाऊ गाते हुए वे गंगा में स्नान के लिये उतरे तो गंगा की तरंगों को देखकर भावविव्हल हो उठे अकस्मात पैर फिसला और रामतीर्थ गंगा का बेटा रामतीर्थ गंगा माता की गोद में सो गया। यह है दीपावली की सांस्कृतिक परम्परा सदियों से चली आ रही प्रकाश पूजन की हमारी अखण्ड भवधारा जिसमें जीवन के उद्भव के साथ ही मृत्यु का परिर्वसन भी प्रकाश में होता है किंतु हमारा यह सांस्कृतिक प्रकाशोत्सव आज केवल लक्ष्मीपूजा का उत्सव ही रह गया है। वेदों में लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी थी। अब केवल धन लक्ष्मी है। भारत सरकार की बहियों में यह आंकड़ा लक्ष्मी से ज्यादा कुछ नहीं है। बंदीनी लक्ष्मी को कारा मुक्त करना होगा। करकरारा से निकालकर उसे लोक लक्ष्मी बनाना होगा। योजना रूपेण लक्ष्मी देवी को लोकरूपेण विग्रह में परिणित कर पूजा के नये प्रमाण चढ़ाने होंगे।

या देवी सर्वभूतेषु लोकरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यौ-नमस्तस्यौ-नमस्तस्यौ नमोनमः।।

शासन समाचार

जैनं जयति शासनम्

युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी सूरीमंत्राराधना अनुष्ठान में मौन साधना के साथ साधनारत हुए

- ✻ उपधान तप में 200 आराधक से आगम मंदिर में श्रमण महोत्सव का माहौल बना।
- ✻ 18 जनवरी को श्री पंकजभाई गांधी दीक्षित होंगे।
- ✻ जीरावला की जाजम के लिये 10 दिसंबर को जीरावला पधारेंगे।
- ✻ अंजन प्रतिष्ठा हेतु 2 फरवरी 2017 को भी जीरावला पधारेंगे।
- ✻ फरवरी के अंतिम सप्ताह में अहमदाबाद में शासन प्रभावक कार्यक्रम होगा।
- ✻ फरवरी के बाद मालवा विहार की संभावना।

शंखेश्वर- पूज्यपाद आचार्य गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के देह त्यागने के बाद अपने जीवन का सबसे यशस्वी और गरिमामय चार्तुमास श्री शंखेश्वर महातीर्थ की पुण्य भूमि पर स्थित आगम मंदिर में दादा चरम तीर्थ का परमात्मा श्री प्रभुवीर की छत्रछाया में कर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने शासन प्रभावना में चार चांद लगा दिये। यही नहीं अनेक विशिष्ठ आयोजनों के साथ श्रावक से श्रमण बनने के अनुष्ठान को उपधान तप के आयोजन के साथ 18 जनवरी 2017 को मुंबई के सुश्रावक श्री पंकजभाई गांधी का संयमोत्सव भी परमात्मा के शासन की अभिवृद्धि में सहायक बनेगा। पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री रहते आपश्री गुरूदेवश्री की 16 दिवसीय मौन सूरीमंत्राराधना की उत्तम व्यवस्था का भार संभालते आये है। अब आपश्री इस चार्तुमास में प्रथम बार सूरीमंत्राराधना का अनुष्ठान मौन साधना के साथ कर रहे है। इन सब धर्म शासन प्रभावना के कार्यों में बढ़े योगदान के रूप में शंखेश्वर महातीर्थ का चार्तुमास यादगार धर्मानुष्ठान के रूप में जाना जाता रहेगा। मणियार वेलजीभाई माणकचंद्र परिवार के द्वारा भी गुरू भक्ति ऋण को उतारने के लिये कराये गये अभूतपूर्व चार्तुमास के रूप में याद किया जाता रहेगा। अभी उपधान तप की माल और 18 जनवरी 2017 को श्री पंकजभाई गांधी का दीक्षा महोत्सव प्रसंग बाकी है। इसके पूर्व 10 दिसंबर को जीरावला महातीर्थ की जाजम में निश्रा प्रदान करने युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. पधारेंगे। इसी तरह 2 फरवरी 2017 को अजंन प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये पुनः जीरावला पधारेंगे। इसके बाद अहमदाबाद तथा अन्य स्थानों पर धर्मानुष्ठान करते हुए मालवा की ओर विहार होगा।

बैंगलोर में पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी एवं वैराग्यरत्न सागरजी की निश्रा में उपधान तप

बैंगलोर- यहां के श्री आदिनाथ जैन श्वेतांबर श्री संघ चित्रपेठ तथा श्री संभवनाथ जैन श्री संघ वी.वी.पुरम् जयनगर में चार्तुमास हेतु विराजित पूज्य पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्न सागरजी म.सा. तथा पंन्यास श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा.,साध्वी श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की महत्वपूर्ण तपाराधना उपधान तप का आयोजन होने जा रहा है।

उपधान तप का प्रथम प्रवेश मुहूर्त ११ अक्टूबर को दूसरा १३ अक्टूबर को हुआ। २७ नवंबर को उपधान तप निमित्त भव्य वरघोड़ा आयोजित होगा तथा उपधान मालरोपण २८ नवंबर को होगी। उपधान तप की सफलता हेतु तैयारियां चल रही है।

शंखेश्वर आगम मंदिर में चार्तुमास के मंगल समाचार

✻मुनि श्रीगंभीररत्नसागरजी

शंखेश्वर- आगम मंदिर में चार्तुमास हेतु विराजित मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरी. महाराजा के शिष्यरत्न युवा हृदय सम्राट युवाचार्य आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरी महाराजा ने वेलजीभाई माणिकचन्द परिवार द्वारा आयोजित अभ्युदय-नवरत्न वाटिका में अपने प्रवचन में भगवान पार्श्वनाथ का जन्म दिवस-वद-10 को हुआ था। उपाध्याय मान विजयजी भगवंत ने कहा कि- जो व्यक्ति परमात्मा की भक्ति अभिषेक, पूजा, आराधना करता है वह व्यक्ति जल्द से आगे मोक्ष मार्ग में आगे बढ़जाता है। 24 तीर्थंकर परमात्मा में सबसे ज्यादा मंदिर पार्श्वनाथ के बने है एवं साथ में सबसे ज्यादा नाम भी पार्श्वनाथ परमात्मा है। जैन शासन ऐसा बताते है कि परमात्मा के जन्म, दीक्षा, कल्याणक की उजमणी पार्श्वनाथ परमात्मा करते थे। इससे इनको आदेय नाम कर्म उपार्जन किया। कर्म की उपासना एवं कर्म को बंद पार्श्वनाथ भगवान ने करी जिसने हमको धर्म, मार्ग बताया, आत्मा का कल्याण का रास्ता बताया वह मेरे परमात्मा समझना एवं मेरे देव गुरू,धर्म से बड़ा उपकारी कोई नहीं है। जो व्यक्ति शुभ कार्य करें उसकी अनुमोदना करें जो व्यक्ति अनुमोदना नहीं करता वह दोषों का भागीदार बनता है। प्रभु ने कहा कि सभी वस्तु निःफल जा सकती है, लेकिन प्रभु भक्ति कभी भी खाली नहीं जाती है एक दिन की संयम की भावना संसार का निस्तार बन सकती है। भक्ति, श्रद्धा, भाव जिसके अंदर हो उसको पत्थर भी भगवान दिखाई देते है। संसार में तिरने का सबसे बढ़िया मार्ग है, भक्ति, जहां भक्ति होती वहां भाव जागते है। ज्योतिष शास्त्र में कहा कि जिस दिन परमात्मा का जन्म होता है उस दिन कोई मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती है। धर्मसभा में युवा मुनिराज कीर्तिरत्न सागरजी ने सम्यक दर्शन की महता को बताया जहां सच्ची श्रद्धा होती है वहां पर मोक्ष मार्ग की शुरूआत होती है। सम्यक दर्शन के बिना व्यक्ति का जीवन अधुरा होता है। व्यक्ति को पैसा, मोबाईल ऐसे आराम मिल जाय तो वह समझता कि स्वर्ग मिल गया लेकिन जैन में इसका अर्थ अलग होता है जो इन चीजों का आदी हो गया हो वह नरक की तरफ जाता दिखाई देता है। दशमी के पावन अवार पर मालवा, गुजरात, राजस्थान, बैंगलोर चैन्नई, बम्बई से भी कई गुरू भक्त आचार्यश्री के दर्शन वंदन करने आये। इस अवसर पर सभी संघपति व अतिथियों का स्वागत आयोजन परिवार के अशोकभाई मणिहार ने किया। विशेष आकर्षण-

✻ तीन दिवसीय पंचाकिना महोत्सव के अंतर्गत मिनी अंजनशलाका का लाभ दीक्षार्थी पंकजभाई अलकाबेन ने भगवान के माता-पिता, राजा-महारानी बनकर लिया। इतिहास में पहली बार किसी उद्योगपति ने शंखेश्वर में पति-पत्नि दोनों साथ में दीक्षा अंगीकार कर रहे।

✻ नमिऊण तप के 350 आराधना।

✻ नवकार मंत्र आराधना में 500 श्रावक-श्राविका ने भाग लिया।

✻ वर्धमान तप का सामूहिक पाया।

✻ तपस्या के अंतर्गत मास खमण 16 उपवास कई श्रावक-श्राविका को चालू।

✻ मासखमण का एवं वर्षीदान का ऐतिहासिक वरघोड़ा।

✻ सागरानंद जयंति एवं नवरत्न सागरजी महाराजा का स्वर्गवास निमित्त गुणानुवाद सभा।

पूज्य जैनाचार्य श्री हिमाचल- सूरीजी की पुण्यतिथि

झीलवाड़ा- मेवाड़ केसरी पूज्य जैनाचार्य श्री हिमाचल सूरीजी म.सा. की 30 वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। पूज्य आचार्य देवेश श्री रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में 12 नवंबर को मनाई जावेगी। इस अवसर पर गुणानुवाद सभा का आयोजन होगा। आगामी कार्यक्रम निम्न है-

✻ मार्गशीर्ष वदि-5, शुक्रवार 18 नवंबर को झीलवाड़ा में मुमुक्षु श्री बाबुभाई की दीक्षा।

✻ मोक्ष माला- मार्गशीर्ष सुदी-2 गुरूवार 1 दिसंबर ।

✻ पोष वदि- 9, गुरूवार, 22 दिसंबर से पोष सुदि- 3, रविवार, 1 जनवरी 2017 तक झीलवाड़ा से करेड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ छःरिपालक संघ।

✻ 14 से 16 जनवरी 2017 कालन्द्री नगर में खनन-शीलास्थापना मुहूर्त।

✻ 17 से 21 जनवरी 2017 कालन्द्री नगर में जीवित महोत्सव।

✻ 30 जनवरी दुजाणा में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव।

✻ 2 फरवरी को जीरावला तीर्थ में प्रतिष्ठा प्रसंगे उपस्थिति।

✻ 17 फरवरी 2017 मारोल (जिला सिरोही) में प्रतिष्ठा महोत्सव।

✻ 27 से 31 मार्च 2017 जीवित महोत्सव।

✻ 3 से 11 अप्रेल 2017 नाकोड़ा तीर्थ में चैत्र मास की ओली।

✻ 17 अप्रेल 2017 भाद्राजुन (जिला जालोर) में प्रतिष्ठा महोत्सव।

✻ 19 से 23 अप्रेल 2017 रामा नगर (जि.जालोर) में जीवित महोत्सव।

✻ 4 से 8 मई 2017 पंचान्हिका महोत्सव।

✻ 17 मई 2017 झालो की मंदार (मेवाड़) में अंजनशलाका प्रतिष्ठा एवं नूतन निर्मित भवन का उद्‌घाटन।

✻ 27 मई 2017 कोशीवाड़ (मेवाड़) में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव।

✻ आगामी चार्तुमास हेतु राजस्थान, शंखेश्वर, पालीताना आदि क्षेत्र की विनंती है।

वागड़ विभूषण पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. का आचार्य पदाभिषेक 28 नवंबर को बैंगलोर में होगा

- ✻ पूज्यपाद आचार्यश्री अपूर्वमंगलरत्नसूरीजी महाराजा पद प्रदान करेंगे।
- ✻ पंन्यास श्री वैराग्यरत्नसागरजी उपाध्याय पद से अलंकृत होंगे।
- ✻ गुरू नवरत्न के गुरूकुल में उत्साह का माहौल बना।
- ✻ आगमोद्धारक का आचार्य पद विशेषांक निकालने की तैयारी।
- ✻ वागड़, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान से भक्त बैंगलोर पहुंचेंगे।
- ✻ पूज्यपाद गुरूदेव श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के तीसरे शिष्य है जो आचार्य पदग्रहण करेंगे।

बैंगलोर- पूज्यपाद मालव भूषण आचार्य देवेश गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के तृतीय शिष्य नवकार महामंत्र के तृतीय पद और गुरूदेव के शिष्य परिवार के तीसरे आचार्य पद को ग्रहण करने की योग्यता पाकर आचार्य पद से विभूषित होने जा रहे है। पूज्यपाद आचार्य गुरूदेव मालव भूषण श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री अपूर्व मंगलरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा की अमृत निश्रा और वरद्‌हस्त से पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. का आचार्य पटाभिषेक होगा। इस प्रसंग पर पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वैराग्यरत्नसागरजी म.सा., साध्वीवर्या श्री सुरेखाश्रीजी म.सा. ,साध्वी दिव्यप्रज्ञा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की मंगल उपस्थिति रहेगी। आचार्य पद 28 नवंबर 2016 को बैंगलोर के जयनगर श्रीसंघ में प्रदान किया जावेगा। पूज्यपाद विशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीश्वरजी महाराजा जो वर्तमान में चिंतामणी पार्श्वनाथ महातीर्थ घसोई (म.प्र.) में चार्तुमास हेतु विराजित है। आपश्री की ओर से आचार्य पदवी प्रदान करने की सूचना पूज्यपाद आचार्यश्री अपूर्वमंगल रत्नसागर सूरीजी महाराजा तथा पूज्य पाद आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी महाराजा को दी गई साथ ही पूज्य पंन्यास प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. को भी इस मंगल शुभ समाचार से अवगत कराया गया है। आपश्री को आचार्य पद प्रदान की स्वीकृति मिलने पर गुरूदेव श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के पूरे गुरूकुल में उत्साह और उमंग का वातावरण बन गया है। पूज्य पंन्यासजी के भक्तों ने भी आनंद का भाव छा गया है। बैंगलोर में पदवी की तैयारियां आरंभ हो गई है। बड़ी संख्या में गुरूभक्त बैंगलोर पहुंचेंगे।

जीवन परिचय

जन्म नाम :-	मोहितकुमार
जन्म तारीख :-	30 जनवरी 1964
जन्म स्थान :-	सिपोर जिला मेहसाना (उत्तर गुजरात) तारंगा तीर्थ के पास
सांसारिक पिताश्री :-	श्री महासुखलालजी शाह
सासांरिक माताश्री :-	श्रीमती सुभद्रा बहन शाह
दीक्षा ग्रहण :-	सिपोर सं. 2040 जेठ सुद-8, दिनांक 7-6-1984
दीक्षा गुरू :-	मालव भूषण आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.
शिष्य :-	1- आदर्शरत्नसागर 2- मुनिश्री नमिरत्नसागर
गणिपद :-	शंखेश्वर महातीर्थ, दिनांक 23-4-2008
पंन्यास पद :-	श्री नागेश्वर महातीर्थ दिनांक 11-5-2014
आचार्य पद :-	28 नवंबर 2016, जयनगर,बैंगलोर
पैदल विहार :-	लगभग 60 हजार कि.मी. अब तक प्रतिवर्ष लगभग 1 हजार कि.मी.
धर्मकार्य :-	उपधान विधि, दीक्षा विधि, नूतन जिनालय, प्रतिष्ठा काय प्रवचनकार छःरिपालित संघ
सांसारिक परिवार :-	पांच भाई, दो बहन में सबसे छोटा
दीक्षा दाता गुरू :-	पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री देवेन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.

अनुयोगाचार्य श्री वीररत्नविजयजी की निश्रा में अनेक शासन प्रभावना का आयोजन

राऊ- इन्दौर के समीप राऊ नगर को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर श्री संघ में सफल चार्तुमास प्रदान करने वाले पूज्य अनुयोगाचार्य श्री वीररत्न विजयजी म.सा.की निश्रा में आगे भी अनेक आयोजन होने जा रहे है। चार्तुमास सम्पन्न हो जाने के बाद अप्रेल तक कार्यक्रमों की श्रृंखला बनी हुई है जो निम्न हैः-

* 5 नवंबर को श्री ज्ञान पंचमी महापर्व-सिद्धचक्र महापूजन-सिलिकॉन सिटी।

* 6 नवंबर को जैन शासन शणगार श्री मणिभद्रवीर का महापूजन, वरघोड़ा नवकारसी, स्वामी वात्सल्य।

* 14 नवंबर को चार्तुमास परिवर्तन- गृहांगण में मंगल प्रवेश, प्रवचन-संघपूजन, नवकारसी, स्वामी वात्सल्य।

* 15 नवंबर को चार्तुमास समापन-परिवर्तन प्रवेश। नवकारसी, स्वामीवात्सल्य, मंगल विहार।

* 16 नवंबर को ह्रिंकारगिरी महातीर्थ में श्री भोमियाजी मंदिर की प्रतिष्ठा।

* 17 नवंबर को श्री ओएसीस कालोनी इन्दौर में जैन आराधना भवन के निर्माण का शुभारंभ।

* 18 नवंबर को श्री डबल चौकी में नूतन जैन उपाश्रय का भूमि पूजन।

* 20 नवंबर को श्री चावड़ा से श्री शिवपुर (मातमोर) महातीर्थ का पदयात्रा संघ।

* 1 मार्च 2017 को पूज्य गुरूदेवश्री का जन्मदिन समारोह चौमहला (राज.)।

* 21 अप्रेल 2017 को भव्या तिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव श्री त्रिभुवन भानु पार्श्वनाथ-श्री माणि भद्रवीर जैन महावीर शिवपुर (मातमौर)।

श्री आर्यगुण गुरूकृपा जैन तीर्थ में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव नववर्ष 2017 में होगा

*** पूज्य आचार्य श्री कलाप्रभसागरजी का भव्य अवदान।**

रामजी का पोल- पूज्य आचार्य श्री गुणसागर सूरीजी एवं पूज्य आचार्य श्री गणोदयसागर सूरीजी की कृपा से पूज्य जैनाचार्य श्री कलाप्रभसागरजी म.सा. को जैन अवदान के रूप में महत्वपूर्ण भेंट श्री आर्य गुण गुरूकृपा जैन तीर्थ के रूप में मिलने जा रही है। बीकानेर, जैसलपुर, बाड़मेर, चण्डला हाईवे पर रामजी का पोल में निर्मित हो रहे इस तीर्थ का भव्य प्रतिष्ठा जाजम का आयोजन २ अक्टूबर को होने जा रहा है। प्रतिष्ठा अंजन का महापूजन ११ से २२ जनवरी २०१७ तक होगा। प्रतिष्ठा २१ जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा की तैयारी आरंभ हो चुकी है।

**** अकेले करना पड़ता है सफर जहां में कामयाबी के लिए। काफिले और दोस्त अक्सर कामयाबी के बाद ही बनते है।***

प्रतापगढ़ में ओली आराधना

प्रतापगढ़- श्री जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक सकल संघ के द्वारा पूज्य साध्वी श्री अर्हमव्रताश्रीजी म.सा. की निश्रा में नवपद ओली आराधना का आयोजन 6 से 15 अक्टूबर तक किया गया। इस प्रसंग पर श्री नाकोड़ा भैरव अनुष्ठान, श्री सिद्धचक्र महापूजन तथा 56 दिक्क कुमारी स्नात्र महोत्सव का आयोजन किया गया। पारणा 17 अक्टूबर को हुआ।

दुधालिया में तप अनुमोदना महोत्सव मना

दुधालिया- विश्व विख्यात महातीर्थ श्री नागेश्वर के समीप दुधालिया में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वी श्री पावन प्रज्ञाश्रीजी तथा पंथसिद्धी श्रीजी की निश्रा में भव्य तपोत्सव का आयोजन किया गया। 11 सितंबर को सम्पन्न महोत्सव में तपस्वियों का वरघोड़ा निकला। तपस्वियों का बहुमान किया गया तथा श्री पार्श्व पंचकल्याणक पूजन पढ़ाई गई।

भायकला में आचार्य सुशील सूरीजी की पुण्यतिथि का भव्य आयोजन हुआ

भायकला- पूज्य आचार्य देवेश श्री सुशील सूरीश्वरजी म.सा. की 11 वीं पुण्यतिथि पर भव्य स्मरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सेठ मोतीशा जिनालय भायकला में यह आयोजन 9 अक्टूबर को हुआ। इस अवसर पर श्री पार्श्व भैरव महापूजन भी पढ़ाई गई। 2 से 9 अक्टूबर तक आयोजित महोत्सव में अनेक महापूजन पढ़ाई गई। पूज्य आचार्य देवेश श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

श्री जीरावला महातीर्थ में प्राण-प्रतिष्ठा के सुखद आयोजन हेतु अट्ठम-आयंबिल की सारे देश में आराधना

✻ प्रतिष्ठा चढ़ावे की जाजम 10 दिसंबर को।
✻ प्रतिष्ठा 2 फरवरी 2017 को।
✻ युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी दोनों कार्यक्रमों में निश्रा देंगे।

जीरावला- जैन जगत के इतिहास में वर्तमान युग से एक अनोखा आयोजन जीरावला पार्श्वनाथ परमात्मा के जिनालय की प्रतिष्ठा रूप में सम्पन्न होने जा रहा है। अध्यक्ष श्री बाबूलालजी संघवी, श्री रमणभाई जैन, श्री प्रकाश के.संघवी की संपूर्ण टीम इस भव्य आयोजन को अंतिम रूप देने के लिये लम्बे समय से कार्यरत है। एक अद्भूत अनोखे आयोजन में ५००० हजार से अधिक साधु-साध्वीजी की निश्रा सारे देश-विदेश लाखों धर्मिष्ठ का आगमन होने जा रहा है। जैन शासन को गौरवान्वित करनेवाले अनेक आयोजन, गीत-संगीत से भरी परमात्म भक्ति, तन-मन-धन से शासन की प्रभावना, धर्माराधना के दर्शन कराने अनेक कार्यक्रम हाँ सब अद्भूत होगा।

इस महोत्सव में इस वर्ष के अंतिम माह की १० दिसंबर को प्रतिष्ठा की जाजम होगी जिसमें परमात्मा की असीम कृपा प्राप्त करने के लिये श्रेष्टिवर्य चढ़ावे का लाभ लेंगे जिससे प्रतिष्ठा का स्वरूप उभर कर सामने आयेगा इसके उपरांत २ फरवरी २०१७ को परमात्मा की प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के प्रतिनिधि के तौर पर युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. प्रतिष्ठा महोत्सव तथा जाजम के कार्यक्रम में निश्रा प्रदान करेंगे।

आगम मंदिर पालीताना में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव पूज्यपाद गच्छाधिपति की निश्रा में 6 फरवरी को होगा

✻ अनेक आचार्य साधु-साध्वी की उपस्थिति रहेगी।
✻ गणधर मंदिर की प्रतिष्ठा का शुभ संयोग।

पालीताना- श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्थान में नवनिर्मित श्री गणधर मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागम सेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा के साथ सिद्धाचल महातीर्थ में उपस्थिति सभी समुदाय के साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में होने जा रहा है। सागर समुदाय के आचार्यश्री अशोकसागर सूरीश्वरजी, आचार्य श्री नंदिवर्धनसागर सूरीजी, आचार्य श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के साथ शतक से अधिक साधु-साध्वी भगवंतों की मंगल उपस्थिति रहेगी।

प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ २५ जनवरी को होगा। प्रतिष्ठा ६ फरवरी २०१७ को होगी। इसी के साथ आगम मंदिर के मूलनायक प्रभु की ७५ ध्वजारोहण भी महावद-५ को होगी। महोत्सव की तैयारियां आरंभ हो गई है।

जैनाचार्य श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी महाराजा का स्वास्थ्य तेजी से ठीक हो रहा है

✻ जम्बुदीप में विराजित है।
✻ आचार्यश्री अक्षयचंद्रसागरसूरीजी तथा उपाध्याय श्री सौम्यचंद्र सागरजी के साथ साधु-साध्वी की अनुमोदनीय सेवा।

पालीताना-सागर समुदाय के वरिष्ठ आचार्य देवेश श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा. का स्वास्थ्य अब तेजी से अच्छा हो रहा है। स्वास्थ्य की अनेक बाधाओं और बायपास सर्जरी के बाद आपश्री अब जंबुद्वीप में आराधनारत है। सागर समुदाय के गुरूभगवंत और साध्वी भगवंत निरंतर आपश्री के स्वास्थ्य पर ध्यान रखे हुए है। चातुर्मास में पूज्य आचार्यश्री अक्षयचंद्रसागरसूरीजी द्वारा शत्रुंजय के महात्मय पर व्याख्यान में ८०० धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही। मुनिश्री विवेकचंद्रसागर और मुनिश्री धैर्यचंद्र सागरजी ने भूरीबा धर्मशाला में व्याख्यान दिये।

✻ किस्मत तो पहले ही लिखी जा चुकी है, तो कोशिश करने से क्या मिलेगा, क्या पता किस्मत में लिखा हो कि कोशिश करने से ही मिलेगा।

आचार्यदेव श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा आगामी महामांगलिक

30 नवंबर 2016 बुधवार शंखेश्वर महातीर्थ,महामांगलिक पारस चैनल पर देखें

पूज्य पंन्यास श्री विज्ञानप्रभविजयजी को आचार्य पदाभिषेक समारोह पालीताना में होगा

पालीताना- परम पूज्य पूज्य गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री हेमप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विज्ञानप्रभविजयजी म.सा.को आचार्य पद प्रदान महोत्सव गिरिविहार पालीताना में मनाया जावेगा। 26 नवंबर से 6 दिसंबर तक होने वाले महोत्सव में गिरीविहार जिनालय की अजंन प्रतिष्ठा और आचार्य पद प्रदान कार्यक्रम भी होगा इसके साथ ही आपश्री की निश्रा में नवांणु यात्रा का आयोजन 14 नवंबर से आरंभ होगा जो 4 जनवरी 17 को मालारोपण के साथ पूर्ण होगा। सामूहिक दीक्षा 1 दिसंबर को होगी।

प.पू.आ.श्रीमद् विजय जिनोत्तम सूरीश्वरजी म.सा. के आगामी विहार कार्यक्रम

✻ माघ वदी-6, बुधवार, 18 जनवरी 2017 को श्री गणधर देव-देवी-गुरूमूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव खिमाड़ा नगर (राज.) में होगी।

✻ माघ शुक्ल-14, गुरूवार, 9 फरवरी 2107 को घंटाकर्ण महावीर एवं अंबिकादेवी प्रतिष्ठा श्री अष्टापद जैन तीर्थ, सुशील विहार रानी में होगी।

✻ फागण वदी-6, शुक्रवार, 17 फरवरी 2017 को श्री शांतिनाथ भगवान के शिखरबद्ध जिनमंदिर अंजन प्रतिष्ठा श्री शांति-सुशीलधाम, हस्तिनापुर नगरी तखतगढ़ में होगी।

✻ फाल्गुन शुक्ल-3, बुधवार, 1 मार्च 2017 को अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव श्री नाकोड़ा रथ मंदिर, गुडाएन्दला में होगी।

✻ फाल्गुन शुक्ल-11, बुधवार 6 8 मार्च 2017 को प्रतिष्ठा महोत्सव योगीराज श्री शांतिसूरीजी ध्यानमंदिर आहोर में होगी।

✻ वैशाख सुदी-10, शुक्रवार, 21 अप्रेल 2017 को प्रतिष्ठा महोत्सव श्री नाकोड़ा भैरव एवं पद्मावती देवी की प्रतिष्ठा डेन्डानगर में होगी।

✻ वैशाख शुक्ल-6, सोमवार, 1 मई 2017 को श्री शिखरबद्ध श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर की अंजन प्रतिष्ठा श्री शंखेश्वर विहार, सुशीलवाटिका पाली में होगी।

✻ वैशाख शुक्ल-13, सोमवार, 8 मई 2017 को श्री शत्रुंजय तीर्थ संरचना की अंजन प्रतिष्ठा श्री जिनेन्द्र विहार, मारवाड़ जंक्शन में होगी।

✻ 26 मई से 2 जून 2017 तक स्वर्ण जयंति महोत्सव श्री आदिनाथ मंदिर तखतगढ़ में होगा।

✻ ज्येष्ठ सुद-9, शनिवार, 3 जून 2017 को स्वर्ण जयन्ति महोत्सव एवं श्री नाकोड़ा भैरव मंदिर प्रतिष्ठा श्री अगवरी नगर में होगी।

शंखेश्वर आगम मंदिर में चार्तुमास के मंगल समाचार

✻मुनि श्रीगंभीररत्नसागरजी

शंखेश्वर- आगम मंदिर में वेलजीभाई माणिकचन्द परिवार द्वारा आयोजित चार्तुमास हेतु विराजित मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा के शिष्यरत्न युवा हृदय सम्राट युवाचार्य भगवंत श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी महाराजा ने श्रावक जीवन गुणों के अंतर्गत अपने प्रवचन में उपाध्याय श्रीमान विजयजी भगवंत द्वारा रचिता धर्म संग्रहग्रंथ में 'उचित विवाह' में कहा कि जिस व्यक्ति को दीक्षा लेनी हो तो शास्त्रकार भगवंत ऐसा कहते है कि वह विवाह नहीं करें। लेकिन संसारियों के लिये उचित विवाह करने की बात कही। योग्य व्यक्ति के साथ योग्य मिलन से इतिहास बनता है तब कहीं परमात्मा शिवाजी, शालीभद्र, जम्बुकुमार बनते है। उचित विवाह के अंतर्गत हमारे आचार्य श्री नवरत्नसागरजी महाराजा का नाम भी आता है जिनके माता-पिता ने उचित समय पर उचित विवाह कर अपने बालक को मात्र 6 वर्ष की उम्र में संस्कारित कर 11 वर्ष की उम्र में संयम के मार्ग पर भेज कर रतनलाल को नवरत्न बना दिया जो जिन शासन की एक अद्भूत विभूति बनकर थे। उचित कुल, जाति, उचित समय में किया गया उचित विवाह की श्रेणी में आता है। गौतम स्वामी ने भगवती सूत्र में परमात्मा से प्रश्न पूछा- लोग दुःखी क्यों है तब परमात्मा ने कहा है गौतम जिस प्रकार आग में तप रहा व्यक्ति शीतलता का अनुभव नहीं कर सकता उसी प्रकार दुःखी व्यक्ति लाख प्रयत्न करने के बाद सुखी नहीं रह सकता। 35 गुण जिन व्यक्तियों के भीतर प्रवेश करें वह व्यक्ति उच्च स्थापन को प्राप्त कर सकता है। गुण, व्यवहार, भावना के साथ उचित मेल करो यह बात मानविजयजी महाराजा ने उचित विवाह में कही। जिन शासन में विजय सेठ व विजया सेठानी की बात आती है जिन्होंने विवाह के पूर्व ही एक ने वद तिथि व दूसरे ने सुदी तिथि में शीलव्रत को पच्चखाण कर इतिहास बनाया जो आपके सामने है।

श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप को ''श्राविका रत्न'' सम्मान से अलंकृत किया गया

रतलाम- जीवन के विभिन्न रंग देखने के बाद भी परमात्मा के प्रति अटूर श्रद्धा और विश्वास के बल पर जिन्होंने अपने जीवन को संवार कर अद्‌भूत शासन भक्ति और जनसेवा के द्वारा अपने जीवन को प्रेरणास्पद बनाया ऐसी मातुश्री श्रीमती तेजकुंवरबाई काश्यप को ''श्राविका रत्न'' से सम्मानित कर विगत दिनों जैन संघ ने अपने को गौरवांवित महसूस किया। राष्ट्रसंत पूज्य आचार्य भगवतं श्री जयंतसेन सूरीजी महाराजा की पावन निश्रा में यह आयोजन 16 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर अनेक लब्धि प्रतिष्ठित नेता समाजजन उपस्थित थे। पोतेश्री सिद्धार्थ काश्यप ने मातृवंदना प्रस्तुत की। आप योजना आयोग म.प्र. तथा रतलाम विधायक श्री चेतन्य काश्यप की मातुश्री है।

बंधुबेलड़ी आचार्य भगवंत की निश्रा में श्रावक से श्रमण बनाने का अनुष्ठान उपधान तप 11 अक्टू. को हुआ

इन्दौर- जीवंत धर्म नगरी इन्दौर के तिलकनगर श्री संघ में पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री जिनचंदसागर सूरीजी आचार्यदेव श्री हेमचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों के मार्गदर्शन में 11 अक्टूबर को उपधान तपाराधना का शुभ मंगल अनुष्ठान आरंभ हुआ। उपधान तप का भव्य वरघोड़ 27 नवंबर को आयोजित होगा। माह का आयोजन 28 नवंबर को होगा। उपधान तप के लिये तिलक नगर में बनारस आगमोद्धारक वाटिका का निर्माण किया गया है।

पूज्यपाद जैनाचार्य श्री अपूर्वमंगलरत्न सागर सूरीजी की निश्रा में उपधान तप हो रहा है

* पूज्य आचार्यश्री का स्वास्थ्य अभी ठीक है।
* पूज्यश्री मैसूर में विराजित है।

मैसूर- यहां के श्री सुमतिनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ के तत्वावधान में उपधान तप की विशिष्ट तपाराधना अनुष्ठान का आयोजन परम पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा के पट्टधर सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगलरत्नसागर सूरीजी महाराजा, साध्वी श्री सुरेखा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में होने जा रहा है।

प्रथम मुहूर्त १७ अक्टूबर को हुआ गया है। मालारोपण ४ दिसंबर को होगा। उपधान तप महावीर भवन में होगा। उपधान तप के लाभार्थी परिवार मातुश्री मतराबाई नेनमलजी लुकड़ है। पूज्यपाद आचार्यश्री का स्वास्थ्य अब ठीक है। बैंगलोर में ईलाज के बाद आपश्री मैसूर पहुंच गये है तथा स्वास्थ्य लाभ ले रहे है, व्याधि के उपरांत भी आपश्री ने अपनी धर्माराधना साधना, जप में अंकुश नहीं लगाया है। आप निरंतर ही साधनारत रहते हुए आत्म कल्याण के मार्ग पर आगे चल रहे है।

महोत्सव मना

कुकड़ेश्वर- श्री पार्श्वनाथ श्वेतांबर मूर्तिपूजक संघ में चार्तुमास हेतु विराजित साध्वीवर्या श्री अर्चितगुणा श्रीजी म.सा. की निश्रा में यहां त्रिदिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन किया गया। श्री संघ में विभिन्न तपस्या और आराधना के निमित्त आयोजित 14 से 16 अक्टूबर तक के कार्यक्रम में नवपद पूजन, तपवंदना तथा सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई।

वेपेरी श्री संघ में उपाश्रय का निर्माण

वेपेरी- मद्रास के जैनत्व के गौरव समान श्री संघ में चार्तुमास हेतु विराजित गणिवर्य श्री दिव्येशचंद्रसागरजी म.सा. साध्वी अमीपूर्णा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा चार्तुमास आराधना जोरदार रही। सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि यहां विगत 25 वर्ष से उपाश्रय की आवश्यकता भी वह पूर्ण हो गई। उपाश्रय का निर्माण कार्य आरंभ हो गया है। दीपावली पर त्रिदिवसीय आयोजन किया गया।

✻ *भावावेश में कितने ही परिव्राजकों ने भिक्षु दीक्षा ली थी और उन्होंने अपरिग्रह का व्रत लिया था, पर समय गुजरते पुराने प्रलोभन फिर लौट आए। उन्होंने चीचर संग्रह करने आरंभ कर दिए। सभी के पास परिधानों की गट्ठर थे। तथागत इस शील-शैथिल्य पर बहुत दुःखी हुए। इतनी जल्दी व्रत भूल जाने पर ये लक्ष्य तक कैसे पहुंचेगा? उस दिन तथागत खुले में सोए। ठंड के दिन थे, सो एक चादर ओढ़ली, अर्द्धरात्रि को ठंड पड़ी, तो दूसरी चादर ओढ़ी, अंतिम प्रहर में शीत का प्रकोप अधिक हुआ तो उन्होंने तीसरा चीवर ओढ़कर नींद का आनंद लिया। समाचार सारे संघाराम में फैल गया। भिक्षुओं ने तीन चीवर गुजारे के लिये पर्याप्त समझे और शेष सभी आश्रम के भंडार में जमा कर दिए। उन्होंने अनुभव किया कि साधुता का अपरिहार्य अंग अपरिग्रह है।*

हमारे तीज-त्यौहार

1- कार्तिक सुदी-1	सोमवार	31/10/2016	वीर संवत् 2543, वि.सं. 2073 नूतन वर्ष आरंभ
2- कार्तिक सुदी-5	शनिवार	5/11/2016	ज्ञान पंचमी, श्री गौतम स्वामी केवलज्ञान
3- कार्तिक सुदी-11	शुक्रवार	11/11/2016	पूज्य मालवोद्धारक आचार्यश्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी महाराजा का जन्मदिन
4- कार्तिक सुदी-15	सोमवार	14/11/2016	श्री सिद्धाचल की यात्रा आरंभ, कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यश्री म.सा.का जन्मदिन
5- कार्तिक वदी-2	बुधवार	16/11/2016	रोहिणी
6- कार्तिक वदी-10 (द्वि.)	गुरूवार	24/11/2016	श्री महावीरस्वामीजी का दीक्षा कल्याणक

पंचक- आरंभ-कार्तिक सुदी-8, दिनांक 8/11/2016, मंगलवार, समयः-सायं 4.34 बजे
समाप्त-कार्तिक सुदी-13, दिनांक 12/11/2016, शनिवार, समयः-रात्री 10.31 बजे

पुष्प नक्षत्र- आरंभ-कार्तिक वदी-7, दिनांक 20/11/2016, रविवार, समयः-सुबह 3.45 बजे

❊ एक व्यापरी रेगिस्तान के रास्ते से व्यापार करके लौट रहा था। उसने अपनी झोली में कई कीमती हीरे-जवाहरात आदि भर रखे थे। कुछ शुभचिंतकों ने उसे समझाया कि वो अपना कुछ भार हलका कर दें और मोतियों के बदले पानी की चिश्तियां बांध ले। उसने उनकी राय पर ध्यान न देकर यात्रा जारी रखी। दुर्योग से वो रास्ता भटक गया। साथ में लाई रसद व भोजन सामग्री धीरे-धीरे चुक गई। वह भूखा-प्यासा निकल पड़ा था तब रत्नों-माणिकों के वजन को देखकर उसे अनुभव हुआ कि जीवन में जीवन से ज्यादा बहुमूल्य और कुछ भी नहीं। हीरे-मोतियों की चमक थोड़ी देर का आकर्षण जरूर प्रस्तुत करती है, पर कठिन समय में पानी की एक बूंद के सामने कोहिनूर की कीमत भी एक पत्थर से ज्यादा नहीं।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम २५ सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

गुरू को स्वीकार करने के बाद उनकी आज्ञा आंख बंद करके मानने का विधान है। गुरू अगर सर्प को हाथ में लेने का कहे तो कुछ भी विचार किए बिना उसे वैसा करना चाहिए। पूनम को अमावस्या कहे तो एक बार तो हां ही कहे। थोड़ी देर बाद भले पूछे आपने पूनम को अमावस्या किस कारण कहा था? इसका नाम ही सच्चा शिष्यत्व है।

सादर आमंत्रण

*पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें। ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सके।

*आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

*पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव,मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

*अंक आपके तक नियमित रूप से नवीन स्वरूप के साथ १० तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

– सम्पादक